उपन्यास

92 गर्लफ्रैण्ड्स

राजेश माहेश्वरी

घोषणा पत्र

यह एक उपन्यास है जिसके पात्र एवं घटनाओं का किसी भी व्यक्ति के वास्तविक जीवन से कोई संबंध नहीं है। यदि यह किसी व्यक्ति के जीवन से मिलती हो तो यह महज एक संयोग ही होगा। इस पुस्तक के लेखक, संपादक या प्रकाशक का उद्देश्य किसी भी धर्म, संप्रदाय, जाति या व्यक्ति को आहत करने का नहीं है।

आत्मकथ्य

आज पाश्चात्य संस्कृति के प्रभाव में आकर हमारा युवावर्ग दिग्भ्रमित होकर अपनी सभ्यता, संस्कृति और संस्कारों को भूलता जा रहा है। आज नारी को सिर्फ विषय भोग की वस्तु समझा जाने लगा है। आज की नारी भी इस प्रभाव से अछूती नहीं है और अपनी किसी परिस्थिति या प्रलोभनों के कारण अपनी मर्यादाओं को भी पार करने लगी है। इस पुस्तक में हमने इस कटु सत्य की प्रस्तुति करने का प्रयास किया है। इस कृति को बनाने में श्री जसपाल ओबेराय, श्री अंशुमान शुक्ल, श्री श्याम सुंदर जेठा एवं श्री देवेन्द्र राठौर का अमूल्य सहयोग प्राप्त होता रहा है। मैं उनका हृदय से आभारी हूँ।

राजेश माहेश्वरी

106, नयागांव हाऊसिंग सोसायटी,

रामपुर, जबलपुर (म.प्र.) 482008

--

परिचय

राजेश माहेश्वरी का जन्म मध्यप्रदेश के जबलपुर शहर में 31 जुलाई 1954 को हुआ था। उनके द्वारा लिखित क्षितिज, जीवन कैसा हो व मंथन कविता संग्रह, रात के ग्यारह बजे एवं रात ग्यारह बजे के बाद (उपन्यास), परिवर्तन, वे बहत्तर घंटे, हम कैसे आगे बढ़े एवं प्रेरणा पथ कहानी संग्रह तथा पथ उद्योग से संबंधित विषयों पर किताबें प्रकाशित हो चुकी हैं।

वे परफेक्ट उद्योग समूह, साऊथ एवेन्यू मॉल एवं मल्टीप्लेक्स, सेठ मन्नूलाल जगन्नाथ दास चेरिटिबल हास्पिटल ट्रस्ट में डायरेक्टर हैं। आप जबलपुर चेम्बर ऑफ कामर्स एवं इंडस्ट्रीस् के पूर्व चेयरमेन एवं एलायंस क्लब इंटरनेशनल के अंतर्राष्ट्रीय संयोजक के पद पर भी रहे हैं।

आपने अमेरिका, चीन, जापान, जर्मनी, फ्रांस, इंग्लैंड, सिंगापुर, बेल्जियम, नीदरलैंड, स्विट्जरलैंड, हांगकांग आदि सहित विभिन्न देशों की यात्राएँ की हैं। वर्तमान में आपका पता 106 नयागांव हाऊसिंग सोसायटी, रामपुर, जबलपुर (म.प्र) है।

भगवान भास्कर अस्ताचल की ओर धीरे धीरे बढ़ रहे थे। आकाश में छाये बादलों से वर्षा की हल्की फुहार एवं प्रकृति की हरियाली मन को आनंदित और प्रफुल्लित कर रही थी। राकेश, आनंद और गौरव ऐसे मनोहारी वातावरण में एक रेस्टारेंट में बैठकर चाय की चुस्कियों का आनंद ले रहे थे। ये तीनों उच्च शिक्षा प्राप्त करने के पश्चात अपने घरेलू व्यवसाय को संभाल रहे हैं, तभी रेस्टारेंट में तीन सुंदर एवं आकर्षक लड़कियाँ प्रवेश करती हैं। उनमें से एक राकेश को देखकर हैलो कहती है राकेश भी उसका अभिवादन करता है और उन्हें अपने साथ ही चाय पीने का आग्रह करता है। राकेश अपने दोनों मित्रों से उस लड़की से परिचय कराते हुए कहता है कि यह मानसी है। मानसी भी अपने साथ आयी दोनों लड़कियों का परिचय देते हुए बताती है कि उनमें से एक का नाम आरती और दूसरे का नाम पल्लवी है एवं वे तीनों कॉलेज में बी.कॉम की छात्राएँ हैं।

मानसी बातचीत में कहती है कि राकेश उस दिन तुमने दूसरे दिन मिलने के लिए कहा था और तुम गायब हो गये। यह सुनकर गौरव ने राकेश को कहा कि ऐसा तुम्हें नहीं करना चाहिए किसी को समय देकर नहीं मिलना अच्छी बात

नहीं है। यह सुनकर मानसी मुस्कुरा कर बोली राकेश किसी जरूरी काम में व्यस्त हो गये होंगे अन्यथा ये अपनी बात और समय के बहुत पाबंद है। गौरव और आनंद की नजरें पल्लवी और आरती को निहार रही थी तभी वेटर चाय लेकर आ गया। चाय पीकर वे तीनों लड़कियाँ चली गयी। उनके जाने के बाद गौरव और आनंद ने राकेश को कहा बडें उस्ताद हो यार इतनी सुंदर अपनी मित्र के बारे में कभी जिक्र भी नहीं किया। ऐसा प्रतीत होता है कि मानसी तुम्हारी काफी नजदीकी है वह कौन है, तुम्हारी कहाँ मुलाकात हुयी और बात कहाँ तक आगे बढी एवं यह चक्कर कब से चल रहा हैं। राकेश बताता है कि मानसी कामर्स की छात्रा हैं वह प्राइवेट हास्टल में रहती है एवं आर्थिक रूप से संपन्न परिवार से है। तुम लोग अपने मन में किसी प्रकार की गलतफहमी मत रखना। मेरी मानसी से मुलाकात छः माह पहले ट्रेन में हुई थी। आपस में बातें करते करते हम लोगों में मित्रता हो गई। हम लोग प्रति रविवार छुट्टी के दिन मिलते रहते हैं और आपस में विचारों का आदान प्रदान करते हुए समय व्यतीत करते है। यह बहुत ही भावुक एवं चतुर लड़की है। इसकी दोनों मित्रों को मैं नहीं जानता। यह सुनकर गौरव बोला यार बेवकूफ मत बनाओ। तुम्हारे इतने नजदीक बैठकर तुम दोनों आँखों में आँखें मिलाकर एक दूसरे को देखते हुए बातचीत कर रहे थे। गौरव और आनंद बोले कि हमें आरती और पल्लवी से मित्रता करने की रूचि है। इतनी मदद तो तुम मानसी से कहकर करवा ही दोगे। मैं कोशिश करूँगा यह कहकर राकेश चला गया।

दूसरे दिन राकेश की मुलाकात मानसी से होती है और वह औपचारिक बातचीत के दौरान ही उसे बताता है कि उसके दोनों मित्र गौरव और आनंद उसकी सहपाठी आरती और पल्लवी से मित्रता करना चाहते है। यह सुनकर मानसी कहती है इसमें मैं क्या कर सकती हूँ मैं तो तुम्हारे दोस्तों से पूर्णतया अनभिज्ञ हूँ और वैसे भी मैं किसी के निजी मामले में दखल नहीं देती हूँ। वे दोनों

लड़कियाँ बहुत संभ्रांत परिवार से है। मैं उनसे इस प्रकार की कोई बातचीत नहीं कर सकती हूँ।

राकेश कहता है कि मैं तुमको एक खुशखबरी देना चाहता हूँ कि मुंबई की प्रसिद्ध जहांगीर आर्ट गैलरी ने मेरी बनाई पेंटिंग्स को एक सप्ताह के लिए प्रदर्शित करने की अनुमति दे दी है। इससे मुझे चित्रकला के क्षेत्र में बहुत मान सम्मान प्राप्त होगा। क्या तुम भी इस अवसर पर मेरे साथ चलना चाहोगी ? राकेश बताता है कि आनंद और गौरव भी उसके साथ मुंबई जा रहे है, यदि तुम्हारे साथ आरती और पल्लवी भी चल सके तो बहुत अच्छा होगा। मानसी कुछ सोचकर स्वयं के लिए हाँ कह देती है। राकेश मन ही मन बहुत खुश हो जाता है। मानसी बताती है कि अगले सप्ताह उसके कॉलेज में अवकाश है। यदि तुम कहीं घूमने फिरने का प्रोग्राम किसी अच्छे पर्यटन स्थल में रख सकते हो तो मैं आरती और पल्लवी को भी साथ चलने हेतु कह सकती हूँ परंतु वे जायेंगी या नहीं यह मैं नहीं कह सकती। राकेश वहीं से मोबाइल पर गौरव और आनंद से बात करता है। वे दोनों अपने जाने की सहमति दे देते है। मानसी राकेश से कहती हैं कि वह शाम तक आरती और पल्लवी से बात करके बता देगी। राकेश कहता है कि यदि वे नहीं भी जाती है तो तुम तो चल सकती हो ? मानसी बाद में बताने का कहकर चली जाती है।

मानसी शाम को फोन करके बताती है कि आरती और पल्लवी ने मुंबई जाने के लिए मना कर दिया है उनका कहना है कि हम घर पर क्या बतायेंगे ? मैं चल सकती हूँ मेरी मौसी भी मुंबई में रहती हैं और कई वर्षों से आने के लिए कह रही है, इसी बहाने उनसे मुलाकात भी हो जायेगी। मुझे मेरे परिवार से अनुमति मिल जाएगी। यह सुनकर राकेश कहता है कि अच्छा है इसी बहाने तुम्हारा साथ मिल जाएगा। राकेश मानसी से उसकी दोनों सहेलियों का मोबाइल नंबर मांगता है जिसे मानसी यह कहकर टाल देती है कि वह उनसे बात करने के बाद ही उनका नंबर देगी, राकेश कहता है कि अगले रविवार को उसके द्वारा

एक पार्टी का आयोजन किया गया है। जिसमें तुम्हारे साथ ही साथ तुम्हारी दोनों सहेलियों को भी बुलाना चाहता हूँ। मानसी उनसे बात करके राकेश को उनका मोबाइल नंबर दे देती है। राकेश उसके सामने ही उनको अपनी पार्टी में आमंत्रित करता है जिसे वे दोनों स्वीकार कर लेती है परंतु पूछती है कि वापिस कब तक आ जायेंगें। राकेश कहता है कि थोड़ा लेट हो जायेंगे। आरती बताती है कि हम लोगों को शाम 7 बजे के बाद होस्टल से बाहर रहने की अनुमति नहीं है यदि ऐसा होता है तो इसकी सूचना हमारे माता पिता को फोन पर वार्डन के द्वारा दे दी जाएगी। आनंद यह सुनकर उसके वार्डन से मिलने जाता है और विनम्र अनुरोध करता है कि उन्हें देर रात में आने की अनुमति प्रदान की जाए। वार्डन यह जानकर कि आरती और पल्लवी नगर के दो संभ्रांत परिवार के युवकों के साथ बाहर जा रही हैं, उसे बहुत अचरज होता है। वह बताती है कि ये लड़कियाँ हॉस्टल में आने के बाद पहली बार बाहर जाने की अनुमति माँग रही हैं। वह विनम्रतापूर्वक आनंद को कहती है कि आप का विशेष अनुमति दे देंगे परंतु हमारा भी कुछ ख्याल रखिये। आनंद पूछता है कि आप क्या चाहती हैं तो वह कहती है कि लड़कियों के मैस के लिए एक बोरा चावल और एक बोरी गेहूँ की आवश्यकता है। आनंद उसका तुरंत प्रबंध कर देता है और उन्हें हॉस्टल से बाहर ले जाने की अनुमति प्राप्त कर लेता है।

रविवार के दिन पूर्व निर्धारित कार्यक्रम के अनुसार दो कारों में वे सभी लोग पिकनिक मनाने चले जाते है। दिन भर घूमने फिरने के उपरांत सभी शाम तक थक कर वापस गेस्ट हाउस आ जाते हैं और लॉन में बैठक्र विश्राम करने लगते है। कुछ समय पश्चात गौरव अपनी अपनी स्कॉच की बॉटल और रेड वाइन निकालकर सबको ऑफर करता है। तीनों लड़कियाँ इसको पीने से इंकार करती है। गौरव पुनः लड़कियों से निवेदन करता है कि वाइन को थोड़ा चखकर देखिए इसमें कोई नशा नहीं आयेगा। इतना कहकर वह उनके लिए थोडी थोडी वाइन गिलास में डालकर उनके हाथों में थमा देता है। सब लोग चियर्स करके अपने

अधरों पर इसका मजा लेते हुए खुशी का इजहार करते हैं। इसी समय राकेश गंभीर हो जाता है मानो कुछ सोच रहा हो, मानसी उससे पूछती है कि राकेश अचानक तुम्हें ये क्या हो गया ? तुम्हारी हंसी और चेहरे की प्रसन्नता गायब होकर ऐसा प्रतीत हो रहा है कि तुम किसी गंभीर बात को मन में सोच रहे हो ? राकेश कहता है कि हाँ यह सही है कि मैं आज चार साल पुरानी एक घटना को अकस्मात् ही सोचने लगा हूँ। सभी के आग्रह एवं मानसी के आश्वासन पर कि जो बात तुम बताओगे यहाँ से बाहर नहीं जायेगी। राकेश बताना प्रारंभ करता है।

यह बात उस समय की है जब मैं बी.काम के प्रथम वर्ष में था। हमारे परिवार की एक जैन परिवार से साथ बहुत घनिष्टता थी। वे एक व्यापारी थे और समय समय पर मेरे पिताजी से मार्गदर्शन लेते रहते थे। हम दोनों परिवारों का एक दूसरे के यहाँ आना जाना बना रहता था। उनकी एक बेटी श्रेया एवं एक बेटा रवि था। श्रेया बहुत ही आकर्षक व सुंदर लड़की थी। हमारी मुलाकात के दौरान वह अक्सर मेरे से बहुत बातचीत करती थी। उसकी मीठी और विनम्र वाणी से मैं बहुत खुश होता था और मन ही मन उसके प्रति आकर्षित हो गया था। श्रेया के पिताजी पुरातनपंथी विचारधाराओं के कारण अंतर्जातीय विवाह के बहुत खिलाफ थे।

एक दिन ठंड के मौसम में मैं किसी काम से उसके पास गया था। वह रजाई ओढ़े अपने अध्ययन की किताब पढ़ रही थी। मुझे देखकर वह बोली कि राकेश बहुत ठंड है रजाई में अंदर आ जाओ। यह सुनकर मैं उसके पास बैठ गया और उसने अपनी आधी रजाइ्र मुझे ओढा दी और वो मेरे एकदम नजदीक आ गयी। उसने मेरी आँख से आँख मिलाकर मुझसे पूछा कि अब ठंड गायब हो गयी या नहीं। इसी समय उसका भाई आ गया तो उसने उसे पान लाने के लिए बाहर भिजवा दिया। इसी बीच अचानक ही उसका पैर मेरे पैर से छू गया। मेरे सारे शरीर में एक झुनझुनी सी आ गयी। यह मेरा उसके प्रति पहला आकर्षण था

परंतु जिसे मैं शब्दों में बयां नहीं कर सकता। इसी दौरान मेरे घर से कुछ जरूरी काम के लिए मुझे बुलावा आ गया और मुझे ना चाहते हुए भी घर वापस जाना पड़ा। मैं रातभर श्रेया के विषय में सोचता रहा और यह मेरे जीवन में प्रेम की पहली अनुभूति थी। मैं इस बारे में श्रेया से बात करना चाहता था परंतु एक अजीब से डर के कारण मैं कभी उसे बात नहीं कह पाया और एक दिन उसकी शादी किसी दूसरे शहर में पक्की होने की खबर मेरे पास आ गयी। यह खबर सुनकर मैं बहुत विचलित होकर काफी दुखी हो गया। मैंने यह बात अपने एक परिचित वकील साहब को जो कि हम दोनों के परिवारों को जानते थे उन्हें बताई। उन्होंने मुझसे पूछा कि क्या तुम वाकई श्रेया के चाहते हो और विरोध के बावजजूद भी अंतर्जातीय बावजूद विवाह करने की हिम्मत रखते हो। मेरे हाँ कहने पर उन्होंने कहा कि मैं आज रात ही उससे बात करता हूँ और तुम्हें फोन पर बता दूँगा। वे श्रेया के पास गये और उसे मेरी भावनाओं से अवगत कराया, श्रेया ने कहा कि मैं तो राकेश को बहुत चाहती हूँ, मैने पता नहीं कितनी बार इशारों में उसे यह बात बताने की कोशिश की परंतु उसने मुझे कोई तवज्जो नहीं दी। मैं समझ गया कि उसको मुझमें कोई रूचि नहीं है। इसी बीच मेरे जीवन में एक दूसरा लड़का श्रेयस धीरे धीरे मेरे नजदीक आता गया हम लोगों में आपस में प्यार होकर हम एक दूसरे के प्रति समर्पित हो गये। राकेश ने बहुत देर कर दी उससे कहना कि मैं उसकी अच्छी दोस्त थी और आगे भी अच्छी देस्त रहूँगी। वकील साहब ने यह बात फोन पर बता कर राकेश को कहा कि यह बात तुम्हें मुझे पहले बतानी चाहिए थी अब कुछ भी संभव नहीं है। राकेश आगे बताता है कि श्रेया ने लव मैरिज की थी जिससे उसके परिवारजन बहुत नाराज एवं अचंभित थे परंतु वह अपने निर्णय पर दृढ़ रही और आज वह सुखी जीवन व्यतीत करते हुए अपने पति के साथ अमेरिका में है। आज भी उसकी यादें कभी कभी मेरे दिल और दिमाग में टीस पैदा कर देती हैं और मैं उसे भूल नहीं पाता हूँ।

यह सुनकर आरती एवं मानसी ने उससे कहा कि राकेश इसमें पूरी लापरवाही एवं गलती तुमसे हुई है। किसी भी व्यक्ति को उसकी उम्र के अनुसार अपने में गंभीरता एवं विचारों में परिपक्वता होना चाहिए। तुम्हें अपरिपक्वता के कारण यह सब झेलना पडा। अब भविष्य के लिए सतर्क हो जाओ।

इसके बाद आनंद ने अपने साथ घटित हुयी घटना के विषय में जानकारी दी कि मैं अपने ऑफिस के कार्य से मुंबई जा रहा था इटारसी स्टेशन पर मेरे ए.सी. फर्स्ट के कोच में एक बहुत ही शालीन सी दिखने वाली महिला ने प्रवेश किया उसका रिजर्वेशन भी मुंबई तक था। ट्रेन के स्टेशन से रवाना होने के बाद उस महिला ने जिसका नाम उर्वशी था मुझसे औपचारिक बातचीत शुरू की। उसने बताया कि वह मुंबई में ही निवास करती है एवं उसका साड़ी का बहुत बड़ा व्यवसाय है जिसके लिए उसे काफी यात्राएँ करनी पड़ती है। उससे बातचीत के दौरान मुझे आभास हुआ कि उसे व्यापार, शेयर मार्केट, एवं पूंजी निवेश के विषय में काफी जानकारी है।

शाम के समय मेरी इच्छा स्कॉच पीने की हुई तो मैंने उस महिला से अनुमति लेकर अपने बैग से बॉटल निकालकर अपने लिए पैग बनाया। मैंने औपचारिकतावश उससे पूछा क्या आप भी मेरा साथ देंगी ? उसने सहमति दे दी तो मैंने उसके लिए भी एक पैग बना दिया। हम लोग मदिरापान के साथ साथ विभिन्न विषयों पर बातचीत करते रहे। थोडी देर के बाद मैं बाथरूम गया और लौट कर आने पर मैंने देखा कि वह हम दोनों के लिए एक एक पैग और बना चुकी थी। उसने उसी गिलास से एक घूंट पीकर मुझे दे दिया और कहा कि ये पैग हमारी मित्रता के नाम पर स्वीकार कीजिए। यह देखकर मैं मन ही मन बहुत गदगद हो गया और मंत्रमुग्ध होकर उसे निहारते हुए तुरंत ही उस पैग को गटक गया। बातचीत के दौरान हम लोग एक दूसरे से काफी खुल चुके थे। वह मेरे बिल्कुल नजदीक बैठकर बात कर रही थी और मैं उसे एकटक निहारते हुए वार्तालाप कर रहा था। कुछ देर पश्चात उसने विश्राम करने के लिए कहा। मैं

भी हाँ कहते हुए अपनी ऊपर की बर्थ पर जाकर बहुत ही गहरी नींद में सो गया और सुबह नासिक आने पर मेरी नींद खुली। मैंने नीचे झांककर उर्वशी को गुडमार्निंग कहने के लिए देखा तो वह बर्थ पर नहीं थी मैं नीचे उतरा तो यह देखकर चौंक गया कि मेरा पूरा सामान ही गायब था उसमें पाँच लाख रू. कैश था। यह देखकर मैं तुरंत अटैंडेंट के पास गया और उसे इस घटना की जानकारी देते हुए मैंने पूछा कि वह महिला कहाँ हैं जो मेरे साथ मुंबई तक जा रही थी उसने बताया कि साहब वो तो भुसावल में ही अपने एक साथी के साथ सामान के साथ उतर गयी। यह सुनकर मेरे होश उड़ गये। मैं समझ गया कि मेरे साथ दुर्घटना घट चुकी है और मुंबई पहुँचने पर मैंने लैब में गिलास की जाँच कराई जिससे पता चला कि उस गिलास में बेहोशी की दवा का प्रमाण पाया गया। मैं समझ गया जब उर्वशी ने अपने होंठो से गिलास लगा कर दिया तभी यह खेल हो चुका था। यह सुनकर गौरव और राकेश बोले कि यह बड़ी आश्चर्यजनक एवं गंभीर बात तुमने बताईं। ईश्वर का शुक्र है कि तुम सही सलामत हो वरना उस महिला के चक्कर में ना जाने क्या हो जाता।

आरती और पल्लवी यह सुनकर बोली की हमे सरकार के द्वारा बनाए गये नियमों पर ध्यान देकर उनका अनुसरण करना चाहिए। ट्रेन में यात्रा के दौरान शराब पीना वर्जित है। यह हमारे हित के लिए ही नियम बनाया गया है। यदि तुम इसे मानते तो शराब का सेवन नहीं करते और तुम्हें यह नुकसान नहीं होता। हमें नियमो का पालन करना ही चाहिए। पल्लवी ने गौरव की ओर देखकर कहा कि आप के साथ भी कुछ घटित हुआ हो तो आप भी अपनी आपबीती सुनाए। आनंद बोला ये बडे भाग्यवान है और इतने चतुर है कि लड़कियों से अपने ऊपर धन खर्च करवा लेते है। वह बोला कि गौरव तुम दिल्ली वाली बात इन्हें बता दो।

गौरव ने बताया कि मैं किसी कार्यवश दिल्ली गया हुआ था। वहाँ पर दिन भर अपना काम करने के उपरांत रात में 9 बजे एक डिस्को में समय व्यतीत करने

चला गया। मैं टेबल पर बैठा ही था कि तभी एक सुंदर और आकर्षक लड़की ने प्रवेश किया और यहाँ वहाँ देखते हुए वह मेरे पास आकर मेरे साथ बैठने की अनुमति माँगी और मेरे हाँ कहने पर मेरे साथ बैठ गयी। उसने अपना परिचय चंडीगढ के फैशन डिजाइनिंग इंस्टीट्यूट में द्वितीय वर्ष की छात्रा के रूप में देते हुए अपना नाम नीरजा बताया। मैंने भी अपना परिचय देते हुए उससे बातचीत करनी प्रारंभ कर दी। मुझे आश्चर्य हुआ कि उसने अपनी ओर से दो पैग विस्की का आर्डर देकर मुझे बिल नहीं चुकाने दिया और स्वयं उसका भुगतान कर दिया। उसने बातचीत के दौरान एक बहुत ही अच्छा प्रश्न मुझसे किया कि हमें जीवन में सफलता पाने के लिए किन बातों को ध्यान में रखना चाहिए। एक बार तो मैं उसके इस प्रश्न का उत्तर देने के लिए अचकचा गया परंतु मैंने संभलकर तुरंत इसका जबाव दिया कि हमें तीन बातों पर हमेशा ध्यान रखना चाहिए। पहली अपने आत्मविश्वास,आत्मबल एवं आत्मअनुभूति पर विश्वास होना चाहिए, दूसरा सच्चे मित्रों एवं पत्नी की बातों को तिरस्कृत नहीं करना चाहिए और तीसरा अपने सत्कार्यों एवं प्रभु की भक्ति पर पूर्ण विश्वास रखते हुए जीवनपथ में आगे बढ़ना चाहिए।

वह मेरे जवाब से इतनी प्रसन्न हो गई कि एक एक पैग और आर्डर देकर उसे जल्दी से समाप्त करके मुझे डांसिंग फ्लोर पर ले जाकर मेरे निकट आकर नृत्य करने लगी। उसका शरीर मेरे शरीर से इतने नजदीक था कि मुझे अजीब से आकर्षण का अहसास हो रहा था। वह कुछ समय डांस करने के बाद मुझे होटल के काउंटर पर ले गई और एक रूम लेकर यह कहते हुए कि थोडी देर आराम करेंगे, अंदर ले गई। वहाँ जाकर उसने एक और पैग का आर्डर किया और मेरे ना कहने पर भी जबरदस्ती, अपने हाथों से पिला दिया। उसकी बातों में इतना आकर्षण था कि मैं उसके प्रति सम्मोहित होता चला गया। हम एक दूसरे से आलिंगनबद्ध होकर दो जिस्म एक जान हो गये थे। सारी रात ऐसे बीत गयी लगा जैसे एक पल की ही बात हो। सुबह होने पर वह यह कहकर कि उसे मुंबई

जाना है, होटल का बिल चुकाकर टैक्सी में बैठकर मुझे फिर मिलेंगें कहती हुई चली गयी। मैं भी दूसरी टैक्सी लेकर अपने गंतव्य पर चला गया। मैंने उससे संपर्क करने का प्रयास किया परंतु उसके द्वारा दिया गया नंबर गलत था और उसने भी मुझसे कभी संपर्क नहीं किया। मैं उसकी तलाश में चंडीगढ तक गया और वहाँ के फैशन डिजाइनिंग इंस्टीट्यूट में नीरजा नाम की पाँच लड़कियों से मिला परंतु उनमें से वह कोई भी नहीं थी।

इसी बीच गेस्ट हाउस के रसोइये ने आकर बताया कि साहब रात के 11 बज चुके हैं आप लोगो का भोजन तैयार हैं। आप लोगों को रात में यही रूकना पडेगा क्योंकि बारिश की वजह से नदी उफान पर है और जाने वाले रास्ते पर भी पानी है। मैंने दो कमरे तैयार कर दिये हैं। आप लोग सुबह नाश्ता करके चले जाइयेगा तब तक पानी भी उतर जाएगा। हम लोगों ने भोजन किया जो कि बहुत ही स्वादिष्ट था। भोजन के उपरांत हम लोगों को नींद नहीं आ रही थी तो हम सभी कुर्सी लगाकर बाहर दालान में बैठ गये। आरती ने गौरव से कहा कि आप भी कुछ बताइये हम सभी आपको सुनने के लिए बेताब हैं।

गौरव ने बताया कि मेरी पहचान साक्षी नाम की एक लड़की से उसकी मित्र राजश्री के जन्मदिन की पार्टी में हुई। वह कक्षा बारहवीं में पढ़ रही थी एवं अगले वर्ष बी.कॉम में एडमिशन लेकर इसके साथ ही साथ सी.ए. भी करना चाहती थी। मैंने उसकी सोच की तारीफ की और उसे बताया कि आप सी.ए. के साथ साथ सी.एस. भी कर लीजिए। उसने मुस्कुराते हुए मुझसे पूछा कि यदि ऐसा हो जाए तो आप क्या अपने कार्यालय में काम करने का मौका देंगें ? मैंने कहा जरूर दूँगा। आप जैसी योग्य और होशियार लड़की मेरे कामकाज और आगे बढायेगी ऐसा मुझे विश्वास है। पार्टी खत्म होने के बाद राजश्री के अनुरोध पर मैं उसे छोडने उसके घर तक गया था। कार से उतरते समय उसने मेरा कार्ड ले लिया और अपना मोबाइल नंबर मुझे दे दिया।

इसके कुछ दिनों के बाद एक दिन उसका फोन आया कि आज मौसम बहुत सुहाना है चलो कही कार से लंबी दूरी तक घूम आयें। मैं उसे लेकर निकल पड़ा। कुछ देर बाद उसने कहा कि मुझे कार चलाना भी सिखा दो और उसे कार सिखाने के बहाने अपने एकदम नजदीक ले आया इससे स्वाभाविक रूप से मेरे हाथ उसके शरीर को छूने लगे। मुझे बहुत प्रसन्नता हुई कि उसने कोई विरोध नहीं किया। इसके बाद हम लोग प्रायः मिलने लगे। हमारी नजदीकियाँ बढ़ती गई। इसके कुछ समय बाद अचानक ही उसने मुझसे मिलना जुलना बंद कर दिया जिसका कारण राजश्री के द्वारा उसके घर में मुझसे मिलने की खबर पहुँचाना था। इसके लगभग छः माह बाद एक दिन अचानक ही रात के 12 बजे के आसपास उसका व्हाट्सऐप मैसेज आया कि आप कैसे हैं? मैं उसे भूल चुका था। मैंने उत्तर में पूछा कि आप कौन है? उसका जवाब आया कि मैं वही हूँ जिसको आप कई पर्यटन स्थलों पर अपने साथ ले गये थे। अब मैं उसे पहचान गया। मैंने उसे मैसेज किया कि इतनी रात आपने कैसे मुझे याद किया ? उसने कहा की आपकी याद आ रही थी इसलिये आपसे बात करने की इच्छा हो गयी। धीरे धीरे हम लोगों के बीच में बातें मर्यादाओं की सीमा पार करने लगी। ऐसा दो तीन रात तक होता रहा और हम लोग देर रात तक चैटिंग करते थे। एक दिन साक्षी ने मुझे शाम के समय एक रेस्टारेंट में बुलाया और मैं निर्धारित समय पर वहाँ पहुँच गया जहाँ उसने मुझे अपनी कुछ आर्थिक कठिनाईयाँ बताते हुए तीस हजार रू. देने का अनुरोध किया। मैंने उससे कहा कि तुम एक संपन्न परिवार से हो तुम यह रकम अपने माता पिता से क्यों नहीं माँग लेती हो और तुम्हें इतने रूपये किसलिए चाहिए ? उसने कहा कि यह रकम मैंने अपनी मित्र से उधार लिए थे जो कि कपड़े, किताबों, रेस्टारेंट इत्यादि में खर्च हो गये। अब मेरी मित्र मुझसे रूपये वापस मांग रही है। मेरा दिमाग काम नहीं कर रहा है कि मैं उसे यह रकम कैसे वापस करूँ। आप मुझे यह रकम उधार दे दें मैं धीरे धीरे यह रकम आपको वापस कर दूंगी।

मैंने कहा कि मैं कल बताऊँगा। उसने मुझसे जेब खर्च के लिए मदद माँगी। मैंने पर्स निकालकर एक हजार रूपये उसे दे दिये परंतु मैं आश्चर्यचकित रह गया जब उसने मुझसे पर्स लेकर उसमें रखे हुए बाकि के दो हजार रूपये निकाल लिये और खाली पर्स मुझे वापस कर दिया। इस अकल्पनीय व्यवहार ने मुझे सोचने पर मजबूर कर दिया कि यदि मैं इसे तीस हजार रू. दिये देता हूँ तो यह सिलसिला आरंभ हो जायेगा और ना जाने आगे यह क्या अपेक्षाएँ मुझसे करने लगेगी इसलिए बेहतर होगा कि इसे अभी ही ना कर दिया जाए। मैंने उसे रात में फोन करके रूपये देने में असमर्थता बता दी। इसके दस मिनिट बाद ही उसका मेरे पास फोन आया जिसमें उसकी बातों का तरीका एवं व्यवहार एकदम बदला हुआ था। उसने मुझे सीधे धमकी देते हुए कहा कि कल दोपहर दो बजे तक मुझे रकम मिल जानी चाहिए अन्यथा मैं आपके द्वारा मेरे साथ किये गये वार्तालाप को आपके परिवार तक पहुँचा दूंगी। मैं परेशान हो गया कि इन परिस्थितियों में मुझे क्या करना चाहिए। मैंने उसे समझाने के दृष्टिकोण से उसे एक रेस्टारेंट में बुलाया और कहा तुम यह गलत कर रही हो ऐसी ब्लेकमेलिंग करना ठीक नहीं है।

वह बोली मेरी मजबूरी है और मैं ऐसा करने के लिए विवश हूँ इसलिए आपसे तीस हजार रू. माँग रही हूँ। मैं आपको कल दोपहर तक आखिरी मौका दे रही हूँ आप मुझे पैसे दे दें अन्यथा मैं मजबूर होकर हमारे बीच हुए अश्लील वार्तालाप को आपके परिवार तक पहुँचा दूंगी। इतनी बात होने पर हम दोनों अपने अपने घर घर चले गये। रास्ते में जब मैंने जेब में हाथ डाला तो देखा कि मेरा पर्स और मोबाइल दोनों गायब थे। मुझे पूरा शक था कि यह काम साक्षी का ही है परंतु मेरा दिल इसे नहीं मान रहा था। इसलिये इस बात को परखने के लिए मैंने उसे पुनः दूसरे दिन दोपहर में मिलने के लिए एक रेस्टारेंट में बुलाया और अपनी जेब में दो हजार रू. एवं एक नया मोबाइल रख लिया। इस बार मैं पूर्णतया सजग था। उसने रेस्टारेंट में आते ही मुझसे सीधे कहा कि

तुम रूपये लाये हो क्या ? मैंने उसे अपने पास बैठने के लिए इशारा करते हुए कहा कि मुझे इसी संदर्भ में तुमसे बात करनी है। उसने पुनः अपनी बात दोहराई कि क्या रूपये लाए हो ? मेरे ना कहते ही वह बिना कोई बात किये उठकर जाने लगी तो मैने उसे कहा कि मुझे शाम तक का समय दो मैं कही से इंतजाम करने की कोशिश करता हूँ यह सुनकर वह मेरे पास आयी और कहा कि ठीक है यह आखिरी मौका है इस बार मैं और कोई बात नहीं सुनूंगी। इतना कहकर वह तुरंत वहाँ से चली गई। जैसे ही वह गई मैंने बिल चुकाने के लिए जेब में हाथ डाला तो आश्चर्यचकित रह गया कि मेरे रूपये और मोबाइल पुनः गायब थे। इस बार शक पूर्णतया यकीन में बदल गया कि यह काम सिर्फ साक्षी का ही है परंतु मैं घोर आश्चर्य में था कि मेरे पूरी तरह से सजग होते हुए भी कैसे उसने रूपये और मोबाइल निकाल लिये ? इस घटना के तुरंत बाद मैंने आनंद को फोन किया और उसे पूरी बात बताई परंतु घटना जानने के पश्चात उसके होश उड़ गए और उसने लड़की का मामला होने के कारण किसी भी तरह की सलाह देने में असमर्थत व्यक्त कर दी और इतना ही कहा कि इस बारे राकेश ही सही सलाह दे सकता है। मैं तुरंत ही राकेश के घर गया और उसे सारी बातों से अवगत कराया। उसने मुझे कहा कि चोरी के मामले को तो भूल जाओ और रही ब्लेकमेलिंग की बात तो इससे घबराना नहीं और बिना डरे उसे स्पष्ट कह दो कि तुम्हें जो करना है कर लो मैं सबसे निपट लूँगा परंतु तुम्हें पैसा नहीं दूँगा। राकेश की बातों से मेरी हिम्मत बढ़ी और मैंने दृढ़ निश्चय कर लिया कि चाहे कुछ भी हो जाए मैं रूपये नहीं दूँगा अन्यथा यह सिलसिला अनवरत चलता रहेगा और जीवन भर मुझे ब्लेकमेलिंग का शिकार होना पड़ेगा।

रात्रि में साक्षी का फोन आया कि क्या हुआ तुम तो शाम तक रूपये देने वाले थे ? मैंने उसे डाँटते हुए स्पष्ट कह दिया कि पहले मेरी जेब से चुराए हुए रूपये और मोबाइल वापस करो फिर कोई बात करेंगें अन्यथा तुम्हें जो करना है कर लो मैं सबसे निपट लूँगा। इतना सुनते ही साक्षी ने पुनः मेरे परिवार को सारी

बातें बताने की धमकी देते हुए फोन काट दिया। उस दिन से लेकर आज तक साक्षी का कोई फोन नहीं आया और ना ही कोई बात मेरे परिजनो तक पहुँची।

आरती और पल्लवी कहती हैं कि आनंद एक अच्छे कवि हैं और आज मौसम भी बहुत सुहाना हो गया है। इस शानदार मौसम में अगर आप कुछ कविताएँ सुनाए तो बडा आनंद आएगा। आनंद कहता है कि ठीक है मैं कविताएँ सुनाता हूँ :-

मन भटक रहा है

मंथन कर रहा है।

प्रेम तथा वासना में

अंतर समझ रहा है।

पत्नी की मांग में सिंदूर

उसे सप्त वचन की

याद दिला रहा है।

प्रेम व प्यार बाजार में

उपलब्ध नही,

यह है भावनात्मकता का आधार।

धन से वासना मिल सकती है

पर प्रेम सुख नही।

जीवन में पत्नी का हो सच्चा साथ

तो यहीं पर है सच्चा प्रेम व प्यार

तब यही बनता है

तृप्ति से जीने का आधार।

पर यदि यह उपलब्ध नहीं

तब जीवन में

तनावग्रस्त रहना ही

है तुम्हारा दुर्भाग्य।

इसके बाद मैं दूसरी कविता सुनाता हूँ :-

प्रेम एक अनुभूति है

जिसका कोई स्वरूप नहीं

जिसका कोई विकल्प नहीं

एक ज्योति है

हृदय में होता है जिसका प्रकाश

एक अहसास है

एक कल्पना है

जो वास्तविकता में परिवर्तित हो

बनती हैं जीवन का आधार

एक तपस्या है

भावनाओं का समर्पण है

एक ऐसी भक्ति है

जिसका ना तो प्रारंभ है

और ना ही कहीं अंत है।

यह तिरस्कार नहीं है

इसमें है सुख और शांति

इसमें है जीने की कला

यह देता है

तन और मन को बल

आत्मा को चेतना।

विपरीत परिस्थितियों में भी

समर्पण होता है

हाँ हाँ यही तो है

सच्चे प्रेम का आधार।

आनंद की कविताएँ सुनकर सभी प्रसन्नता से वाह वाह कर उठे। अब मानसी के अनुरोध पर आरती और पल्लवी के कहने पर वह अंतिम कविता सुनाता है।

प्रेम पुजारी हैं हम,

प्रेम की ज्योर्तिगमय गंगा बहाते चलो।

राह में आयेंगी जो कठिनाइयाँ

उनको प्रेम से मिटाते चलो।

प्रेम है पूजा, श्रद्धा, भक्ति

प्रभु को पाने का आधार

प्रेममय वसुंधरा को बनाकर

हर्ष एवं उल्लास का जीवन

साकार करते चलो।

प्रेम से दिलों को जीतकर,

उन पर राज करते चलो।

माता पिता से प्रेम का आशीर्वाद लेकर,

नवजीवन जीते चलो।

प्रेम है चेतना,

सामाजिक शांति का आधार,

अपनी कल्पनाओं को

प्रेममय रूप में साकार करो,

प्रेम से जीवन जीकर ,

प्रेममय रस में विभोर होते हुए,

अनन्त में प्रस्थान करो।

कविता सुनकर सभी बड़ा आनंदित महसूस कर रहे थे तभी मानसी ने कहा कि अब बहुत रात हो चुकी है और हम सभी को अब विश्राम करना चाहिए। सभी मानसी से सहमति व्यक्त करते हुए अपने कमरों में सोने के लिए चले जाते हैं।

दूसरे दिन सुबह मौसम खुल जाता है। गौरव सुबह 6 बजे उठकर बाहर आता है। पछियों की चहचहाहट, सुबह की शुद्ध हवा एवं सामने बहती हुयी नदी का अलौकिक दृश्य देखकर खुश हो जाता है। इसी समय आरती भी बाहर आती है और गौरव को देखकर उसके पास आकर गुडमार्निंग कहती है। वह भी गुडमार्निंग कहकर उसे अपने पास बैठा लेता है। गौरव कहता है कि तुम इतनी जल्दी कैसे उठ गयी ? आरती कहती है कि मेरी आदत तो सुबह 5 बजे उठने की है। कितना मनोहारी दृश्य है। सूर्य का उदय होने ही वाला है आकाश में कैसी अनुपम लाल छटा छायी हुयी है ऐसे दृश्य को देखकर तुम कुछ कहो। गौरव कहता है कि मैं नर्मदा नदी के तट पर प्रातःकाल सूर्य भगवान के दर्शन कर रहा हूँ मेरे मन में आत्मा क्या है, क्यों है, कैसी है ? आदि का गंभीर चिंतन चल रहा है। मैं सोच रहा हूँ आत्मा में चेतना का समावेश परमपिता परमेश्वर के द्वारा होता है और इसका खत्म हो जाना मृत्यु है। हमें कितने दिन जीवित रहना है और कब मृत्यु को प्राप्त होना है, यह परमात्मा के हाथों में है। मृत्यु के उपरांत आत्मा कहाँ जाती है यह किसी को नहीं मालूम परंतु प्रभु आत्मा को किसी भी स्वरूप में भेजकर जीवात्मा बना देते है। मैं सोच रहा हूँ कि इस जन्म को मैं पूर्ण सुख शांति और संतुष्टि से जियूँ। आरती कहती है कि आप तो एकदम दार्शनिकों के जैसी बातें कर रहे है। हम लोगों के साथ आप का मन नहीं लग रहा है क्या ? गौरव कहता है कि मैं जानता हूँ कि तुम्हारी भी साहित्य में रूचि है और तुम्हारे द्वारा विभिन्न सामयिक विषयों पर तुम्हारा चिंतन कई पत्रिकाओं में समय समय पर प्रकाशित होता रहता है। तुम भी ऐसे सुंदर दृश्य

को देखते हुए अपने विचार व्यक्त करो। तब आरती कहती है कि अच्छा मैं भी आपको एक कविता सुनाती हूँ।

सूर्योदय हो रहा है

सत्य का प्रकाश विचारों की किरणें बनकर

चारों दिशाओं में फैल रहा है

मेरा मन प्रफुल्लित होकर

चिंतन मनन कर रहा है

प्रभु की कृपा एवं भक्ति का अहसास हो रहा है

समुद्र की लहरों पर

ये प्रकाश की किरणें पड़ती हैं

तो तन, मन, हृदय एंव आंखें

ऐसे मनोरम दृश्य को देखकर

शांति का आभास देती हैं

सुख और सौहार्द्र का वातावरण

सृजन की दिशा में प्रेरित कर रहा हैं।

आज की दिनचर्या का प्रारंभ

गंभीरता से नये प्रयासों की

समीक्षा कर रहा है।

शुभम् मंगलम् सुप्रभातम्

हमारी अंतरात्मा

वीणा के तारों का आभास देकर

वीणावादिनी सरस्वती व लक्ष्मी का

स्मरण कर रही हैं

तमसो मा ज्योतिर्गमय के रूप में

दिन का शुभारंभ हो रहा है

सूर्यास्त होने पर

मन हृदय व आत्मा में समीक्षा होगी

और आगे आने वाले कल की प्रतीक्षा में

जीवन का क्रम चलता रहा है और चलता रहेगा।

तभी खानसामा चाय लेकर आ जाता है। चाय पीते पीते गौरव कहता है कि आरती मेरे मन में तुम्हारे प्रति बहुत सम्मान एवं आदर का भाव हो गया है। आरती भी कहती है कि मुझे भी आपका स्वभाव अच्छा लगा आप एक नेक इंसान हैं। वक्त और परिस्थितियाँ जीवन में कब क्या ना करा दें यह कहना कठिन है परंतु हमें नैतिक मूल्यों, अपनी सभ्यता संस्कृति और संस्कारों को नहीं भूलना चाहिए। उनके बीच वार्तालाप के दौरान ही राकेश, आनंद, पल्लवी और मानसी भी आ जाते हैं और सभी चाय, नाश्ते के बाद वापिस चलने की तैयारी करते हैं। पल्लवी, आरती और गौरव, आनंद एक कार में और दूसरी कार में राकेश एवं मानसी रवाना होते हैं।

रास्ते में आनंद हंसी मजाक करता हुआ आरती और पल्लवी को बताता है कि गौरव में सब अच्छाइयाँ हैं केवल एक को छोडकर कि यह रूपये खर्च करने में बहुत कंजूस हैं। कुछ माह पहले ही इसने अपनी तथाकथित गर्लफ्रेंड के उपर मुझसे 15 हजार रू. खर्च करवा दिये। मेरे ना करने पर भी ये उसका दीवाना था। नतीजा यह निकला कि मुझे चूना लगाकर वह ना जाने कहाँ चली गयी और इनकी दीवानगी भी खत्म हो गयी। आरती और पल्लवी ने कहा कि जरा विस्तार से बताओं क्या हुआ था। आनंद कहता है कि निवेदिता नाम की एक लड़की इनको गार्डन में मिली उसने इनसे दोस्ती कर ली। तीन चार दिन ये लोग मिलते रहे। एक दिन मुझे भी अपने साथ ले जाकर गौरव ने उससे परिचय करवाया। उसे ब्रांडेड कपडे खरीदना थे और ब्यूटी पार्लर में फेशियल हेयर कटिंग और ना जाने क्या क्या करवाना था। इनको उसी दिन काम से भोपाल जाना था इसलिये इन्होंने उसे मेरे साथ कर दिया। उस दिन वह मेरे साथ मार्केटिंग करती रही और पंद्रह बीस हजार का बिल मुझे गौरव के कारण चुका दिया। उससे बातचीत के दौरान मैं भांप गया कि यह साधारण, सीधी सादी लड़की नहीं है। दूसरे दिन निवेदिता ने पुनः दिनभर का शापिंग का कार्यक्रम बना लिया था। गौरव भी दूसरे दिन सुबह वापिस आ गया था और मैंने उसे फोन पर सब बातें समझा दी थी कि इस लड़की से दूर रहो यह बातें करने में बहुत मीठी है एवं व्यवहारकुशल है परंतु चालाक नजर आती हैं। गौरव को मेरी बातें समझ में नहीं आयी ये उसे दिन भर शापिंग कराते रहे। शापिंग के दौरान गौरव ने करीब बीस से पच्चीस हजार रू. खर्च कर दिए थे वह भी इस वादे पर कि रात में डिनर वे दोनों साथ साथ लेंगे एवं कहीं लांग ड्राइव पर चलेंगे ताकि मित्रता और प्रगाढ़ हो सके। शाम को निवेदिता ने इन्हें रेस्टारेंट में मिलने के लिये बुलाया, ये वहाँ इंतजार करते रहे परंतु वो नहीं आयी। उसने जो मोबाइल नंबर दिया था वह भी बंद हो गया था और शहर में जो पता उसने दिया था वह भी फर्जी निकला। तब इन्होंने मुझे फोन करके बताया कि तुमने जो कहा

था सही निकला वह लड़की बेवकूफ बनाकर चंपत हो गयी। मैंने इन्हें पहले ही समझाया कि कभी भी किसी भी अंजान के साथ उसके विषय में पूरा पता करने के बाद ही उसके साथ सोच समझकर आगे बढ़ना चाहिए आजकल की लड़कियाँ इस प्रकार की दोस्ती बनाकर अपना उल्लू सीधा कर लेती हैं। अब जो हो गया उसे भूल जाओ भविष्य में सावधान रहना। रास्ते में बातचीत होते होते आरती और पल्लवी का हॉस्टल आ गया और वे दोनों उनसे विदा लेकर अपने हॉस्टल में चली गयी।

मानसी के लेकर राकेश वापिस आ रहा था, रास्ते में राकेश ने बताया कि आनंद ने मुझे एक दिन उकसाया कि अवंतिका नाम की एक बहुत सुंदर व आधुनिक संस्कृति की हिमायती लड़की है जिसने कॉलेज में तहलका मचा के रखा है कई लोग उसके दीवाने है पर वह किसी को घास नहीं डालती। उसे हिंदी में बात करना तो मानो आता ही नहीं है। वह अंग्रेजी बोलकर सबको प्रभावित करती है। तुम उससे मित्रता करके बताओ तो मैं तुम्हारी काबिलियत मान जाऊँगा। मैंने आनंद से पूछा कि तुम उसे कैसे जानते हो वह बोला कि मेरी पहचान उसके पिताजी से है। मैं तुम्हें उसके घर अपने साथ ले जा सकता हूँ। मैंने कहा कि बिना बुलाए मैं किसी के घर नहीं जाता हूँ तुम एक काम करना कि अवंतिका को यह बताना कि तुम्हारा एक मित्र राकेश हस्त रेखा का विशेषज्ञ है और वह हाथें की रेखाएँ देखकर सब कुछ बता देता है। आनंद ने ऐसा ही किया। अवंतिका ने आनंद से उसे अपने घर आने का अनुरोध किया। यह जानकारी प्राप्त होने पर मैं दो दिन तक ज्योतिष के संबंध में किताबों को पढ़कर तीसरे दिन आनंद के साथ उससे मुलाकात करने उसके घर पहुँच गया। उसने आदरपूर्वक हम लोगो को बैठाकर अंग्रेजी में बातें करना प्रारभ कर दिया। मैंने भी अंगेजी में ही उसे जवाब दे दिया। इससे वह समझ गयी कि वह किसी योग्य व्यक्ति से मिल रही है।

अब उसने अपना हाथ आगे बढ़ाया मैंने उसका बांया हाथ अपने हाथ में लेकर रेखाओं को देखने का अभिनय चालू कर दिया। मैंने उसे दस बातें बताइ और मैं चुपचाप उसके चेहरे को भी भांप रहा था । यह महज इत्तेफाक था कि मेरे द्वारा बतायी गयी बातें सही निशाने पर लगी और अवंतिका ने मुझे बहुत अच्छा हस्तविशेषज्ञ मान लिया उसने आनंद को मुझ जैसे व्यक्तित्व से मिलाने के लिए बहुत आभार व्यक्त किया। उसकी एक बहन अनुराधा भी अपना हाथ दिखाने के लिए मेरे पीछे पड़ गई। मैंने उससे विनम्रतापर्वक कहा कि मुझे भविष्य जानने के लिए शक्तियों का आवाहन करना पड़ता है और मैं एक बार में एक का ही हाथ देख सकता हूँ। मेरी बातों एवं भाव भंगिमाओं से वे सभी बहुत प्रभावित हो गये। और अब धीरे धीरे मेरा उनके यहाँ आना जाना शुरू हो गया। अवंतिका आधुनिक व खुले विचारो की लड़की थी और वह प्रायः प्रतिदिन शाम के समय मेरे साथ लोंग ड्राइव या रेस्टारेंट जैसी जगह जाने लगी। हम बहुत अच्छे मित्र बन गये और आनंद भी मुझे मान गया कि तुमने कमाल कर दिया।

एक दिन मैं उसे लेकर एक रेस्टारेंट के बाहर रात्रि के समय बैठकर बातचीत कर रहा था उसका एक पुराना मित्र यह जानकर कि आजकल उसकी मेरे साथ बहुत घनिष्ठ मित्रता चल रही है हमारा पीछा करते हुए वहाँ तक आया बाद में उसने अपने कुछ साथियों को बुलाकर ईर्ष्यावश हम लोगों के साथ मारपीट की योजना बनाई। उसने जिन लोगों को बुलाया था उनमें से एक ने मुझे देखकर उससे कहा कि यह तो राकेश है और हमारा भी अच्छा मित्र है और हम लोग इसके साथ ऐसा व्यवहार नहीं कर सकते। तुम पहले ही बता देते कि तुम किसके लिए हमें बुला रहे हो तो हम तभी आने से इंकार कर देते। उसने उनको कहा कि तुम मेरे पुराने मित्र हो राकेश से पहचान तो तुम्हारी कुछ महीने पहिले ही हुई है। क्या तुम मेरी मित्रता के खातिर कुछ भी नहीं कर सकते? उन्होंने उसको उल्टा डाँटकर कहा कि तुम्हारे मन में ऐसी योजना का आना अच्छी बात

नहीं है। हम लोग ऐसे काम में सहयोग नहीं करेंगें। इतना कहकर सभी वापिस चले गये। अवंतिका ने मुझसे पूछा की इतने लोग क्यों आये थे और तुम्हे देखकर क्यों चले गये। मैंने नहीं मालूम कहकर टाल दिया।

इसी समय वेटर मेरे लिए व्हिस्की एवं अवंतिका के लिए नींबु पानी बनाकर लाता है। मैंने चीयर्स कहकर व्हिस्की का पहला घुँट ही पिया था कि वह भडक उठी और पूछने लगी कि तुम व्हिस्की क्यों पी रहे हो यह बहुत खराब चीज है और परिवार को बरबाद कर देती है तुम इसे फेंक दो मैं यह बरदाश्त नहीं कर सकती हूँ। मैंने उसकी बात ना मानते हुए दूसरा घूंट पिया तभी उसने मेरे हाथ से गिलास छीनकर बाहर फेंक दिया। मैं मन में बहुत आक्रोशित हो गया कि इसकी इतनी हिम्मत ! मैनें उसे घूरकर देखा तो उसने भी आक्रोशित होकर कहा कि मेरे से मित्रता रखनी है तो तुम्हें अपनी आदत बदलनी पड़ेगी या मुझसे मित्रता समाप्त कर दो। वह मेरी इतनी हितैषी थी कि मैं जब इंदौर में था तभी देश की प्रधानमंत्री की हत्या कर दी गयी थी और सभी जगह आक्रोश फैल रहा था। उसने मुझे होटल में फोन करके हिदायत दी कि तुम होटल के बाहर मत जाना। एक दिन उसने बातों बातों में मुझे बताया कि उसका रिश्ता तय हो गया है और वह शीघ्र ही विवाह करने वाली है। यह सुनकर मेरे दिल को बहुत झटका लगा क्योंकि मैं भी उसे चाहने लगा था जब मैंने यह बात बहुत हिम्मत करके उसे बताई तो उसने कहा कि तुम मेरे हमेशा से अच्छे दोस्त थे और रहोगे जरूरी नहीं कि हर संबंध की परिणिति विवाह में ही बदले। इसके बाद भी हमारी मित्रता आज भी बरकरार है। इस प्रकार बातें करते करते मानसी का हॉस्टल आ जाता है। राकेश मानसी को हॉस्टल में छोड़ता हुआ अपने घर को निकल जाता है।

एक दिन राकेश ने सभी को बताया कि वह अपनी पेंटिंग्स की प्रदर्शनी हेतु मुंबई जा रहा है। यह सुनकर गौरव, आनंद और मानसी कहते हैं कि हम भी तुम्हारे साथ चलना चाहते है। राकेश ने कहा कि यह तो बहुत खुशी की बात है

और वे चारों मुंबई के लिए रवाना हो जाते है। मुंबई पहुँचकर राकेश, गौरव और आनंद होटल में रूक जाते हैं एवं मानसी अपनी मौसी के यहाँ चली जाती है।

रात्रि में तीनों दोस्त होटल के कमरे की खिड़की से मुंबई शहर की जगमग जिंदगी को देखते हुए मदिरापान कर रहे थे। रात के दस बज चुके थे। हम तीनो नशे के सुरूर में थे और आपस में बात कर रहे थे कि चलो रात में मुंबई घूमने चलते है। वे तीनों घूमते हुए एक डिस्कोथेक में पहुँचते हैं वहाँ पर पता चलता है कि जब तक महिला साथ में ना हो अंदर प्रवेश वर्जित है। वे आसपास देखते है तो तीन लड़कियाँ खडी नजर आती हैं और वे उनसे निवेदन करते है कि क्या आप हमारे साथ डिस्कोथेक में चलेंगी ? वे कहती हैं कि ये तो हमारा रोज का काम है जो अकेले आते है उनको प्रवेश दिलाने का काम हम करते है परंतु इसके लिए आपको एक हजार रू. हमारा चार्ज देना होगा। वे तीनों लड़कियों को उनका मुँह माँगा रूपया देकर उस डिस्कोथेक में अंदर जाकर वहाँ की चकाचौंध में अपने आप को मानो भूल जाते है।

वे लड़कियाँ इनसे पूछती हैं कि आपको हमारा साथ रात भर चाहिए क्या ? वे तीनो हाँ कह देते हैं और तीन तीन हजार रूपये उनको और देने पडते है। उन तीनो के नाम वे पूछते है तो उनमें से एक कहती है कि मेरा नाम दिव्या है, ये श्वेता हैं और ये काव्या है। रात भी आपकी है हम भी आपके हैं जो नाम आपको अच्छे लगते है दे दीजिए। एक दो घंटे के बाद वे लड़कियाँ इनको लेकर उपर की मंजिल पर ले जाती हैं। वहाँ पर हम तीनों के लिए एक कमरा दिलवा देती है और तीनों पारदर्शी कपडे पहन कर टी.वी. पर अश्लील फिल्म शुरू कर अत्यंत कामुकता के साथ नृत्य शुरू कर देती हैं। वे सभी ऐसे कामुकता पूर्ण वातावरण में एक दूसरे के साथ जीवन का आनंद लेने लगते है।

एक दो घंटे के बाद लड़कियाँ पूछती हैं कि क्या मुंबई रात में नहीं देखना चाहेंगे ? आनंद कहता है कि हम लोग चलने तैयार हैं परंतु कोई ऐसी जगह लेकर चलो

जहाँ कुछ नयापन हो। वे कहती हैं कि चलिए आप को कांग्रेस हाऊस ले चलते है। गौरव कहता है कि बेवकूफों हमें क्या वहाँ भाषण देना है। वे कहती हैं कि आपको कुछ नहीं देना है सिर्फ देखकर मजा लीजिए। सभी टेक्सी में बैठकर कांग्रेस हाऊस पहुँचते हैं वहाँ सोच के विपरीत राजनैतिक गतिविधियों का दूर दूर तक कोई संबंध नहीं था। वह तवायफों का अड्डा था। वहाँ दिखने में बहुत सुंदर, बातचीत में अदब वाली सैकड़ो तवायफों के कोठे थे। वहाँ पर ये लड़कियाँ हमें एक शानदार कोठे पर ले गई। जहाँ हम डेढ़ दो घंटे तक मुजरा देखते रहे फिर हम लोग वापिस होटल आ गये तब तक सुबह का 4 बज चुका था। उन लड़कियों ने एक बार पुनः हम सभी को बिस्तर पर पूर्ण संतुष्टि देते हुए विदा लेकर वापिस चली गई। हम लोग वापिस अपने होटल आ गये। इस प्रकार मुंबई की रात की जिंदगी का नशा हम लोगों के दिमाग में चढ़ चुका था।

राकेश की प्रदर्शनी बहुत सफल रही। चित्रकारों एवं प्रशंसकों ने बहुत तारीफ की और उसकी कुछ पेंटिंग्स की बिक्री भी होने से उसने प्रसन्न होकर सभी को होटल ताज में रात्रिभोज कराया और उसके उपरांत मानसी को उसकी मौसी के घर छोडकर हम लेग आपस में बातचीत करने लगे कि आज फिर मौज मस्ती की जाए। गौरव बोला कि इतने रूपये व्यर्थ नष्ट करने में क्या फायदा है। राकेश कहता है कि भगवान ने जवानी एक ही बार दी है धन की हमारे पास कोई कमी नहीं है यह खर्च करके आज की दुनिया देखने का मौका तो प्राप्त होता है तब क्यों ना उसका लुत्फ उठाया जाए।

हम तीनों लोग कोलाबा में घूम रहे थे, एक व्यक्ति ने आकर पूछा आपके कुछ चाहिए क्या ? हम लोगों ने कहा कि एक नहीं तीन चाहिए परंतु बहुत अच्छी होनी चाहिए। वह बोला मेरे साथ चलिए आपको मिलवा देता हूँ। हम उसके साथ एक फ्लेट में गये वहाँ पर पाँच छः खूबसूरत लड़कियाँ बैठी हुई थी हमने उनमें से तीन को पसंद करके कहा कि हमको मुंबई में कुछ ऐसा दिखाओ कि जिसकी कल्पना भी हमने नहीं की हो। वे बोली रूपया खर्च करोगे ? राकेश ने कहा

कितना ? उसने कहा कि पचास से सत्तर हजार। मुंबई के पास एक द्वीप है जहाँ असीमित आनंद मिलेगा परंतु रात के समय वहाँ टैक्सी से ही जाना पडेगा और वहाँ पहुँचने में करीब दो घंटे लग जायेंगे। गौरव की घिग्गी बंद हो गई परंतु उसे मजबूरी में हम लोगों के साथ जाना पड़ा। हम लोग एक टैक्सी में बैठकर रवाना हो गये। लगभग दो घंटे बाद हम लोग काजल, रूपाली और जूही नाम की लड़कियों के साथ एक टापू पर पहुँच गये। वहाँ पर वे हमें एक रेस्टारेंट में ले गई। जहाँ हम लोगों ने देखा कि काफी जोडे अर्धनग्न अवस्था में डांस फ्लोर पर मदमस्त होकर नाच रहे थे। हम लोग ऐसा देखकर हतप्रभ हो गये। गौरव को लेकर काजल यह कहकर कि हम दोनों घूमकर आते है चली जाती है। आनंद, जुही के साथ चला जाता है और राकेश रूपाली के साथ उसके कहने पर थोडी दूर जाकर एक झोपडीनुमा जगह में प्रवेश करता है। उपर चांद की रोशनी दायीं तरफ समुद्र, बांयी ओर बडें बडें वृक्ष मन को गदगद कर रहे थे। उस झोपड़ी में पलंग बिछे हुए थे और आप अपने पार्टनर के साथ सबकुछ कर सकते थे। राकेश अब रूपाली के साथ मजा लेने लगा। जूही आनंद को लेकर पास के ही एक दूसरे क्लब में चली जाती है। गौरव को काजल पास ही में समुद्र के किनारे पर ले जाती है और दोनों जवानी का आनंद लेने लगते हैं। लगभग तीन चार घंटे बाद प्रातः काल सभी लोग वापिस हो जाते हैं। रास्ते में तीनों लड़कियाँ पूछती है कि आपको आनंद मिला कि नहीं ? वे कहते हैं जिसकी हम कल्पना भी नहीं कर सकते थे तुमने आज वो दिखाया है और सभी वापस मुंबई लौट आते है।

अब तीनो दिन भर प्रदर्शनी में अपना समय देते है। उस दिन काफी महत्वपूर्ण लोग आकर राकेश की कला की सराहना करते हुए उसकी पेंटिग्स खरीदते हैं। राकेश आनंद और गौरव को कहता है कि यहाँ पर पेंटिंग्स की इतनी बिक्री हेगी इसका मुझे अनुमान भी ना था, यहाँ के लोग कला प्रेमी है। रात में वे सभी वापिस अपने होटल आते हैं। आनंद कहता है आज रात मुंबई में फिर नया

जलवा देखने चला जाए। उसकी बात सुनकर गौरव कहता है कि ये जो कुछ भी हम देख रहे हैं यह अच्छा नहीं है। यह हमारे मन को प्रदूषित करके हमें बुरी आदतों का गुलाम बना देगा। यह कहते हुए कि यह हमारी सभ्यता, संस्कृति एवं संस्कारों के विपरीत है वह आनंद और राकेश से कहता है कि इस प्रकार धन का अपव्यय मत करो। यदि फिर भी तुम लोगों को जाना हो तो जाओ मैं तो होटल में ही रूकूंगा।

आनंद और राकेश उसको यह कहकर कि सिर्फ बाहर घूमकर आते हैं उसे अपने साथ ले लेते है। वहाँ पर एक टैक्सी वाला बताता है कि जिंदगी का लुत्फ उठाना है तो मड आइलैंड जाइये। ये लोग पूछते हैं कि वहाँ पहुँचने में कितना समय लगेगा। टैक्सी वाला बताता है कि दो से ढाई घंटे लग जायेंगें परंतु वहाँ पर जो आनंद है उसकी आप कल्पना भी नहीं कर सकते। आनंद और राकेश टैक्सीवाले से मडआइलैंड जाने के लिए कह देते हैं और गौरव के विरोध करने पर उसे यह कहकर संतुष्ट कर देते हैं कि तुम वहाँ रूम में आराम करते रहना तुम्हें कोई भी डिस्टर्ब नहीं करेगा। आपस में बाते करते हुए रात के 11 बजे मडआइलैंड पहुँचते हैं।

वहाँ पर एक जगह टैक्सी वाला ले जाता है जहाँ पर प्रवेश शुल्क देने के बाद अंदर जाकर तीनों ने देखा कि वहाँ पर रेत से भरा हुआ टीला था जो कि पूर्णतया वातानुकुलित था उसमें लोग अपनी गर्लफ्रेंड के साथ मौज मस्ती कर रहे थे। वहाँ पर दो सुंदर लड़कियाँ दिखी। राकेश ने उनसे बात की और उन्हें अपने साथ शराब पीने के लिए आमंत्रित किया। इसके बाद हम लोग वहाँ रूम लेकर मौज मस्ती के मूड में आ गये। गौरव यह सब देखकर बिचक गया और कहने लगा कि मैंने पहले ही तुम लोगों को कह दिया था कि मुझे अब इन सब बातों में कोई रूचि नहीं है। राकेश ने कहा कि तुम रूपये मत खर्च करना, यह सुनकर गौरव प्रसन्न हो जाता है। हम लोग एक लड़की नाजनीन को उसके साथ कमरे में भेज देते है और दूसरी लड़की सलमा हम लागों के साथ रूम के

बाहर बरामदे में शराब पी रही थी तभी गौरव के कमरे से जोर की आवाज आयी, हम लोग घबरा गये और दरवाजे को खटखटाया तो अंदर से कोई जबाव नहीं मिला तभी हाउस कीपर भागा भागा आया कि साहब क्या हो गया है ? हमने उससे कहा कि दरवाजा नहीं खुल रहा है और कोई जबाव भी नहीं दे रहा है इस दरवाजे को दूसरी चाबी से खोलो। उसने तुरंत दूसरी चाबी लाकर दरवाजा खोल दिया। हम लोग मन में किसी अनहोनी घटना की कल्पना से परेशान हो रहे थे। जब दरवाजा खोला गया तो हम लोग अंदर का दृश्य देखकर हंस हंस कर पागल हो गये। पलंग टूटा हुआ पड़ा था और ये दोनों उसके बावजूद भी टूटे पलंग पर अपने प्रेमालाप में खोये हुये थे। गौरव इस घटना से हडबडाकर उठा। राकेश ने नाजनीन से पूछा कि पलंग कैसे टूटा तो उसने हंसते हुए कहा कि ये मेरे साथ एकदम से जोर से बैठ गये तो पलंग टूट गया। हाउस कीपर ने मैनेजर को यह बात बताई और अंततः गौरव को बीस हजार रू. हर्जाने के तौर पर देना पडा। हम लोगों का भी मन खिन्न हो चुका था। दोनों लड़कियों को धन्यवाद देते हुए उनका भुगतान देकर वापिस मुंबई रवाना हो गये।

रास्ते में गौरव कहता है कि मैं तुम्हें बार बार समझा रहा हूँ ऐसे गलत कामों में धन का अपव्यय मत करो। इससे लक्ष्मी जी का अपमान होता है। आज खर्च करना आसान है किंतु कमाना कितना कठिन होता है यह हम सब जानते हैं कि हमारे पास धन की कमी नहीं है किंतु यदि ये आदत में शुमार हो गया तो एक ना एक दिन बहुत बड़ा संकट आ सकता है। यदि हमारे परिवार में इसकी भनक लग गई तो इसका क्या परिणाम होगा। वह राकेश से कहता है कि तुम मानसी को प्यार करते हो मैं आरती को चाहता हूँ और आनंद पल्लवी को चाहता हैं। यदि उन लोगों को यह बात पता हो गई तो क्या वह जिंदगी में कभी हमारे साथ आयेंगी ? वे हमसे मिलना भी पसंद नहीं करेंगी। इसी प्रकार आपस में वार्तालाप करते करते मुंबई आ जाता है। वे टैक्सी से उतरकर बिल चुकातें हैं

तभी राकेश कहता है कि आज पता नहीं सुबह किसका मुँह देखा था कि रात बरबाद हो गई।

टैक्सी वाला धीरे से पूछता है आप कहिए तो आप को शिप में पहुँचा दूं। आनंद पूछता है कि यह क्या बला है और वहाँ पर क्या होता है। यहाँ पर प्राइवेट क्लब है वे महिने में एक दिन अपनी पार्टियाँ जहाज में रखते हैं जो यहां से काफी दूर ले जाते है वहां जहाज रातभर खडा रहता है। आप अपने ढंग से अपने शौक पूरे कर सकते है। आनंद ने राकेश की ओर देखा और बोला चलो यार आज ये भी मजा देख ले। गौरव यह सुनकर कहता है कि तुमको जहां जाना हो जाओ मैं तो होटल में जाकर सो रहा हूं। राकेश और आनंद आगे रवाना हो जाते हैं। टैक्सीवाला कहीं पर फोन करता है और थोडी देर बाद जवाब आता है कि इनके साथ दो मेंबर शिप वाले भी होना चाहिए। टैक्सीवाला इनसे पूछता है कि क्या इस प्रकार के क्लब की किसी मेंबरशिप वाले व्यक्ति से पहचान है। उनके ना कहने पर वो कहता है कि मैं दो लड़कियों को जानता हूं जो इसकी मेंबर हैं। आप कहें तो मैं उनसे संपर्क करूं परंतु आप को रूपये देने पड़ेंगें। हमारे हाँ कहने पर वह हमको एक फ्लैट में ले गया। वहाँ की सुंदरता और सजावट देखकर हम लोग समझ गये कि यह बहुत संपन्न व्यक्ति का फ्लैट है, तभी दो महिलाएँ परख और पायल नाम की आयीं और उन्होंने हमारा आइडेंटिटी कार्ड देखा, टैक्सी वाले ने हमारी होटल का नाम उन्हें बताया तब तक उनमें से एक व्हिस्की का पैग बनाकर ले आई और दूसरी ने तब तक होटल में फोन करके पूरी जानकारी प्राप्त कर ली। अब वे जाने के लिए तैयार हो गई थी। हम लोगों को टैक्सी वाले ने एक जगह छोड दिया जहाँ पर हम एक स्टीमर में बैठकर कुछ दूर चले होंगे फिर एक दूसरे याच में शिफ्ट कर दिया उसमें बैठकर हम लोग जहाज तक पहुंच गये। वहाँ का नजारा ही जबरदस्त था। सभी सुविधायें भीतर उपलब्ध थी। हम लोग उन लड़कियों के साथ डांस फ्लोर पर डांस करने लगे। हम लोग काफी थके हुये थे परंतु फिर से कुछ नया देखने की चाह में आ

गये थे। जहाज के भीतर तरह तरह के क्लब बने हुये थे। हम लोग यह सब देख रहे थे तभी वहाँ हडकंप मच गया कि पुलिस ने छापा मार दिया है। वहाँ 5 मिनिट के अंदर नजारा ही बदल गया। इसके बाद पुलिस ने सभी के परिचय पत्र चेक करना शुरू किया। हमारे पास जेब में रिटर्न टिकट भी थी। परख ने हमसे पूछा कि आपके वापिस जाने की टिकिट आपके पास है क्या। मैंने उसे टिकिट दिखाई तो वह खुश हो गई और हम लोगों को चेंकिंग स्टाफ के पास ले गई और बताया कि ये मेरे मंगेतर हैं एवं ये बाहर से आये हैं और ये इनकी वापिसी की टिकिट है और ये हमसबका परिचय पत्र है। आपको और कुछ जानकारी चाहिए हो तो बतायें अन्यथा हमें जाने दें। पुलिस वाले ने सब देखकर वहाँ से जाने की अनुमति दे दी। कुछ समय पश्चात याच व स्टीमर के सफर के बाद हम वापिस पहुँच गये। उन लड़कियों ने हमारे रूपये लौटा दिये और कहा कि शिप के टिकिट के जो रूपये है वे भी आपको कल दोपहर तक होटल के काउंटर पर वापिस मिल जायेंगे। पुलिस के छापे के दौरान घबराहट के कारण हमारी सिटटी पिटटी गुम हो गई थी। हम उन लड़कियों की ईमानदारी देख कर दंग रह गये।

दूसरे दिन सुबह जब गौरव को इन बातों का पता हुआ तो वह बोला कि मैं सोच ही रहा था कि कोई ना कोई मुसीबत खडी होगी और देखो यह हो भी गई थी। वह तो ईश्वर की कृपा है कि तुम लोग सकुशल लौट आये। अब उन्हें मुंबई से वापिस जाने के लिए सिर्फ तीन दिन ही बाकी थे। तीनों ने अब इस प्रकार की रात बिताने से तौबा कर ली। उन्होंने दिन भर प्रदर्शनी में समय दिया और संभ्रांत लोगों से मिलकर समय व्यतीत करते रहे। रात में तीनों वापस अपनी होटल आकर विश्राम करते करते आपस में वार्तालाप करने लगे।

आनंद ने कहा कि आज के जमाने में रूपया ही सबसे महत्वपूर्ण हो गया है। मैं तुम दोनों को ऐसी बात बताता हूँ कि तुम्हें विश्वास नहीं होगा परंतु यह पूर्णतः सत्य है। हमारे ऑफिस में एक विवाहित महिला संजना रिशेप्शनिष्ट के पद पर

नियुक्त की गई। वह दिखने में बहुत आकर्षक एवं सुंदर थी। मेरा मन उसे देखकर डांवाडोल हो गया था। मैंने चुपचाप ही उससे मित्रता का बहुत प्रयास किया परंतु उसकी तरफ से कोई प्रतिक्रिया नहीं थी। एक दिन वह नयी स्कूटी खरीदने के लिए एडवांस की चाहत में अपना आवेदन लेकर मेरे पास आयी। उस दिन उसकी भाव भंगिमा मुझे कुछ बदली हुई नजर आ रही थी। वह मेरे से मुस्कुराकर बात करती हुई बोली कि मैं इन रूपयों को किश्तों में चुका दूंगी। मैंने हिम्मत करके उसको कहा मैं तुम्हें चुपचाप अपने पास से रूपये दे देता हूँ जिसे तुम्हें वापिस करने की जरूरत नहीं है। वह बहुत खुश हो गयी। मैंने उसके कंधे पर हाथ रखकर पूछा कि शाम को कहाँ मिल सकती हो और एक स्थान तय कर लिया। वह वहाँ पर आयी और मैं उसे लेकर अपने गेस्ट हाउस चला गया। उसने मुझसे निवेदन किया कि आप मेरे साथ शारीरिक संबंध ना बनायें क्योंकि मेरे संबंध आपके बहुत नजदीकी रिश्तेदार से हैं मैं आपको ऐसी बात कह रही हूँ जिसे अपने तक ही सीमित रखियेगा यदि आप चाहे तो मेरी बेटी जो कि अभी अभी 18 साल की हुई है उसके साथ संबंध बना सकते है। मैने यह सुनकर कहा कि मैं तुम्हारी बेटी को देख चुका हूँ और मुझे यह स्वीकार है। दूसरे दिन वह अपनी बेटी को लेकर उसके गेस्ट हाउस पहुँचती है और उसे छोडकर वापिस अपने घर चली जाती है। मैंने उससे पूछा कि तुम्हें भी कुछ चाहिए तो यह सुनकर वह बोली नहीं आपने स्कूटी के लिये रूपये तो दे ही दिये हैं। उसके साथ दे तीन घंटे बिताने का अनुभव गजब का था। उसका नाम निधि था और वह गजब की सुंदर थी। उसने मुझसे कहा कि आपने मेरी माँ को मेरे रहते हुए कैसे पसंद कर लिया। वह कभी भी आपके पास नहीं आयेंगी। मैंने पूछा ऐसा कौन सा नजदीकी रिश्तेदार है जिससे उसका दोस्ताना है , क्या तुम्हें यह बात मालूम है। हाँ मुझे यह मालूम है। मुझे बताओ वह कौन है ? निधि कहती है कि आप नाराज तो नहीं होंगे। मैने कहा कि नहीं यह मेरा वादा है। तब वह बताती है कि वह व्यक्ति तुम्हारे पिताजी हैं।

राकेश कहता है कि हमारी सभ्यता, संस्कृति और संस्कारों पर बढ़ती हुई महंगाई और धन की आवश्यकता ने बड़ा विपरीत प्रभाव डाला हैं। आज कुछ लोग अपनी दैनिक आवश्यकता की पूर्ति के लिए ऐसी गतिविधियों में लिप्त हो जाते है जो समाज को पतन की ओर ले जाती है। राकेश कहता है कि आज से कुछ साल पूर्व मैं उद्योग में मुनाफे की कमी एवं कानूनी पेचिदगियों में बहुत उलझा हुआ था। मेरे एक मित्र ने मुझे सुझाव दिया कि उसके एक मित्र हरिस्वरूप के यहाँ पीरबाबा आते है जो कि आप की कठिनाईयों के हल के विषय में सलाह देते है। यह प्रक्रिया प्रत्येक शुक्रवार को सप्ताह में एक दिन आधे घंटे तक शाम 7 से 7ः30 तक चलती है। तुम चाहो तो मेरे साथ चलके अपनी कठिनाईयों के बारे में पूछ सकते हो। वहाँ किसी प्रकार से कोई पैसा नहीं लिया जाता है। मैं उसके साथ वहाँ पर गया। एक सज्जन मुझे देखकर मेरे पास आये और बहुत आदर पूर्वक उन्होने अपना परिचय जय कुमार देते हुए कहा कि मैं आपको जानता हूँ और ईश्वर करे आपकी इच्छा यहाँ पूरी हो जाये। नियत समय पर उनके यहाँ एक सज्जन को बाबा आने लगे और कुछ देर के बाद वह अपना होश खोकर चित्त होकर लेट गया। सभी दर्शनार्थियों ने अपने प्रश्न पूछना शुरू किये। उन्होंने मुझे कहा कि यहाँ तेरी समस्या का निदान नहीं होगा। तुम्हें मदन महल की पहाडियों में स्थित बडे पीर बाबा की मजार पर जाना होगा। इतना सुनकर मैं बाहर आ रहा था तभी मुझे बाहर तक छेडने के लिए जय कुमार मेरे साथ आया और बोला कि आप जब भी बडे पीर बाबा की मजार पर चलना चाहे आप मुझे साथ में ले सकते है। मेरा परिवार प्रति शुक्रवार को चादर चढाने वहाँ जाता है। इतना कहकर उसने अपनी पत्नी और अपनी दो लड़कियों से मेरा परिचय करवाया। मैं उन दिनो काफी परेशान था मैंने सोचा कि इस काम में कोई नुकसान तो है नहीं ,क्या पता आसमानी सुलतानी कोई बला लगी हो तो उससे छुटकारा मिल जायेगा। मैंने उसे फोन करके अगले शुक्रवार को ले चलने के लिए कहा। वह मेरे साथ वहाँ पर गया उसकी पत्नी पहले ही वहाँ

पहुँचकर चढ़ावे की सामान की व्यवस्था करके रखी हुई थी और हम लोग पाँच दस मिनिट में ही अपनी आराधना करके नीचे आ गये। मैने उसे सामग्र्री के रूपये देने के लिए पूछा तो उसने विनम्रतासपूर्वक मना कर दिया। उसने मुझसे निवेदन किया कि यदि पाँच मिनिट का समय मेरे पास हो तो नीचे एक दूसरी जगह पीर बाबा के पास अगरबत्ती लगाकर आ जायेगा। मैंने कहा कि ठीक है मैं तुम्हारा यही इंतजार कर रहा हूँ।

अब मेरा ध्यान उसकी पत्नी पर गया। मैंने देखा वह बहुत सुंदर और शालीन प्रवृत्ति की थी। उससे बातचीत के दौरान पता हुआ कि उसका पति किसी फर्म में सेल्समैन के पद पर है। उसकी दे बेटियां भी है जो कि कॉलेज में पढ रही है। उसके पति के वापिस आने में 15-20 मिनिट का समय लग गया तब तक हम दोनों आपस में बातचीत करते रहे। इसके बाद उन लोगों को रास्ते में छोडते हुए मैं अपने घर निकल गया। मेरा मन उसकी पत्नी रेखा के प्रति आकर्षित हो गया था। एक दिन मैंने फोन करके उन दोनों को एक रेस्टारेंट में बुलाया। जय कुमार शराब का बहुत शौकीन था अपनी पत्नी के मना करने के बावजूद भी तीन चार पैग गटक गया। वह बोला कि मैं जरूरी काम निपटाकर दस मिनिट में वापस आता हूँ तब तक आप खाने का आर्डर दे दे। उसके जाने के बाद मैंने रेखा को कहा कि आप मेरे पास बैठ जाए। वह मान गयी और मेरे पास आकर बैठ गयी। मैं समझ गया कि मामला यहाँ पर आसान हैं। मैंने उससे सीधे कह दिया कि आप बहुत सुंदर है और मुझे बहुत अच्छी लगती है। वह मुस्कुराई और बोली हम तो आपके सेवक है जो सेवा कहेंगें उसके लिए तैयार रहेंगें। इसी बातचीत के दौरान उसका पति वापिस आ गया। मैं बाथरूम तक गया इस बीच में उनकी जो भी बात हुई हो वापिस आने पर उसके पति ने मुझसे सीधी बात कही कि मुझे एक बोतल शराब दिलवा दीजिए और मेरी पत्नी रेखा को आप जहाँ ले जाना चाहे ले जाए परंतु यह बात सिर्फ अपने बीच में रहनी चाहिए। मैं रेखा को अपने गेस्ट हाउस में ले गया और वहाँ पर मैंने एक

घंटे मौज मस्ती करने के बाद वापिस उसे होटल छोड दिया। अब उसका पति प्रायः प्रति सप्ताह रविवार के दिन उसे लेकर मेरे पास आ जाता था और शराब की एक बोतल लेकर उसे छोडकर चला जाता था।

एक दिन वह बोला कि मेरी साली के सामने यह कुछ नहीं है उसे अभी तक किसी ने छुआ भी नहीं है। उससे मैं आपको मिलवा देता हूँ बाकी का काम आपको खुद ही संभालना होगा। मेरे हाँ कहने पर वह एक घंटे बाद ही उसे लेकर मेरे पास आ गया और खुद काम का बहाना बनाकर चला गया। उसकी साली जिसका नाम राखी था ने बातचीत करते हुए मुझे बताया कि वह ग्रेजुएशन कर चुकी है और अब उसका इरादा शादी करके व्यवस्थित जीवन जीने का था। वह अपनी बहन से बहुत ज्यादा सुंदर थी। जीजा ने मुझे कहा था कि आप किसी से मित्रता करना चाहते है। यदि आप इच्छुक हो तो मैं दोस्ती कर सकती हूँ। परंतु इसके आगे और कुछ भी नही। मैने कहा कि ठीक है। अब वह भी मुझसे सप्ताह में एक दो दिन मुलाकात करने लगी। एक दिन जब राखी आयी ना जाने वह कैसे मूड में थी उसने मुझे अपने आप को समर्पित कर दिया और स्वीकार किया कि यह उसका पहला अनुभव है हम लोग धीरे धीरे सप्ताह में दो तीन दिन मिलने लगे और ना जाने कब वह मुझे दिल से प्यार करने लगी। कुछ समय पश्चात उसका रिश्ता कही और तय हो गया परंतु वह शादी करने तैयार नहीं हो रही थीं। मुझे उसके साथ कोई प्यार नहीं था। मैं मन ही मन बहुत घबराया कि इसका ऐसा व्यवहार कही मेरे लिए मुसीबत ना खडी कर दे। मैने और उसके जीजा जय कुमार ने उसको बैठाकर बहुत समझाया और बडी मुश्किल से शादी के लिए तैयार हो गई। हम दोनों ने जल्दी से पंडित से उसकी शादी की तारीख निकलवा दी और नियत तिथि पर उसका विवाह हो गया। वह अपनी शादी के बाद भी मुझसे लगातार बात करती रही। मैने उसे बहुत समझाया कि इस प्रकार की हरकतों से तुम्हारे वैवाहिक जीवन में समस्या

खडी हो सकती है। बाद में धीरे धीरे उसे यह बात समझ में आयी और यह बात खत्म हुई।

एक दिन रेखा और जय कुमार शाम के वक्त मेरे पास आये और हम लोग बैठकर यहाँ वहाँ की चर्चाएँ कर रहे थे। तभी जय कुमार बोला कि राखी ने आपके साथ्ज्ञ बहुत अच्छा समय व्यतीत किया था। उसकी जितनी आवश्यकताएँ थी वह सब पूरी होती गयी और आपने उसके विवाह में भी खुले दिल से उसने जो कुछ भी सामान माँगा वह देकर आपने उसको कृतार्थ कर दिया। मैंने कहा कि यह तो मेरा फर्ज बनता था। अब उसके जाने के बाद अपने अकेलेपन को मिटाने के लिए मुझे किसी को खोजना पडेगा। यह सुनकर रेखा बोली कि आप कहीं बाहर क्यों खोज रहे है। मैंने कहा तो क्या करूँ। वह बोली जब अपने घर में ही सब कुछ है तो बाहर खोजने की क्या जरूरत है। मैंने उससे कहा कि तुम क्या कहना चाहती हो मैं समझ नहीं पा रहा हूँ। रेखा बोली कि समझदार के लिए इशारा काफी होता है।

एक दिन रेखा का जन्मदिन था जिसमें राकेश रेखा के पूरे परिवार को रेस्टारेंट में खाने पर बुलाता हैं। वहाँ पर बातों ही बातों में राकेश उसकी बडी बेटी चाँदनी से शारीरिक संबंध बनाने की बात कहता है। वह यह सुनते ही भडक उठी और बोली कि मैं आपका बहुत सम्मान करती हूँ आप कैसे मेरे बारे में ऐसा सोच सकते हैं। उसके बाद लगभग एक सप्ताह उससे कोई बात नहीं हुई एक दिन स्वयं उसी का फोन आया कि मैं आपसे मिलना चाहती हूँ। मैंने उसे लेने के लिए गाडी भेज दी और उसे गेस्ट हाउस बुला लिया। उसके बात करने का लहजा काफी बदल गया था उस दिन मैंने उसके साथ काफी आनंद लिया और चाहे जब हम लोग मिलने लगे। कुछ दिनो के बाद उसकी बहन वैशाली से भी मैंने नजदीकी बढाने का प्रयास किया परंतु मुझे बहुत आश्चर्य हुआ कि उसका स्वभाव एकदम विपरीत था। उसने पहले ही दिन मुझे स्पष्ट कह दिया कि वह ऐसे रिश्तों को बनाने में विश्वास नहीं रखती और इस संबंध में किसी प्रकार का

प्रयास ना करें। मुझे जीवन में पढ़ाई पूरी करके अपना कैरियर बनाना है। मुझे इसके अलावा और किसी चीज में कोई रूचि नहीं है। मैंने उसे आर्थिक रूप से काफी लालच दिया परंतु वह टस से मस नहीं हुई। वह एक चरित्रवान एवं सिद्धांतवादी लड़की थी। मैं मन ही मन में सोच रहा था कि कमल कीचड में ही खिलता है। चांदनी के मिलने के बाद मेरे जीवन का अकेलापन मिट गया था। मैं भरपूर आनंद से जीवन व्यतीत कर रहा था।

गौरव और आनंद यह सुनकर बोले कि यह वास्तविकता है या कोई फिल्मी कहानी। हम लोग तो ऐसी कल्पना भी नहीं कर सकते कि व्यक्तिगत स्वार्थ एवं आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए ऐसा भी हो सकता है। इस प्रकार चर्चा करते करते तीनों मित्र सो जाते हैं। अगले दिन सभी प्रदर्शिनी से अपनी पेंटिंग्स, सामान आदि पैक करके वापिस रवाना हो जाते है। इस प्रकार अपनी सात दिन की मुंबई यात्रा आनंद पूर्वक संपन्न करते हुए हम सभी वापिस हो गये।

रास्ते में हम लोगों ने मानसी से निवेदन किया कि तुम भी तो कुछ कहो सिर्फ हम लोगों की ही सुनती हो। मानसी ने गंभीर होकर कहा कि मेरे जीवन में ऐसी कोई घटना नहीं हुई जिसे सुनाया जा सके। कुछ समय बातचीत के पश्चात आनंद और गौरव सोने के लिए अपनी अपनी बर्थों पर चले जाते हैं। मानसी और राकेश भी अपने कूपे में विश्राम करने हेतु जाते हैं। राकेश मानसी से कहता है कि क्या बात है तुम उदास क्यों दिख रही हो ? मानसी कहती है कि मैं तुमको बहुत दिनों पहले यह बात बताना चाहती थी परंतु हिम्मत और उचित समय दोनों ही नहीं मिल पा रहे थे। आज हम और तुम अकेले है मैं अपनी दर्दनाक दास्तान तुम्हे बता देना चाहती हूँ। राकेश आश्चर्यचकित होकर पूछता है कि अच्छा अब तुम आराम से मुझे बताओ।

मानसी कहती है कि मैं जब कक्षा 11 में पढ़ती थी तब मेरे पड़ोस का एक लड़का मुझे अच्छी नजरों से नहीं देखता था उसने एक दिन मेरे माता पिता से

मेरे रिश्ते के लिए बात की। मेरे माता पिता ने उसे कह दिया कि पहले यह उच्च शिक्षा प्राप्त करेगी इसके बाद ही हम इस विषय पर विचार करेंगें। तुम भी अभी बी.कॉम प्रथम वर्ष के छात्र हो, यह शादी की झंझट में मत उलझो अपनी पढ़ाई मन लगाकर पूरी करो। यह बात सुनकर वह चुपचाप चला जाता हैं। एक दिन गर्मी के मौसम में मेरे परिवारजन छत पर सो रहे थे और मैं अपनी पढ़ाई के कारण नीचे थी। वह लड़का मेरे घर आया मैंने जैसे ही दरवाजा खोला उसने कुंडी अंदर से बंद करके मेरी मुँह पर रूमाल रखकर मेरे साथ जबरदस्ती करने लगा मैं चीख भी नहीं पा रही थी और उसके साथ विरोध करने पर मेरे कपडें भी फट गये थे। वह अंत में अपने उद्देश्य में सफल होकर मुझे वैसा ही रोता हुआ छोडकर भाग गया। मैंने तुरंत अपने तन को ढककर अपने माता पिता को इस वारदात की जानकारी दी। उन्होने तुरंत कुछ परिवारजनों को बुलाया और उस लड़के को खोजकर उसे मार डालने का फैसला किया। वे पुलिस थाने नहीं जाना चाहते थे क्योंकि उन्हें भय था कि इससे सामाजिक बदनामी होगी और लंबी न्यायिक प्रक्रिया से गुजरना होगा। इसके बाद मेरे परिवारजन उस लड़के की खोजबीन में लग गये, वह शहर छोडकर भाग गया था। कुछ दिनों पश्चात पता चला कि उसकी एक दुर्घटना में मृत्यु हो गयी थी। इस घटना का मेरे उपर बहुत गहरा प्रभाव पडा और मुझे सामान्य होने में काफी समय लगा। राकेश यह सुनकर बहुत गंभीर हो गया और उसे समझ नहीं आ रहा था कि वह मानसी को क्या कहे। उसने उसके कंधे पर हाथ रखते हुए इतना ही कहा मानसी तुम एक बहुत सहनशील लड़की हो जीवन में ऐसी दुर्घटना किसी के भी साथ हो सकती हैं परंतु अपनी सहनशीलता के कारण इस गहरे सदमे को सहन कर गई।

राकेश कहता है कि बलात्कार एक बहुत ही संगीन अपराध है। यह तो अच्छा हुआ कि अपराधी की दुर्घटना में मृत्यु हो गयी वरना दो परिवारों की दुश्मनी में ना जाने कब किसका क्या हश्र होता। मैं समझ सकता हूँ कि तुम्हारे

दिलोदिमाग पर कितना गहरा प्रभाव इस घटना का पडा होगा। यह व्यक्ति को मानसिक रूप से यह सोचने पर मजबूर कर देता है कि हमारी न्यायपालिका की प्रक्रिया कितनी कमजोर है कि अपराधी को उसके अपराध की सजा देने में कई साल लग जाते है और वह जमानत पर घूमता रहता है। तुमने मेरे उपर विश्वास करते हुए मुझे जीवन की इतनी बड़ी घटना बताई। इससे मेरा तुम्हारे प्रति सम्मान और भी बढ़ गया है। आज मैं तुम्हें एक बात बताना चाहता हूँ कि मैं तुम्हें दिल से चाहता था और मेरी चाहत में यह जानने के बाद कोई कमी नहीं आयेगी कि तुम्हारे साथ क्या हुआ है। तुम इन पुरानी बीती बात को दिलोदिमाग से निकाल दो। वह एक दुर्घटना थी जो बीत गयी है जिंदगी बहुत लंबी है और हमें जिंदगी में बहुत कुछ करना है और अपने उद्देश्यों को निर्धारित करके आगे बढना चाहिए।

यह सुनकर मानसी भावुक होकर अपना सिर राकेश के कंधों पर रख देती है और उसकी आंखें से आंसू निकल आते है। वह बोली कि मैंने इस घटना के तुरंत बाद आत्महत्या का मन बना लिया था परंतु ना जाने कैसे आत्मनुभूति हुई कि मैं अपनी पढ़ाई पूरी करने के बाद किसी अच्छे आश्रम में बच्चों को शिक्षा देने की जवाबदारी उठाना चाहती हूँ और इसी में अपना जीवन बिताने की इच्छुक हूँ। मुझे पहले ईश्वर के प्रति असीम श्रद्धा व विश्वास था परंतु इस वारदात के बाद मेरा मन बहुत बिखर गया है। मैं नहीं समझ पा रही हूँ कि जीवन क्या है, क्यों है और किसलिए है ? राकेश समझ गया कि मानसी अभी भी मानसिक आघात से उबर नहीं पायी है। जीवन में जन्म व मरण एक शाश्वत सत्य है ईश्वर का कोई रूप नहीं है पर हम अहसास कर सकते है। तुम भावनाओं के सागर में बह रही हो, तुम इस घटना के बाद अपने को एकाकी समझकर अभाव महसूस कर रही हो। तुम्हें कोई भी मंजिल नजर नहीं आ रही है। तुम अभी भी उस दुर्घटना की कल्पना में खोई हुई हो। इसे अब भूल जाओ। देखो प्रतिदिन सूर्योदय होता है और सूर्य की प्रकाशवान किरणें हमारी आत्मा में

मनन और चिंतन जाग्रत करती हैं। हमें अकर्मण्य होने से बचाती हैं और सृजन की ओर प्रोत्साहित करती है। मैंने तुम्हें पहले भी कहा है कि तुम अपना लक्ष्य सिर्फ बच्चों की पढाई तक सीमित मत रखो। दुनिया में आगे बढ़ने के लिए बहुत अवसर है। मानव जीवन में सफलता साधन, साधना और साध्य पर आधारित है। साधन है पहली सीढी, साधना है साध्य तक पहुँचने की दूसरी सीढी और साध्य है अंतिम लक्ष्य। तुम्हें अपने जीवन में इनमें समन्वय करके अपने विचारों को मूर्तरूप देना होगा अन्यथा जीवन में भटकाव बना रहेगा और तुम कभी भी सुख, शांति से जीवन यापन नहीं कर पाओगी।

राकेश कहता है कि यदि तुम सहमत हो तो मैं तुम्हारे साथ विवाह करना चाहता हूँ। हम दोनों एक ही जाति के है और मेरे परिवार को इसमें कोई एतराज नहीं होगा। मानसी कहती है कि यह निर्णय लेना मेरे लिए इस समय बहुत कठिन है अतः मैं अभी कुछ नहीं कह सकती हूँ। मैंने पता नहीं कैसे और क्यों जीवन का यह सत्य तुम्हें अपना समझकर असीम विश्वास के कारण बता दिया। अब काफी समय हो गया है हमें विश्राम करना चाहिए।

दूसरे दिन प्रातः नाश्ते के समय गौरव और आनंद राकेश का इंतजार करते रहते है परंतु वह विश्राम ही करता रहता है और ये लोग उसे परेशान नहीं करते है। नाश्ते के उपरांत गौरव आनंद से कहता है कि अब तीन चार घंटे का सफर और बाकी है जब तक राकेश आता है मुझे तुम अपने जीवन के एक दो शिक्षाप्रद, मजेदार एवं रोचक घटनाएँ बताओ। आनंद कहता है कि मैं तुम्हें अपने साथ घटी घटनाओं से अवगत कराता हूँ।

आनंद कहता है कि मुझे एक लड़की नेहा नाम की मिली जिससे परिचय एक वकील ने कराया था वह किसी केस के सिलसिले में उससे मिलने आती थी। एक दिन मैं एक रेस्टारेंट में दोपहर के भोजन के लिए बैठा हुआ था तभी वह अपने परिवार के सदस्यों के साथ वहाँ पर आयी। मुझे देखकर उसने

औपचारिकतावश नमस्कार किया मैंने भी उसे नमस्कार किया। मैंने उससे पूछा कि आप कैसी हैं? उसने यह कहते हुए कि वह ठीक है अपने परिवार के सदस्यों के मेरा परिचय करवाया। मैंने उन्हें अपने साथ ही बैठने का आमंत्रण दिया जिसे उन्होंने स्वीकार कर लिया। वार्तालाप के दौरान उसने अपने केस के बारे में मुझसे अपनी राय माँगी। मैंने उसकी बातें सुनकर उसे बताया कि इसमें आपकी जीतने की संभावना बहुत कम है उसके परिवारजनों ने भी मेरी बात से सहमति व्यक्त की और कहा कि यह व्यर्थ वकीलों पर रूपये खर्च कर रही है। उसका निवास ऐसे स्थान पर था जहाँ से मेरा रोज आना जाना होता था। उसने नर्सिंग का कोर्स किया था और उसके पिताजी की आर्मी में काफी पहचान थी। वे मुझसे चाहते थे कि राजनीति में मेरे परिवार के अच्छे संबंधों के कारण उनकी बेटी की कही नौकरी मिल जाए। उससे मुलाकात के दौरान ही मुझे महसूस हो गया था कि यह लड़की मुझसे दोस्ती बढ़ाने के लिए बहुत रूचि दिखा रही है। उसके पिताजी ने भी मुझे घर आने के लिए बार बार कहा था।

एक दिन मैं शाम के समय उनके घर पहुँच गया। मैंने बातचीत के दौरान नेहा को मेरे साथ बाहर डिनर पर चलने का आमंत्रण दिया। वह तुरंत तैयार हो गई और उनके परिजनों को भी कोई ऐतराज नहीं था। हम लोग एक रेस्टारेंट में थे वहाँ पर मैंने स्वयं के लिए विस्की आर्डर की और औपचारिकतावश उससे भी पूछा तो उसने तुरंत हाँ कह दिया उसने अपने लिए रम का आर्डर दिया और बेधड़क तीन चार पैग पीकर मेरे एकदम नजदीक आकर बोली कि तुम कितने हैंडसम हो तुम्हारे ऊपर तो ना जाने कितनी लड़कियाँ मरती होंगी तुम्हारे ऊपर मैं फिदा हूँ। आई लव यू डार्लिंग चलो कोई ऐसी जगह चले जहाँ सिर्फ तुम और मैं हो। मैं एक क्लब का मेंबर था और उसका मैनेजर मेरा बहुत ही अच्छा दोस्त था, मैंने उसे फोन किया तो उसने मेरे कहने से एक कमरा बुक कर दिया। मैं उसको लेकर वहाँ पहुँचा। कमरे में पहुँचते ही वह बेतहाशा प्यार करने लगी उसके इस पागलपन ने सभी मर्यादाओं को तोड़ दिया। मैं जब कमरे से

बाहर आया तो मेरे दो मित्रों को ना जाने कैसे इस बात की भनक हो गई थी। उन्होंने मुझसे निवेदन किया कि वे भी उसके साथ कुछ समय बिताना चाहते है। यह सुनकर मैंने कहा कि उससे पूछकर बताता हूँ और नेहा से जब मैंने बात की तो वह बोली की ठीक है भेज दो। इसके पश्चात मेरे दोनों मित्रों के साथ साथ मैनेजर ने भी बहती गंगा में हाथ धो लिया। मैंने क्लब बाहर जाते समय मैनेजर को उसे सुरक्षित घर छोडने के लिए कह दिया था। अगले दिन मैनेजर ने बताया कि उसे सुरक्षित घर पहुँचा दिया था परंतु उसके पहले उसने हमारे दो अन्य साथियों के साथ भी पूरी मौज मस्ती की। मुझे इस बात का आश्चर्य हो रहा था कि कोई लड़की इतने समय तक कैसे इस तरह के कार्य में लिप्त रह सकती हैं। क्या इसे कोई बीमारी तो नहीं ? मैंने इस बारे अपने क्लब में आने वाले एक डॉक्टर पूछा तो उसने मुझे बताया कि इस तरह की महिलायें निमफोमेनिया नामक बीमारी के शिकार होती है इसके कारण उन्हें सेक्स से संतुष्टि प्राप्त नहीं होती वे हरदम नये व्यक्ति की खोज में रहती है। यह सब जानने के पश्चात उस लड़की से मैंने अपना संपर्क समाप्त कर लिया। यह जानकर गौरव और राकेश भी आश्चर्यचकित हो गये कि ऐसी बीमारी के बारे में हमने पहली बार सुना है।

एक बार मैं दिल्ली गया था वहाँ मेरी पहचान एक लड़की रागिनी से हो गयी थी। अब में जब भी दिल्ली जाता था उससे मिलकर उसे अपने साथ पाँच सितारा होटल में शाम के भोजन के लिए ले जाता था और उसके उपरांत हम लोग वहाँ से डिस्कोथेक में चले जाते थे। मुझे वह स्वभाव से बहुत अच्छी व समझदार लगती थी एक बार मैं दिल्ली अपने मित्र हरीश के साथ गया। मैं उसको लेकर उसके फ्लैट पर समय व्यतीत करने चला गया। हरीश का स्वभाव लड़कियों से दूर रहने का था परंतु मेरी महिला मित्र को देखने का वह बहुत इच्छुक था। हम लोग वहाँ पहुँचकर रागिनी के बैठक खाने में बैठकर व्हिस्की पी रहे थे। कुछ समय के बाद वह मुझे लेकर अपने बेडरूम में चली गयी। मैं

एक घंटे के बाद निकलकर हरीश के साथ वापिस रवाना हो गया। हरीश ने मुझे रास्ते में कहा कि आनंद तुम यह किस खतरनाक लड़की के चक्कर में फंस गये हो। तुम्हारे कमरे में अदंर जाने के बाद दूसरे कमरे से एक लड़की और दो लड़के बाहर निकले तीनो के पास रिवाल्वर थे। यहाँ का वातावरण बहुत संदिग्ध था क्योंकि उनकी फोन पर जिनसे बातें हो रही थी उससे मुझे लगा कि ये लोग बहुत बडे अपराधी हैं और रागिनी का घर अवैधानिक गतिविधियों का केंद्र बिंदु है। यह तो तुम्हारी समझदारी है कि तुमने अपना वास्तिविक परिचय उन्हे नहीं दिया है अन्यथा अभी तक तुम किसी बहुत बडे चक्कर में फंस गये होते। तुम ऐसी लड़कियों से मित्रता तो छोडो, बहुत दूर रहा करो। तुम देखना यहाँ किसी ना किसी दिन बहुत बडी वारदात होगी। ऐसी खतरनाक जगहों पर हमें नहीं आना चाहिए। मैंने उसकी बात मानली और निश्चय कर लिया की अब कभी रागिनी के साथ कोई संपर्क नहीं रखूँगा। इसके पंद्रह दिन बाद ही मैंने टाइम्स ऑफ इंडिया में पढ़ा कि पुलिस एनकाउंटर में रागिनी और उसके सहयोगी को गोली मार दी गई। इसके तीन दिन बाद समाचार पत्रों से पता हुआ कि उस फ्लैट के मालिक की संदिग्ध परिस्थितियों में मुत्यु हो गई। हरीश ने मुझसे पूछा कि तुम्हारे कोई कागजात वगैरह तो वहाँ नहीं है। जिससे पता हो कि तुम भी उसके पास आते जाते थे। आनंद ने कहा कि इस मामले में मैं सतर्क था और मेरा विजिटिंग कार्ड भी उसके पास नहीं है। हरीश बोला देखो मैंने तुम्हें सही समय पर आगाह किया था और तुमने मेरी बात मानकर बहुत अच्छा काम किया। मैंने उसे धन्यवाद दिया कि तुमने मुझे बेकार के चक्कर में पडने से बचा लिया।

दिल्ली का एक दूसरा वृत्तांत तुम्हे बताता हूँ। मनोहर नाम का मेरा एक मित्र जो कि राजनीति में भी दखल रखता था मेरे साथ किसी काम से दिल्ली गया था। मैंने उसे अपने साथ ही होटल में रूकने का निवेदन किया। वह मान गया कि चलो इसी बहाने हम साथ साथ रहेंगें। दिल्ली पहुँच कर हम लोग एक होटल में

रूके। हम दोनों का शाम तक काम समाप्त हो गया था और हम लोग रूम में वापिस आ गये थे। उसी समय मेरे एक मित्र जिनकी राजनीति में बहुत पैठ थी ने मुझे बुलाया। मैंने मनोहर से कहा कि मेरा इंतजार करना मैं अपने एक मित्र से मिलकर आ रहा हूँ। वहाँ पर मुझे काफी समय लग गया और रात के दस बजे मुझे मनोहर का फोन आया कि अपने रूम की जाँच पडताल के लिए पुलिस बाहर बैठी है। मैं आश्चर्य में रह गया और तुरंत मित्र से विदा लेकर वापिस अपनी होटल पहुँचा काउंटर पर मैनेजर ने पुलिस आफीसर को बताया कि इन्ही के नाम पर रूम आवंटित है। मैं उनके साथ उपर गया और घंटी दी तभी मनोहर ने दरवाजा खोला उस ऑफीसर ने हमारे कमरे के चप्पे चप्पे की जाँच की और पूछने लगा कि वह औरत कहाँ है जिसके साथ आप यहाँ रूके थे। मैंने नाराज होकर उससे कहा कि कौन औरत, कैसी औरत, कोई औरत मेरे कमरे में नहीं रूकी और ना आयी है। आप को कोई गलतफहमी हुई है। उसने कहा कि रजिस्टर पर मि. एंड मिसेज लिखा हुआ है। मैंने कहा कि मैंने रजिस्टर भरते समय कमरे में दे व्यस्क लिखा था। आप रजिस्टर बुलाइये और चेक कीजिए। उसने काउंटर से रजिस्टर बुलाया मेरा कहना सही था कि दो व्यस्क के आगे मेरे दस्तखत थे और किसी ने मि. एंड मिसेज उस पर लिख दिया था। उसके द्वारा पूछताछ करने पर पाया गया कि यह गलती सुबह के ड्यूटी स्टाफ की थी। अब तो होटल मैनेजमेंट अपने बचाव के लिए मुझसे माफी माँगने लगे और वह ऑफीसर भी खिसक लिया।

उनके जाने के बाद मनोहर ने मुझे बताया कि पिछले दो घंटे से हर घंटे एक लड़की आकर साहब कुछ चाहिए क्या, पूछकर चली जाती थी। मुझे पता हुआ कि उसी ने पुलिस को फोन किया था। इस संदेह पर कि कमरे में कोई लड़की है और इस कारण ये लोग मुझे भगा देते है। मैंने मनोहर से कहा कि इस वारदात के बाद हमें यहाँ नहीं रूकना चाहिए क्या पता हमारे साथ क्या दुघर्टना घटित हो जाये। अतः हम तुरंत दूसरी होटल में चले गये। लिफ्ट में हम दोनों

ने अपने कमरे में जाने के लिए प्रवेश किया। उसमें दो रशियन लड़कियाँ भी अपने कमरे में जाने के लिए खडी हुई थी। हमने उन्हें हैलो कहा और उनसे पूछा कि आप को किस मंजिल पर जाना है। हम सभी को चौथी मंजिल पर ही जाना था। मैंने उन्हें ड्रिंक्स के लिए आमंत्रित किया। वे बडे खुले विचारों की जिंदादिल लड़कियाँ थी और उन्होंने हमारे अनुरोध को स्वीकार कर लिया और दस पंद्रह मिनिट के बाद दोनों मेरे कमरे में आ गई। उन रशियन लड़कियों के नाम irinaaleksanvravh और swetlanatango थे। हम लोग विभिन्न विषयों चर्चा करते हुए व्हिस्की की चुस्की लेने लगे। मेरे और मनोहर के दिमाग का तनाव समाप्त हो गया था। उन लड़कियों ने धीरे धीरे सेक्स के विषय में बातें करनी प्रारंभ कर दी। वे बोली कि वे भारत घूमने आयी है। इसके बाद धीरे धीरे बातों ही बातों हम लोग एक दूसरे से काफी खुल गये और पूरी रात हम लोगों ने आनंद में बितायी। सुबह मैंने उनसे पूछा कि हम आप के लिए क्या सकते हैं ? उन्होंने कहा कि कुछ नही। आपने हमें व्हिस्की पिलायी, सेक्स का आनंद दिया। ये दो वोदका की बोतल हमारी तरफ से आप गिफ्ट रखिये। हमने उन्हें धन्यवाद दिया और फिर मिलेंगे कहकर एयरपोर्ट की तरफ रवाना हो गये। गौरव यह सुनकर कहता है कि तुम भाग्य के बहुत धनी हो। ऐसा लगता है जैसे अच्छे मौके तुम अपनी किस्मत में लिखा कर लाये हो।

उसी समय मानसी और राकेश केबिन में आते हैं । मानसी उन्हें नाश्ता करने का आग्रह करती हैं। वह कहती है कि आप नाश्ता मत बुलाइये मेरी मौसी ने मेरे साथ बहुत सारा खाने का सामान दिया है। नाश्ते के उपरांत मानसी आराम करने के लिए वापिस अपने केबिन में चली जाती है। गौरव और आनंद, राकेश को देखकर कहते है कि आज तुम्हारे चेहरे पर प्रसन्नता नजर नहीं आ रही है। मानसी ने तुम्हें कुछ कह तो नहीं दिया। राकेश कहता है कि ऐसी कोई बात नहीं है। मैं थका हुआ हूँ और अभी सोकर उठा हूँ इसलिए तुम्हें ऐसा लग रहा होगा।

अब गौरव आनंद से कहता है कि यह बताओ आध्यात्मिक, धार्मिक, सामाजिक और व्यवहारिक दृष्टिकोण में हमने जो कुछ भी किया है क्या वह पाप की श्रेणी में नहीं आता ? हमारे धर्मग्रंथ एक पत्नी के सिद्धांत को प्रतिपादित करते है यदि हम गलत काम कर रहे हैं तो हमें ऐसे कर्मों का फल भी भोगना पड़ेगा। इस बारे में तुम्हारे क्या विचार है। आनंद कहता है कि इसमें क्या पाप है। हम किसी के साथ बलात्कार या झूठ बोलकर उसे झूठा आश्वासन देकर तो रात नहीं बिता रहे हैं। लड़कियाँ स्वेच्छा से आती है हम इनकी माँग रूपये के रूप में पूर्ति कर देते हैं और वे खुशी खुशी चली जाती है। हमारे देश में प्राचीन काल में बहुपत्नी प्रथा थी यह तो स्वतंत्रता के बाद तत्कालीन सरकार ने नियम बनाकर इसे समाप्त कर दिया। इसलिये हमें एक पत्नी के साथ ही जीवन यापन करना पड़ता है। मुस्लिम कानून में आज भी चार पत्नियों को रखने की प्रथा है। एक ही देश में दो अलग अलग धर्मों के व्यक्तियों के लिए अलग अलग कानून क्यों ? हमारे धर्म में इस बारे में ऐसी कोई रोक नहीं है यह तो सामाजिक बंधन के अंतर्गत एक पत्नी प्रथा लागू की गयी। राकेश भी अपनी सहमति दर्शाता है। आनंद गौरव से कहता है कि अपने जीवन की घटनाओं से कुछ हमारे भी ज्ञान में वृद्धि करो।

राकेश कहता है मैं तुम्हें ऐसा संस्मरण बताता हूँ जो तुम आज का समाज किस दिशा में जा रहा है यह जानकर आश्चर्यचकित रह जाओगे। वह बताता है ईशिता नाम की एक विवाहित लड़की से मेरा परिचय एक कॉलेज में प्रवेश दिलाने के संबंध में हुआ था। मैंने प्रबंधक से निवेदन करके प्रबंधन कोटे से उसका एडमिशन करा दिया। उसका परिवार इससे काफी उपकृत महसूस कर रहा था और उसके पति ने एक दिन मुझे खाने पर आमंत्रित किया। मैं जब उसके घर पहुँचा तो ईशिता को देखकर दंग रह गया। वह गजब की सुंदर और आकर्षक लग रही थी। उसका पति मुझसे आधे घंटे में आने का कहकर अपने काम से कही चला गया। अब हम दोनों अकेले ही थे। उसने बडे प्रेम पूर्वक मुझे

भोजन कराया। अब हम लोग प्रायः मिलने लगे और हम लोग के बीच अंतरंग संबंध बन गये। उसके पति को भी इन संबंधों पर कोई एतराज नहीं था। एकदिन मेरे परिवार के सभी लोग तीन दिन के लिए बाहर गये हुए थे। मैंने उसे अपने घर में ही रात में बुला लिया। उसका पति रात में छोड जाता था और उसे सुबह वापिस ले जाता था। उसने मुझे इस दौरान बताया कि उसका एक प्रेमी भी है और वह बोली कि मैं आपको धोखे में नहीं रखना चाहती इसलिये यह बात बता रही हूँ। मेरे कहने पर उसने अपने प्रेमी के साथ सब संबंध तोड लिए। इससे मुझे उसके उपर विश्वास हो गया था। एकदिन वह मेरे साथ मुंबई गई वहाँ पर हम लोग रात में व्हिस्की पीकर मौज मस्ती कर रहे थे। रात में 12 बजे के लगभग हम लोग एक मॉल के रेस्टारेंट में खाना खाने गये। वहाँ जाने तक वह पाँच छः पैग व्हिस्की पी चुकी थी। वहाँ पहुँचने पर उसने अचानक मेरी कॉलर पकडकर दीवार से सटा दिया और बोली सुनो राकेश मुझे तुमसे कोई प्यार व्यार नहीं है तुम इस चक्कर में मत रहना कि मैं तुम्हें चाहती हूँ मुझे केवल तुम्हारे धन से मतलब है जिससे मेरा परिवार आत्मनिर्भर हो सके। मेरे पास धन आने के बाद मैं तुम्हें छोड़ दूँगी और मेरा पति भी तुम्हें मुझसे नहीं मिलने देगा यह बात सुनकर मैं चौंक गया और मेरा शराब का सारा नशा उतर गया। मैंने उसे खाना खिलाया और वापिस होटल आकर चुपचाप सो गया और वापिस अपने गृहनगर लौटने के बाद मैंने उससे अपने संपर्क समाप्त कर लिये।

गौरव कहता है कि मैं तुमको अपने जीवन की एक और ऐसी घटना बताता हूँ। यह बात आज से दो साल पहले की है जब मैं किसी काम से कलकत्ता गया हुआ था और वापिस गृहनगर आ रहा था। मेरा टिकिट ए.सी फर्स्ट का था और मैं समय पर स्टेशन पहुँच कर ट्रेन में अपनी बर्थ पर जाकर बैठ गया। ट्रेन रवाना होने के कुछ मिनिट पहले ही एक सज्जन मेरे कोच में आये, उनके साथ शराब की विभिन्न ब्रांडों की बोतले थी। उन्होने वे सब बोतले निकालकर सामने

सजा दी तभी ट्रेन रवाना हो गई। उन्होने एक बोतल खोली और सबको पीने के लिए आमंत्रित किया। मेरे साथ के दो सहयात्रीयों ने पीने से मना कर दिया। अब वह मेरे बहुत पीछे पड़ गया कि आपको मेरा साथ देना होगा। उसके बहुत आग्रह पर मैंने एक पैग ले लिया और धीरे धीरे पीने लगा। उस यात्री का व्यवहार मुझे बड़ा अजीब लग रहा था। वह कभी अपने को उद्योगपति, कभी आर्मी का मेजर जनरल और कभी राजनैतिक पार्टी का नेता बताता था। उसी समय कोच अटेंडेट रात के डिनर के लिए पूछने आया। उससे वह अंटसंट बात करने लगा जिससे मैं समझ गया कि यह व्यक्ति ठीक नहीं है। इसके बाद सीधे उसने पूछा कि बगल के कंपार्टमेंट में जो दो लड़कियाँ बैठी है वो कौन है ? और वहाँ पर दो बर्थ खाली है, मुझे वहाँ शिफ्ट कर दो। यह सुनकर अटेंडेट ने टिकिट चेकर का जाकर सब बातें बतायी और पीछे पीछे वह यात्री भी आ गया। टिकिट चेकर ने कहा उस कंपार्टमेंट में बर्धमान स्टेशन से दो यात्रियों को आना है अतः वह बर्थ नहीं दी जा सकती।

यह सुनकर वह एकदम गुस्सा हो गया और वापिस अपने कंपार्टमेंट में आकर उसने अपना बैग खोलकर रिवाल्वर निकाल ली। यह देखकर मेरे दोनों सहयात्रियों ने उसको रोकने का प्रयास किया। उसने आव देखा ना ताव, तड़ाक से दोनों को रिवाल्वर से गोली मार दी। उनकी आपस में बातचीत के दौरान मैं दरवाजा खोलकर भागकर एसी टू में चला गया। पूरे एसी फर्स्ट कोच में हडकंप मच गया था और अटेंडेंट एवं टिकिट चेकर ने उन दोनों लड़कियों को तुरंत वहाँ से हटाकर दूसरे कोच में शिफ्ट कर दिया। उसी समय ट्रेन बर्धमान स्टेशन पर रूक गयी। ट्रेन के रूकते ही मैं स्टेशन पर नीचे उतर गया और मैंने देखा कि उन दोनों लड़कियों को भी अटेंडेंट ने उतारकर तेजी से अपने साथ कही ले गया और पलक झपकते ही वे लोग मेरी नजरों से ओझल हो गये। इस बीच पुलिस ने उस यात्री को पकडकर अपनी हिरासत में ले लिया और दोनों घायल यात्रियों को एंबुलेंस से अस्पताल भिजवा दिया। मैंने वापिस आकर अटेंडेंट से पूछा कि

यह क्या मामला था ? उसने बताया कि ये दो लड़कियाँ कोलकाता की मशहूर कॉलगर्ल्स हैं और आपके दोनों सहयात्री इन्हें लेकर आये थे और उनका आरक्षण बर्धमान से था इसलिये वो आपके कोच में बैठ गये थे ताकि किसी को पता ना लगे कि ये उनके साथ है। यह बहुत ही खतरनाक वारदात हो गई है इसलिये वो दोनों लड़कियाँ भाग गईं। आप अपना सामान उठाकर किसी दूसरी ट्रेन से आगे निकल जाये अन्यथा यहाँ पर बेकार पुलिस की पूछताछ में आपको उलझा दिया जायेगा। मैं उसके सुझाव के अनुसार अपना बैग लेकर उतर गया और एक घंटे के बाद दूसरी ट्रेन से रवाना हो गया। मैं रास्ते में सोच रहा था कि इस प्रकार की लड़कियों को ट्रेन में ले जाना कितना खतरनाक हो सकता है। गौरव ने आनंद से कहा कि हमें यात्रा के दौरान भी इस तरह की गतिविधियों में सतर्क रहना चाहिए। ना जाने कब कैसी दुघर्टना घट सकती है। आनंद ने पूछा कि एक बात तो बताओ कि वे लड़कियाँ कैसी थी, गौरव ने कहा कि बहुत सुंदर थी।

गौरव ने आंनद से पूछा कि कहो तो एक और मजेदार घटना बता सकता हूँ। आनंद बोला जल्दी बताओ परंतु घटना ऐसी होनी चाहिए जिसमें हास्य और रोमांच दोनों हों। गौरव ने कहा कि बताता हूँ।

यह बात पिछले साल की है मेरे घर पर एक बहुत सुंदर महिला आयी उसने अपना नाम नंदिता बताया, उसे देखकर मैंने अपनी माँ को कहा कि आपसे कोई मिलने आया है। माँ आयी और उन्होंने बताया कि इसे खाना बनाने के लिए रखा गया हैं। मैं उसे देखकर दंग रह गया। उसके द्वारा बनाया गया भोजन भी बहुत स्वादिष्ट था। मैं उसकी तारीफ किये बिना नहीं रह सका। अपनी तारीफ सुनकर वह मुस्कुरा दी और मुझे धन्यवाद कहकर चली गई। यह प्रायः प्रतिदिन का क्रम हो गया था। वह जब भी किचिन में अकेले काम कर रही होती थी मैं मौका निकालकर किसी ना किसी बहाने से वहाँ जाकर उससे बात करता रहता था। कुछ दिनों में ही उसके हाव भाव से मैं समझ गया कि वह भी मेरी ओर आकर्षित है। एक दिन मैंने हिम्मत करके उसे बाहर मिलने के लिये कह ही

दिया जिसे उसने स्वीकार कर लिया। मैं उससे जब मिला तो उसने सुझाव दिया कि हम दे तीन दिन के लिए पचमढ़ी चलते है। मेरे साथ मेरी बुआ भी रहेगी परंतु उनसे कोई परेशानी नहीं होगी। मैं भी अपने साथ एक मित्र महेश को लेकर पचमढी चला गया। वहाँ पर हम लोगों ने दो कमरे आसपास ले लिये। शाम को भोजन के उपरांत उसकी बुआ आराम करने अपने कमरे में चली गई और नंदिता, महेश और मैं एक ही कमरे में गपशप करने लगे। नंदिता मेरे पास बैठ गयी और कुछ देर बाद मुझे बिस्तर पर ले जाकर प्यार करने लगी। मैं भी उसके साथ मजा लेने लगा। मेरे दिमाग से यह बात एकदम निकल गयी थी कि महेश भी वहाँ बैठा हम लोगों को देख रहा है। वह भी चुपचाप बैठकर आनंद ले रहा था और कुछ देर बाद वह दूसरे कमरे में जिसमें नंदिता की बुआ थी चला गया। दूसरे दिन सुबह उसकी बुआ हमारे कमरे में आकर हल्ला मचाने लगी कि आपके दोस्त ने आकर मुझे रातभर परेशान किया। आप इसे तुरंत वापिस भेजिए या फिर मैं नंदिता को लेकर अभी वापिस जा रही हूँ। नंदिता ने पूछा कि आखिर हुआ क्या है तभी महेश भी आ गया और उसने बुआ की बात सुनकर बोला कि रातभर तो मजा लेती रही अब सुबह हल्ला मचा रही है। इसके आगे अगर कुछ भी कहा तो मैं रात की सारी बात सच सच बता दूँगा। यह सुनकर बुआ भी चुप हो गई और वापिस जाने का प्रोग्राम कैंसिल कर दिया। पचमढ़ी के रमणीक वातावरण में शाम का समय बहुत ही मनोहारी एवं हृदय को प्रसन्न कर देने वाला था। ऐसे मौसम में गौरव जो कि एक अच्छा गिटारवादक भी था अपनी धुन से सबको मंत्रमुग्ध कर देता था और उनकी शाम एक यादगार के रूप में हो जाती थी। नंदिता की बुआ ने शाम को स्वीकार किया कि उसका अपने पति के साथ संबंध विच्छेद हो चुका है। उसे महेश के साथ मिलकर असीम प्रसन्नता का अनुभव हुआ और यह उसके लिए अविस्मरणीय क्षण रहे। इस प्रकार दो तीन दिन हम लोग मौज मस्ती करके वापिस आ गये। आनंद

बोला कि यार तुम बहुत उस्ताद हो। तुम अपने जीवन का भरपूर आनंद उठा रहे हो। यह सुनकर राकेश भी मुस्कुराने लगा।

गौरव कहता है कि अभी तीन चार घंटे का समय और बाकी है तब तक हम आपस में एक दूसरे के अनुभव बता कर अपना समय व्यतीत करें। मानसी भी आराम करने चली गयी है यदि वह आ गई तो हमको अपनी बातें वही खत्म करनी पडेंगीं। आनंद गौरव से कहता है कि आज तुम बडे मूड में हो तुम्ही अपने जीवन के संस्मरण बताओ। गौरव कहता है मैंने मुंबई में जितने अच्छे दिन बिताए और अच्छी लड़कियों के संपर्क में आया वह मेरे लिए अविस्मरणीय है। एक लड़की जिसका नाम उज्जवला था। वह फिल्मों में छोटे मोटे रोल करती थी और सेक्स उसका शौक था धनोपार्जन का माध्यम नही। मेरी उससे मुलाकात एक फिल्म निर्माता के यहाँ हुई थी उन्होंने मेरा परिचय कराते हुए उसे बताया था कि मैं एक बहुत बड़ा फिल्म फाइनेंसर हूँ और कुछ दिनों के लिए इसी संबंध में बंबई आया हूँ। यह सुनकर वह बोली कि सर आप आज शाम को आप क्या कर रहे है? मैंने कहा कि मैं शाम 7 बजे के बाद उपलब्ध हूँ। उज्जवला बोली कि यदि आप आज शाम को मेरे साथ रात्रि भोज लें तो मुझे बडी खुशी होगी। मैंने उसे अपनी सहमति दे दी और वह होटल सीसाइड, जहाँ में रूका हुआ था मुझे लेने के लिए आ जाती है और मुझे अपने फ्लैट में ले जाती है। फ्लैट छोटा किंतु बहुत व्यवस्थित एवं सुंदर था। वहाँ पहुँचने पर वह मुझे रेड वाइन पीने के लिए देती है और खुद भी अपना पैग बनाकर मेरे समीप बैठ जाती है। वाइन पीते पीते वह निवेदन करती है कि जिस निर्माता के फिल्म में वह काम कर रही है आप उनके अच्छे मित्र हैं आप उन्हें कहकर मेरा रोल बढ़वा दीजिए। मैं आपकी बहुत आभारी रहूँगी। मैंने उसके सामने ही फोन करके प्रोडक्शन मैनेजर को अनुरोध किया कि उज्जवला का रोल बढ़ा दिया जाए। उसने मुझे आश्वस्त किया कि पटकथा को देखते हुए जितना संभव होगा मैं अपना प्रयास करूँगा। यह सुनकर उज्जवला खुशी से प्रसन्न हो गयी। मैंने

उसका हाथ अपने हाथ में लेकर कहा कि और भी कोई काम हो तो बताओ। यह सुनकर वह मुझे खीचती अपने बेडरूम में ले गई और कहा कि अब दूसरा काम तो तुम समझ ही गये होगे। हम लोग रातभर जीवन का स्वर्णिम आनंद लेते रहे।

मेरा एक मित्र गोविंद जो कि बहुत सीधा सादा और सरल स्वभाव का व्यक्ति था एवं एक बहुत बडे उद्योग समूह का मालिक था। दूसरे दिन उससे मुंबई में उससे मुलाकात हो गई। शाम को वह मेरे होटल में आया और बातचीत के दौरान वह बोला कि मैंने आजतक अपनी पत्नी के अलावा किसी दूसरी महिला को छुआ भी नहीं है। मेरे दिल की बहुत तमन्ना है किसी और के साथ भी समय बिता कर देखूँ कि कैसा महसूस होता है। मेरा यहाँ किसी से संपर्क नहीं है। तुम यदि किसी को बूला सकते हो तो रूपये की कोई बात नहीं है। मैंने फिल्म के प्रोडक्शन मैनेजर को फोन किया और इस संबंध में मदद माँगी। उन्हेंने दो घंटे के लिए एक लड़की जिसका नाम प्रीनी था, को भिजवा दिया। वह जब कमरे में आई तो उसे देखकर हम लोग दंग रह गये कि इतनी सुंदर महिला भी उपलब्ध हो सकती है। उसने हमारे पास बैठकर गोविंद से आंख से आंख मिलाकर कहा कि आप दोनों बहुत अच्छे व्यक्ति हैं। हमने पूछा कि तुम कैसे कह रही हो। वह बोली कि मुझे इतना अनुभव है कि मैं दरवाजा खोलने पर चेहरा देखकर भांप सकती हूँ कि कौन कैसा है? गोविंद तो उसे देखकर पागल हुआ जा रहा था। उसने तुरंत रूपये निकालकर प्रीनी को दे दिये। प्रीनी ने रूपये नहीं लिये और कहा कि पहले सेवा बाद में मेवा। मुझे देखकर उसने कहा कि हुजुर आप क्या करेंगें। मैंने कहा कि मैं बाहर जा रहा हूँ आप लोग अपना समय अच्छे से व्यतीत करे। गोविंद उसी के सामने बोला कि यह मेरा किसी दूसरी महिला के साथ पहला अवसर है और गौरव तुम होटल के बाहर कही मत जाना। मैं एक घंटे के बाद वापस रूम में गया तब तक प्रीनी जा चुकी थी और गोविंद असीम संतुष्टि के साथ बहुत प्रसन्न नजर आ रहा था। उसने मुझे

धन्यवाद दिया और मुझे शाम को एक अच्छे रेस्टारेंट में खाना खिलाने के लिए ले गया।

मैं अपनी व्यापारिक यात्राओं अपने कार्य के संबंध में पांच छः लड़कियों से अलग अलग स्थानों पर मिलता रहा। उनसे बातचीत के दौरान महसूस हुआ कि महिलाएँ वेश्यागमन की प्रवत्ति को बहुत हीन दृष्टिकोण से देखती है उनकी आम राय यह थी कि यह आदत बहुत बुरी होती है और अमीर को फकीर कर देती है। घर के वातावरण में तनाव पैदा करके सुख, समृद्धि और वैभव को छीन लेती है।

गौरव अब एक और घटना सुनाता है। मेरी परिचित नंदिता की एक सहेली हेमा कक्षा बारहवीं में पढ़ती थी। एक दिन नंदिता ने उससे मिलवाया और उसको कहा कि यह बहुत अच्छे व्यक्ति है तुम इनसे जान पहचान रखो तो तुम्हारे वक्त जरूरत पर मदद करते रहेंगें। हेमा यह सुनकर बहुत खुश हुई और हम तीनों साथ साथ फिल्म देखने चले गये इसके बाद बाहर रात्रिभोज लेकर सभी विदा हो गये। इतने समय में मैंने हेमा से काफी बातचीत की और वह भी मुझसे खुलकर बातचीत करती रही।

इसके बाद वह कभी कभी मेरे फोन करने पर आ जाती थी। उसे मैं बाजार से कपड़े, सौंदर्य सामग्री, पढाई की पुस्तके आदि दिला दिया करता था। एक दिन उसने मुझसे फिल्मों में अभिनय करने की इच्छा जाहिर की और कहा कि नंदिता ने बताया कि आपकी फिल्म इंडस्ट्री में बहुत जान पहचान है। मैंने कहा कि उसके लिए तुम्हें मेरे साथ मुंबई चलना होगा। उसने अपने माता पिता से मेरी मुलाकात करवायी और वे भी चाहते थे कि इसे फिल्मों में कोई रोल मिल जाए तो नाम के साथ साथ रूपया भी आने लगेगा। उन्होंने उसे मुंबई ले जाने की अनुमति दे दी। एक दिन वह नंदिता को अपने साथ लेकर आयी और बातचीत के दौरान मैंने उसे बताया कि हेमा मेरे साथ कल मुंबई जा रही है।

उसने हेमा से कहा कि फिल्म इंडस्ट्री में प्रवेश तो ये दिला देंगे परंतु आगे का रास्ता तुम्हे खुद ही बनाना होगा। हम सभी जानते हैं वहाँ पर कितने समझौते करने होते है। क्या तुम इसके लिए तैयार हो ? हेमा बात समझ जाती है और कहती है कि मैं आगे बढ़ने के लिए सबकुछ करने तैयार हूँ। अगले दिन हम दोनों मुंबई के लिए रवाना हो जाते है। वहाँ पहुँचकर मुंबई की चकाचौंध देखकर वह भौचक्की रह जाती हैं। हम लोग एक पाँच सितारा होटल में रूके थे। अगले दिन मैंने उसे एक फिल्म निर्माता से मिलवाया। उसने उसका ऑडीशन लेने के लिए दो दिन बाद का समय दिया। शाम को हम लोग अपने कमरे में ही बैठे हूये थे मैंने उसे रेड वाइन पीने के लिए कहा तो वह तैयार हो गई। हम लोग वाइन खत्म करके होटल के डिस्कोथेक में चले गये वहाँ पर हम दोने बहुत नजदीक आकर नृत्य करते रहे। थोडी देर बाद हेमा मुझे खीचती हुई कमरे में ले गई और मेरे साथ आलिंगनबद्ध होकर कहने लगी कि मुझे किसी भी तरह से फिल्म में चांस दिलवा दो। तुम जो कहोगे मैं वो करने के लिए तैयार हूँ। मैंने भी उसे अपनी बांहों में जकडते हुए हाँ कह दिया। सारी रात ऐसे असीम आनंद में बीती जिसे मैं शब्दों में नहीं बता सकता। अगले दिन उसका ऑडीशन था जिसमें वह असफल हो गई। फिल्म निर्माता ने उसे बता दिया कि वह और मेहनत करे तथा प्रशिक्षण के उपरांत कुछ समय बाद फिर संपर्क करें। यह सुनकर उसका चेहरा उतर गया और तुरंत वापिस जाने की जिद करने लगी। अब उसका व्यवहार मेरे प्रति बदल चुका था वह मुझे दोषी समझ रही थी कि मैंने उसे फिल्म में मौका नहीं दिलवाया। मैंने उसे बहुत समझाया कि मेरा काम सिर्फ तुम्हे अवसर दिलाना था आगे मेहनत से बढना तुम्हारा काम था जिसमें तुम असफल रही। तुम अपना दिल छोटा मत करो और लगन से मेहनत करके पुनः कोशिश करो। अगले दिन ही हम दोनों वापिस अपने गृहनगर के लिए रवाना हो गये।

गौरव आनंद से कहता है कि मेरी दास्तान तो तुम बड़े ध्यान से सुन रहे हो कुछ अपनी भी ऐसी बातें बताओ जो हमारे लिए प्रेरणास्पद हो। आनंद कहता है मैं तुम्हें ऐसा वृतांत बता रहा हूँ जिसे तुम जीवनभर याद रखोगे। मेरा एक दोस्त जिसका नाम महेश था जो कि अब दुबई में है। हम लोग बहुत अच्छे मित्र थे। एक दिन हम लोग एक प्रदर्शनी में घूम रहे थे तभी हमारी नजर वहाँ पर खरीददारी कर रही बहुत सुंदर दो लड़कियों पर पड़ी। हम लोग भी उस दुकान में खरीददारी के लिए पहुँच गये। उन लड़कियों ने जितना रू. का सामान खरीदा था उसके भुगतान में पाँच सौ रू. के लगभग कम पड़ रहे थे। उन्होने दुकानदार से कहा कि हम सामान यही रख देते हैं और थोडी देर से आपको पाँच सौ रूपये लाकर दे देते है। वह दुकानदार मेरी पहचान का था मैंने उससे कहा कि तुम सामान इन्हें ले जाने दो, तुम चाहो तो मुझसे रू. ले लो। दुकानदार ने मुझसे कहा कि आप हमारे पुराने परिचित है, आप कह रहे हैं तो मैं इन्हें सामान ले जाने दे देता हूँ। इसके बाद उन लड़कियों ने मुझे धन्यवाद कहा।

दुकान के बाहर निकलने पर मैंने उन लड़कियों से कहा कि आगे प्रदर्शनी में मेरा एक परिचित मित्र स्केच बना रहा है आप चाहे तो अपना स्केच भी उससे बनवा सकती हैं इसके लिए आपको कोई शुल्क नहीं देना होगा। वे आपस में बातचीत करके मेरे साथ चलने तैयार हो गई। मैं उन्हें उस दुकान पर ले गया जहाँ स्केच बन रहे थे। मेरे मित्र ने उन्हें थोडी देर बैठने के लिए कहा। उसी दौरान मैने चाय के लिए आर्डर कर दिया। उन लड़कियों से अब मेरा वार्तालाप शुरू हो चुका था, उनके नाम आदया और दर्शिता थे। स्केच बनने तक हमारे में बीच काफी बातें हो चुकी थी। वे दोनों लड़कियाँ हॉस्टल में रहकर पढाई कर रही थी। इस मुलाकात के बाद हम लोग प्रायः मिलने लगे और कुछ समय पश्चात हमारी मित्रता इतनी घनिष्ठ हो गई कि वे अंतरंग संबंध बनाने के लिए भी तैयार हो गई। एक दिन महेश, आदया, दर्शिता और मैं हमारे गेस्ट हाउस में आनंद कर रहे थे तभी अचानक महेश भागा भागा बाहर निकला उसके पेंट पर

काफी खून लगा हुआ था और वह दर्द से कराह रहा था मैं तुरंत उसे लेकर अपने डॉक्टर मित्र के अस्पताल ले गया। जहाँ पर उसने बताया कि इसकी तुरंत शल्य क्रिया करनी पडेगी क्योंकि कॉपर टी के गलत लगे होने के कारण यह दुर्घटना हुयी है। महेश को शल्य क्रिया के पश्चात दो दिन अस्पताल में रहना पडा और मुझे उसके घर पर झूठ बोलना पडा कि वह मेरे साथ बाहर जा रहा है। अस्पताल से छुट्टी के बाद डॉक्टर ने महेश को समझाईश दी कि संबंध बनाते समय कॉपर टी बारे में हमें जान लेना चाहिए। यह तो अच्छा हुआ कि तुम समय पर अस्पताल पहुँच गये अन्यथा तुम्हारी मृत्यु भी हो सकती थी। यह सुनकर राकेश और गौरव सकते में आ जाते हैं कि ऐसा तो ना हमने कभी सुना, ना हमें इस बारे में कोई ज्ञान था। अच्छा हुआ तुमने यह बात बताई अब हम भविष्य में सावधान रहेंगें।

अब आनंद और गौरव, राकेश से कहते हैं कि आप भी कुछ कहिए। राकेश कहता है कि एक बहुत मजेदार बात तुम लोगों को बताता हूँ। यह बात आज से लगभग दो वर्ष पूर्व की है। जब मेरी दिल्ली में अचानक ही मेरे मित्र जितेन्द्र से कनॉट प्लेस में मुलाकात हुई। उसने बताया कि वह सुप्रीम कोर्ट में केस के संबंध में वरिष्ठ अधिवक्ता कपूर साहब को साथ में लेकर आया है। उसने मुझे शाम को होटल ताज में मिलने के लिए बुलाया। मेरे वहाँ पहुँचने पर उसने मुझसे कहा कि आज मुझे कोई काम नहीं है, अगर तुम किसी लड़की को जानते हो तो बुला लो बढ़िया समय व्यतीत हो जायेगा और कपूर साहब भी खुश हो जायेंगें। मैंने एक लड़की से बात की और उसने आधे घंटे बाद आने के लिए कहा। इस दौरान हम दोनों व्हिस्की पीने लगे। वह लड़की अपने नियत समय पर सीधे हमारे कमरे में आ गई और अपना परिचय देते हुए उसने अपना नाम वामा बताया। वह पूछने लगी कि क्या ये होटल सुरक्षित है ? हम लोग बात कर ही रहे थे कि नीचे से बेल कैप्टन जो कि जितेन्द्र का अच्छा परिचित था का फोन आया कि सिक्योरिटी पुलिस आप के रूम आने वाली है आप उस लड़की

को तुरंत बाहर कर दीजिए। यह सुनकर वह लड़की बहुत घबरा गयी और बोली कि मैं होटल में कही भी जाऊँगी तो पकडी जा सकती हूँ। उसी समय मेरे दिमाग में एक विचार आया और मैंने जितेन्द्र को कहा कि इस लड़की को तुरंत ही वकील साहब के कमरे में भिजवा दो। जितेन्द्र ने बिना देर किए वकील साहब का कमरा खुलवाकर उन्हें यह कहा कि आपके लिए इंतजाम कर दिया है और लड़की को तुरंत अंदर करके दरवाजा बंद कर दिया और वापिस अपने कमरे में आ गया।

थोडी देर पश्चात ही हमारे कमरे में पुलिस आ गई और हमारे कमरे की तलाशी लेने लगी। जब उन्हें कमरे कुछ भी नजर नहीं आया तो वे माफी माँगते हुए बाहर चले गये और वकील साहब के कमरे पर दस्तक देने लगे। यह देखकर हम लोग सन्न रह गये कि अब पता नहीं क्या होगा। दरवाजा खुलने पर वकील साहब के कमरे में लड़की पायी गयी। पुलिस को देखकर वकील साहब की घिग्गी बंध गयी और उन्होंने सब कुछ सच सच बता दिया। सारी बात जानने के पश्चात पुलिस हमारे पास आयी तो हम लोगों ने दो टूक शब्दों में कह दिया हम लोगों को इस बारे में कोई जानकारी नहीं है वकील साहब पकड़े जाने के भय से हमारा नाम ले रहे है। अब पुलिस वकील साहब को पकडकर ले जाने लगी तभी जितेन्द्र ने ड्यूटी मैनेजर जो कि उसकी पहचान का था उसे फोन करके कहा कि इस मामले को किसी भी तरह रफा दफा करवाओ। यदि यह मामला बढ गया तो बड़ी परेशानी खडी हो जायेगी। यह सुनकर मैनेजर तुरंत उपर आया और पुलिस इंस्पेक्टर से अकेले में बातचीत करने लगा। थोडी देर पश्चात मैनेजर ने कहा कि आप इन्हें पचास हजार रू. दे दीजिए। यह सुनकर जितेन्द्र ने तुरंत पचास हजार रू. देकर मामला खत्म कराया और उस लड़की को वहाँ से जाने के लिए कह दिया।

अब वकील साहब जितेन्द्र के उपर बहुत भड़क गये और बोले कि आज तक मेरे साथ ऐसी घटना नहीं हुई तुमने तो अपनी मुसीबत मेरे सिर पर डालकर मुझे

फँसा ही दिया था। मैं अब तुम्हारा केस नहीं लडूँगा और मैं इसी समय वापिस जा रहा हूँ। आज के बाद अब तुम कभी मुझसे मत मिलना। यह सुनकर जितेन्द्र और मैं वकील साहब को मनाने लगे और कहा कि मामला तो आखिर हम लोगों ने निपटवा ही दिया है इस मामले में चाहे जितना भी खर्च होता हम लोग आपको बचाने के लिए कृत संकल्पित थे। अतः अब गुस्सा मत कीजिए। हम आपके हितेषी हैं आपका बुरा कभी नहीं चाहेंगें। यह सुनकर वकील साहब का गुस्सा थोडा शांत हुआ तब हम लोगो ने उन्हें प्यार से बैठाकर एक पैग व्हिस्की बनाकर उन्हे पिलायी। कुछ समय पश्चात जब वकील साहब का गुस्सा पूर्णतः शांत हो गया तब उन्होने हम लोगों को हिदायत दी कि दुबारा कभी ऐसा मत करना। हम लोगों ने माफी माँगते हुए उन्हें आश्वस्त किया कि अब आगे ऐसा कभी नहीं होगा।

इसके बाद राकेश ने कहा कि अभी कुछ माह पहले ही मेरे पास रात में दस बजे के आसपास एक लड़की रमनदीप का फोन आया उसने कहा कि सर मैं बहुत तकलीफ में हूँ, मेरे पेट में तीन चार दिन से बहुत तकलीफ हो रही है। मैं यही हॉस्टल में रहकर पढ़ाई कर रही हूँ और हम लोग सागर के रहने वाले है। मेरे परिवार में पिताजी अकेले है एवं बीमार होने के कारण तुरंत आने में असमर्थ है। मुझे मेरे पड़ोसी से आपके बारे में जानकारी प्राप्त हुई कि आप काफी मददगार व्यक्तित्व हैं। मैंने उसकी बात सुनकर उससे पूछा कि आपने किसी डॉक्टर को दिखाया या नहीं ? वह बोली कि मैंने दिखाया था परंतु मुझे कोई आराम नहीं मिला। यह सुनकर मैंने कहा कि तुम चिंता मत करो मैं अपनी गाडी भेज रहा हूँ और अपने मित्र के हॉस्पिटल फोन करके तुम्हारी जाँच की व्यवस्था करवा देता हूँ। वहाँ पर डॉक्टर ने उसकी सोनोग्राफी की जाँच के बाद मुझे फोन करके बताया कि इसे पेट में अल्सर है और यदि ये एक दिन भी और देर करती तो शायद इसके प्राण संकट में पड जाते। मुझे अभी रात में ही इसका ऑपरेशन करना होगा। इसके बाद मैंने उस लड़की से बात की तो

उसने बताया कि सर यहाँ पर ऑपरेशन का पूरा रूपया पहले ही जमा करने के लिए कहा जा रहा है परंतु इस समय मेरे इतना रूपया नहीं है, मैं अभी आधा रूपया ही जमा करवा सकती हूँ और बाकी रूपये का भुगतान मेरे पिताजी के आने के बाद कर दिया जायेगा। मैंने कहा कि तुम चिंता मत करो मैं बात कर लेता हूँ। इस प्रकार उस लड़की का ऑपरेशन हो गया।

अगले दिन उसके पिताजी मुझसे मिले और कहा कि आपने इसका ऑपरेशन किसी सरकारी अस्पताल में क्यों नहीं करवाया। मेरे पास अस्पताल का बिल भरने के लिए इतना रूपया नहीं है। मैं उनकी बात सुनकर आश्चर्यचकित रह गया मैंने उन्हें समझाया कि उस समय स्थिति बहुत गंभीर थी और समय पर ऑपरेशन होना बहुत जरूरी था अन्यथा आपकी बेटी की जान को खतरा था। उनको बहुत समझाने के बाद भी वह केवल इसी बात पर अडे रहे कि उसे सरकारी अस्पताल में भर्ती कराना था जिससे उसका इलाज मुफ्त में हो जाता। अंततः अस्पताल के बिल का बाकी रूपया मुझे अपनी जेब से भरना पड़ा। इस घटना से मैंने कान पकड लिये कि आज के समय में बहुत सोच समझकर ही मदद करनी चाहिए अन्यथा होम करते हाथ जले की स्थिति बन जाती है। यह बात सुनकर गौरव और आनंद भी आश्चर्यचकित रह गये कि जिनको अहसान मानना चाहिये था वो अहसान मानने के बजाए उलाहना दे रहे हैं।

अब आनंद ने बताया कि उसके एक परिचित डॉक्टर के क्लीनिक में दीपिका नाम की लड़की कार्य करती थी। वह गजब की खूबसूरत एवं चंचल थी। क्लीनिक के आय व्यय का पूरा हिसाब किताब दीपिका रखा करती थी। उसने कुछ माह के उपरांत डॉक्टर साहब को सलाह दी कि आप अपनी फीस बढा दीजिए। उसकी बात मानते हुए डॉक्टर ने ऐसा ही किया। अब डॉक्टर साहब की आमदनी काफी बढ़ गई जिसका श्रेय वह दीपिका को देते थे। दीपिका की खूबसूरती से डॉक्टर साहब भी प्रभावित थे और आमदनी बढने के कारण वह उससे और भी ज्यादा प्रभावित हो गये थे। दोनों के बीच धीरे धीरे प्रेम संबंध

बन गये थे। डॉक्टर साहब को दीपिका पर इतना विश्वास था कि उन्होने उससे हिसाब किताब पूछना भी बंद कर दिया और उसे चाहे जब तरह तरह गिफ्ट देने लगे जिनमें कीमती आभूषण भी शामिल थे।

एक दिन डॉक्टर साहब का मेरे पास फोन आया कि दीपिका तुम्हारे बारे में मुझसे पूछ रही थी और तुम्हारी बहुत तारीफ कर रही थी। मैं उससे मिलने के लिए क्लीनिक पहुँचा। डॉक्टर ने मुझे एक कमरे में बैठा दिया और थोडी देर बाद दीपिका भी आ गई। धीरे धीरे हमारी लगभग रोज ही मुलाकात होने लगी। कुछ समय पश्चात हमारे बीच में अंतरंग संबंध भी बन गये। हमारी अंतरंगता बढने पर वह रोज ही मेरे से मँहगी मँहगी चीजों की माँग करने लगी। एक दिन तो हद ही हो गई जब उसने किसी मेडिकल कोर्स को करने के लिए मुझसे एक लाख रू. की माँग की । यह सुनकर मैंने विनम्रतापूर्वक उसे समझा दिया कि इतनी रकम मैं नहीं दे सकता हूँ। इसके बाद मैंने डॉक्टर को यह बात बताई। डॉक्टर ने मुझसे कहा कि मैं इसको चार पाँच लाख रू. दे चुका हूँ परंतु फिर भी इसे संतोष नहीं है। इसी दौरान अनायास ही मेरे मुँह से निकल पड़ा कि जब वह इतनी लालची है तो तुमने अपना पूरा हिसाब किताब उसके भरोसे क्यों छोड रखा है ? मेरी बात सुनने के बाद कुछ समय पश्चात डॉक्टर ने अपना हिसाब किताब जाँचा तो पाया कि उसमें काफी गड़बड़ी है। उसने मुझे यह बताने के लिए तुरंत फोन किया और मुझसे पूछा कि अब क्या करना चाहिए। मैंने उससे कहा कि पुलिस में मत जाना अन्यथा तुम्हारी भारी बदनामी होगी। जो रूपया गया उसे भूल जाओ और तुरंत उस लड़की को हटा दो। इसके बाद कामकाज की व्यस्तता के चलते मेरी डॉक्टर काफी समय तक मुलाकात नहीं हुई। एक दिन मैं किसी काम से वहाँ से निकला तो सोचा कि चलो मिल लिया जाए। वहाँ पहुँचकर मेरी आँखे फटी की फटी रह गई जब मैंने दीपिका को वहाँ काम करते हुये देखा। मैंने डॉक्टर से पूछा कि तुमने इसे निकाला क्यों नहीं इसने काफी रूपयों की गडबडी की थी तो डॉक्टर की बात सुनकर मुझे बड़ा आश्चर्य हुआ

उसने कहा कि मैं उसके प्यार में अंधा हो चुका हूँ और चार पाँच लाख रूपये का हेर फेर मेरे लिये कोई बडी बात नहीं है आखिर उसी की वजह से तो मेरी आमदनी बढी थी। उसकी बात सुनने के बाद मैं चुपचाप वहाँ से खिसक गया और सोचता रहा कि वाकई आदमी प्यार में सब कुछ भूल जाता है। यह सुनकर राकेश और गौरव खिलखिलाकर हंस पड़े और बोले कि इश्कबाज हो तो ऐसा हो।

इतना सुनने के बाद गौरव ने एक वृतांत बताया कि यह बात काफी पुरानी है जब एक मशहूर कवियत्री कृतिका शहर में रहती थी और उनका बहुत नाम था। महीने में पंद्रह से बीस दिन तो शहर से बाहर के कार्यक्रमों में भाग लेने चली जाती थी। वह देखने में बहुत सुंदर और बहुत मिलनसार थी। एक बार अपने क्लब के एक कार्यक्रम में मैंने भी उन्हें आमंत्रित किया था उसमें उन्होंने मुझे केंद्रबिंदु रखते हुए बडी शानदार दो तीन रचनाएँ सुनायी। कार्यक्रम समाप्ति के बाद मैंने उन्हें धन्यवाद दिया। बातचीत के दौरान उन्होंने हमारे क्लब के द्वारा किये जा रहे सेवा कार्यो की तारीफ करते हुए मुझे घर पर चाय के लिए आमंत्रित किया। मैं उनका आमंत्रण स्वीकार करके नियत समय पर उनके घर पहुँच गया। उन्होंने मेरी बडी आवभगत की और बड़े अपनत्व से चाय नाश्ता कराया। इसके बाद कभी कभार हम लोग साहित्यिक चर्चा के संबंध में मिलने लगे। उनके पति अक्सर बीमार रहते थे और उनकी देखभाल के लिए उन्होने नर्स की व्यवस्था की हुई थी।

एक दिन उन्होंने फोन पर मुझे बताया कि अपने कार्यक्रम के सिलसिले में पचमढ़ी जा रही है और मुझे भी साथ चलने का आग्रह किया। मैं भी उनके इस प्रेम भरे आग्रह को टाल नहीं पाया और एक दिन के लिए उनके साथ पचमढी चला गया। वहाँ पर कार्यक्रम रात्रि में जल्दी समाप्त हो गया और हम लोग होटल वापिस आ गये। होटल में मैं अपने कमरे में व्हिस्की पी रहा था कि अचानक ही कृतिका भी कमरे में आ गयी मैंने उसे बैठने के लिए कहा और हमारे बीच औपचारिक बातचीत चलती रही तभी उसने मुझसे कहा कि सारी

बोतल अकेले ही खत्म कर दोगे या मेरे लिए भी कुछ छोडोगे। मैंने उनसे क्षमा माँगते हुए कहा कि मुझे नहीं मालूम था कि आप भी इसकी शौकीन है। इतना कहकर मैंने एक पैग बनाकर कृतिका को दिया। उसने चीयर्स कहते हुए एक बार में ही पूरा पैग खत्म कर दिया और अपने लिए दूसरा पैग खुद ही बनाने लगी।

इसी दौरान हमारी बातचीत अब उसके निजी जीवन पर जा पहुँची। उसने बहुत मायूस और उदास होकर कहा कि अब केवल शराब ही मेरा सहारा रह गयी है। मैंने उससे पूछा कि तुम ऐसा क्यों कह रही हो ? उसने कहा कि इसके कई कारण हैं। मैं बहुत भावुक महिला हूँ और साहित्य प्रेमी हूँ। मेरा पति कई सालों से बीमार है और अब तो डॉक्टर ने उसे लंबी बीमारी की वजह से कैंसर हो जाने के कारण अपने हाथ उठा दिये है। पूरे घर का खर्च, बच्चों की पढाई, सामाजिक दायित्व आदि सब कुछ मेरे कंधों पर है जो कि मेरी संपत्ति से आने वाले किराये से चलता है। यह कवि सम्मेलन वगैरह तो सिर्फ शौक और साहित्य के प्रति प्रेम की वजह से हैं अन्यथा इससे से तो स्वयं का पेट भरना भी मुश्किल है। मैं शादी के पहले अपने एक सहपाठी को बहुत चाहती थी परंतु मेरे माता पिता ने मेरी शादी यहाँ कर दी। शादी के बाद से ही मैंने देखा कि इनका व्यवहार मेरे प्रति बहुत रूखा था और पता करने पर मालूम हुआ कि इनका संबंध किसी और लड़की से था। मेरे विरोध करने पर बात मारपीट तक आ गई और समझौता इस शर्त पर हुआ कि दोनों अपना अपना जीवन अपने अपने ढंग से जियेंगे। कोई भी किसी के मामले में हस्तक्षेप नहीं करेगा। मैंने अपना सारा जीवन साहित्य के लिए ही समर्पित कर दिया और आज समाज में मान सम्मान से रह रही हूँ। इस प्रकार बातचीत करते करते काफी रात हो गई और कृतिका अपने कमरे में विश्राम के लिए चली गयी।

कुछ दिनों के बाद उसका फोन आया कि उसका पति गंभीर रूप से बीमार है और मैं अपने मन की तसल्ली के लिए उन्हें मुंबई ले जा रही हूँ, मेरा आपसे

अनुरोध है कि अगर आप भी मुंबई आ सके तो मुझे बहुत आत्मबल और शांति प्राप्त होगी। मैं भी कृतिका के इस दुख भरे अनुरोध को नहीं ठुकरा सका और दो तीन दिन बाद मैं भी वहाँ पहुँच गया। कृतिका दिन भर अस्पताल में रहती थी और शाम को हम लोग भोजन के समय मिला करते थे। वह अपने पति के स्वास्थ्य के बारे में सबकुछ जानती थी और मानसिक रूप से किसी भी स्थिति के तैयार थी। मैं दो तीन बाद वापिस लौट आया। दो तीन बाद ही मुझे पता चला कि उसके पति की मृत्यु हो चुकी है। मैं भी शोक संवेदना के लिए उसके घर गया। इसके बाद हमारा मिलना बहुत कम हो गया। एक दिन मुझे जानकारी मिली कि कृतिका के शहर के कुछ माफिया लोगों के साथ भी संबंध हैं यह जानकारी मिलने पर मैंने व्यस्तता का बहाना बनाते हुए उससे यदा कदा मिलना भी बंद कर दिया।

एक लंबे अंतराल के बाद एक दिन रात में एक बजे के आसपास उसका फोन आया। मैंने पूछा कि क्या बात है इतना रात गये फोन क्यों किया। वह बोली कि जिंदगी का क्या भरोसा। तुम्हारी याद आयी तो तुम्हें फोन लगा लिया। इसके बाद वह काफी देर तक फोन पर बात करती रही और मेरे प्रति अपनी शुभकामना देकर फोन रख दिया। अगले दिन सुबह दस बजे के लगभग मुझे सूचना मिली की कृतिका की हृदयाघात के कारण मृत्यु हो गई। यह सुनकर मैं अवाक रह गया और पिछली रात ही उससे फोन पर हुई बातचीत को लेकर सोचता रहा कि क्या इसे अपने मृत्यु का पूर्वाभास हो गया था ? गौरव की बात सुनकर राकेश और आनंद आश्चर्यचकित रह गये कि तुम्हारी मित्रता और उसका तुम्हारे प्रति समर्पण अनुकरणीय था। शायद इसलिये उसने रात में फोन करके तुमसे अंतिम बार बात करके अपनी संतुष्टि कर ली और इस दुनिया से विदा हो गयी।

राकेश ने कहा कि अपनी ट्रेन लेट हो गई है ऐसा लगता है कि हम लोग दो तीन घंटे लेट पहुँचेगें। तभी मानसी आकर कहती है कि ट्रेन दो घंटे लेट है और

आने वाले स्टेशन पर आपको एक सरप्राइज मिलेगा। हम लोगों ने पूछा कि क्या बात है तो उसने कहा कि आप खुद ही देख लीजियेगा। इतना कहकर वह वापिस अपने केबिन में जाकर सो गई।

राकेश बताता है जब मैं कॉलेज में पढ़ता था तो मेरे मोहल्ले में मेरे मित्र डा. अभिषेक का दवाखाना था। मेरी अक्सर उससे मुलाकात हुआ करती थी। एक दिन डाक्टर ने बताया कि एक लड़की सारिका उसके पास प्रतिदिन आती है और जो पुरानी दवाईयाँ है उन्हें ले जाकर गरीब बच्चों में बाँट देती है। उसने ऐसे सामाजिक काम के लिए मोहल्ले में कई जगह कई मकानों के आगे डब्बे लगा रखे ताकि बची हुयी दवाईयाँ लोग फेंकने के बजाए उसमें डाल दे। एक दिन मैंने उससे कहा कि सारिका तुम दिखने में जितनी सुंदर हो तुम्हारी आत्मा भी उतनी पवित्र है। वरना आज के समय में लोग कहाँ किसको पूछते हैं। मुझे यह जानकर बहुत खुशी हो रही है कि तुम इस काम को और बढ़ाकर दूसरे मोहल्लों में भी ऐसी सेवा आरंभ करने के लिए कृतसंकल्पित हों। मेरा एक मित्र राकेश है कुछ माह पहले उसने भी मुझे ऐसी सेवाएँ प्रारंभ करने के लिए पूछा था तो मैंने उसे कहा कि पुरानी दवाईयाँ तो प्राप्त हो जायेंगी परंतु उनको छाँटकर उनमें से खराब या अंतिम तिथि निकल चुकी दवाईयों को छाँटकर हटाना बहुत कठिन काम है और इसमें बहुत सेवाभाव की आवश्यकता है। यह सुनकर सारिका बोली कि क्या आप मेरी मुलाकात उनसे करा सकते है। हम लोग मिलकर जनहित के इस कार्य को करने का प्रयास करेंगें। मैंने राकेश को शाम के सात बजे दवाखाने आने की खबर भिजवा दी। वह नियत समय पर दवाखाने पहुँच गया, हम लोग सारिका के आने का इंतजार कर रहे थे। थोडी ही देर में वह भी आ गई और डाक्टर ने मेरा उससे परिचय कहाकर कहा कि आप लोग आपस में बातचीत कर लें तब तक मैं अपने मरीजों को देखकर आता हूँ। राकेश ने सारिका से कहा कि मेरी भी ऐसी ही योजना है। इस काम को करने के लिए मुझे दो तीन डॉक्टरों ने भी अपनी सेवाएँ देने के लिए आश्वस्त किया हैं। हमें सिर्फ पुरानी

दवाईयें इकट्ठी करके उनके पास पहुँचाना है। वे उनमें से खराब दवाईयों को हटाकर बाकी बची दवाईयों को उपयोगिता के अनुसार विभाजित कर देंगे। यह जानकर सारिका बहुत खुश हुयी और हम लोग इस सेवा कार्य के सिलसिले में रोज ही मिलने लगे। एक दिन मैंने उसे अपने साथ फिल्म देखने के लिए कहा, वह तैयार हो गई। फिल्म देखने के बाद हम लोगों ने शाम का भोजन रेस्टारेंट में लिया। वह मुझे कहती थी कि तुम इतने बड़े घर के लड़के हो इसके बाद भी तुम्हारी सोच गरीबों के हित के लिए है यह बहुत बडी बात है। यह तुम्हारे परिवार के अच्छे संस्कारों का प्रतीक है।

अब हम दोनों के बीच में अप्रतिम प्रेम जाग्रत हो गया और हम दोनों को बिना मिले चैन नहीं मिलता था। जब डॉक्टर अभिषेक को यह बात पता हुई कि हम लोगों के बीच में प्रेम संबंध बन गये तो उन्होंने मुझे बुलाकर आगाह किया कि तुम इस प्रेम के चक्कर में शादी मत कर बैठना। तुम्हारे परिवार का बहुत मान सम्मान है इसे डुबोना मत। एक दिन राकेश उसे लेकर पचमढी घूमने चला जाता है। वहाँ पर दोनों एक साथ प्यार करते हुए घूमते फिरते हैं। एक दिन सारिका राकेश से पूछती है कि क्या तुम मेरे साथ शादी करोगे। राकेश स्पष्ट रूप से मना कर देता हैं परंतु साथ में यह भी कहता है कि तुमको आत्मनिर्भर बनने के लिए जो भी जरूरत हो मैं पूरा करने के लिए तैयार हूँ। यह सुनने के बाद सारिका कहती है कि मैं एक ब्यूटी पार्लर खोलना चाहती हूँ ताकि मेरे पास एक आजीविका का साधन बन सके। यह सुनकर राकेश अपनी सहमति दे देता हैं। वहाँ पर दोनों अपनी सीमाओं को भूलकर प्यार में इतना खो जाते है कि दो जिस्म एक जान हो जाते है। हम लोगों के वापिस आ जाने के बाद सारिका ब्यूटी पार्लर खोलने के लिए एक जगह पसंद करती है। जब उस जगह की कीमत मुझे पता चली तो मेरे होश फाख्ता हो गये। वह दुकान पंद्रह लाख रूपये की थी और सौंदर्य सामग्री एंव साज सज्जा में करीब दस लाख रू. का और खर्च था इस प्रकार पच्चीस लाख रू. का बजट मेरे सामने आ गया। मेरे लिए

इतना खर्च करना संभव नहीं था। मैंने अपने मन में सोचा था कि दो तीन लाख रू. में यह हो जाएगा। मुझे मजबूरन उसे ना कहना पड़ा परंतु वह इस बात से नाराज हो गई और मुझे धोखा देने की बात कहते हुए उलाहना देने लगी। इसके बाद हम लोगों का मिलना बंद हो गया। कुछ माह बाद पता चला कि उसका विवाह हो गया था।

राकेश अब आगे दूसरा वृतांत बताता है। उसका एक दोस्त रणजीत सिंह दवाईयों का थोक व्यापारी था और वह सैनिक अस्पताल में दवाईयों की आपूर्ति करता था। वहाँ पर मेजर पिल्ले के साथ उसकी मित्रता थी। एक दिन रंजीत मुझे अपने साथ उनके पास ले गया। वे बहुत ही जिंदादिल हंसमुख और खुले विचारों के व्यक्ति थे जिन्हें मदिरापान का शौक था। उनकी पत्नी श्रीमती पिल्ले सैनिक अस्पताल में नर्सिंग हॉस्टल में वार्डन थी। वे भी बहुत संभ्रांत एवं व्यवहारकुशल महिला थी। रंजीत को उस दिन अपने व्यक्तिगत काम के संबंध में जल्दी जाना था। यह सुनकर मेजर पिल्ले ने उससे अनुरोध किया कि आपके मित्र से आज मेरी पहली मुलाकात हुई है। हम लोग कुछ समय और साथ में व्यतीत करना चाहते हैं। यह सुनकर रंजीत मुझे उनके पास छोडकर वापिस चला गया। कुछ समय बाद हॉस्टल की दो लड़कियाँ राजलक्ष्मी और मेहमूदा वहाँ पर आयी और मिसेज पिल्ले से बोली की हमें शहर जाना था परंतु उनको ले जाने वाली गाडी कमांडेट साहब की ड्यूटी में लगी हुई है। हमें कुछ सामान खरीदना बहुत जरूरी हैं। कृपया हमारे जाने के लिए कुछ प्रबंध करा दीजिए। मेजर पिल्ले ने उनको कहाँ की आप थोडी देर रूकिये, ये मेरे मित्र राकेश है एवं कुछ देर बाद आपको शहर छोड देंगें। वे लोग दूसरे जगह बैठकर मेरे जाने का इंतजार करने लगी। मैंने भी कुछ देर बाद मेजर साहब जाने की इजाजत मांगकर उन लड़कियों का साथ लेकर चला गया। वे दोनों बहुत खुले विचारों की थी। उन्होंने मुझसे पूछा कि आप मेजर साहब को कैसे जानते हैं ? मैंने उसे बताया मेरा दोस्त सैनिक अस्पताल में दवाईयों की आपूर्ति करता हैं उसके

कारण मेरा मेजर साहब से मिलना हुआ। इस प्रकार बात करते करते शहर आ गया और मैंने उन्हें बाजार में छोड दिया और कहा कि यदि आपको कोई भी परेशानी हो तो मेरे नंबर पर संपर्क कर सकती है। अगले दिन ही उन दोनों लड़कियों का फोन आया कि कल रात आपसे बातचीत करके बहुत अच्छा लगा अगर आप के पास समय हो तो हम लोग बाहर घूमने जाना चाहते हैं। मैंने मन ही मन सोचा कि नेकी और पूछ पूछ। मैं उनको शहर के कुछ दूरी पर स्थित एक रमणीय स्थल पर घुमाने ले गया। उनसे बातचीत के दौरान पता हुआ कि मेहमूदा कविताएँ, गजलें इत्यादि लिखती है। मैंने उससे एक कविता सुनाने का आग्रह किया। उसने एक कविता सुनायी :-

प्रेम हैं श्रद्धा

प्रेम है पूजा

प्रेम है वसुधा का आधार

प्रेमी रहें प्रसन्न

प्रेममय हो उनका संसार

दिलों को जीतों प्रेम से

प्रकृति भी देगी साथ

प्रेम बनेगा जगत की

सुख शांति का आधार

प्रेम की ज्योति करेगी

सपनों को साकार

प्रेम से जीना

प्रेम से मरना

सबसे करना प्यार

विश्व शांति का स्वप्न

तभी होगा साकार।

उसकी कविता सुनकर और उसकी साहित्यिक अभिरूचि के लिए मैंने उसकी प्रशंसा करते हुए उसे प्रोत्साहित किया। एक दिन हम लोग शहर के एक प्रसिद्ध रेस्टारेंट में बैठे थे। राजलक्ष्मी ने चर्चा के दौरान बताया कि अगले माह उसे नर्सिंग ट्रेनिंग के विशेष प्रशिक्षण के लिए दुबई जाना है। उसे छः माह के इस प्रशिक्षण के बाद भविष्य में अच्छी नौकरी प्राप्त होने की संभावनायें बढ जायेंगी। मेहमूदा ने भी बताया कि अगले माह तक उसका भी स्थानांतरण होकर वह चली जायेगी। मैंने पूछा कि कहाँ जा रही हो तो वह बोली कि यह तो नौकरी है जहाँ स्थानांतरण होगा वहाँ जाना पडेगा। किसी को भी इसकी जानकारी नहीं रहती है। एक दिन राजलक्ष्मी ने पूछा कि क्या तुम मुझे कार चलाना सिखा दोगे। मुझे दुबई में इसकी जरूरत पड सकती है। मैंने उसे हाँ कहकर अपने पास बैठा लिया और ड्राइविंग सिखाने लगा। यह स्वाभाविक ही था कि ड्राइविंग सिखाने में मेरे हाथ उसके शरीर को छू जाते थे और शरीर में अजीब से सी उत्तेजना होती थी। हम दोनों इसका आनंद लेते थे।

हम लोग घूमते फिरते, बातें करते हुए आनंद से समय बिता रहे थे और ना जाने कब कैसे एक माह समय बीत गया। राजलक्ष्मी का दुबई जाने और मेहमूदा का भी स्थानांतरण का आदेश आ गया। मैंने उन दोनों को अपनी ओर से यादगार के लिए तोहफा दिया। मुझे आज भी वे बीते हुए दिन बहुत याद आते हैं और आज भी एक आत्मीय संबंध उनकी यादों से बना हुआ है।

आनंद दूसरा वृतांत बताता है कि मेरे एक मित्र मोहन को पेट में अक्सर तकलीफ रहती थी। वह हजारो रूपये इसके इलाज में खर्च कर चुका था परंतु समुचित लाभ प्राप्त नहीं हो पाया था। किसी ने उसे बताया कि रेल्वे हॉस्पिटल में कार्यरत एक नर्स जिसका नाम सविता है उसे होम्योपैथी का अच्छा ज्ञान है एक बार उससे भी मिल लो क्या पता शायद आराम लग जाये। रेल्वे कॉलोनी में सविता नाम की एक नर्स अपनी एकलौती बेटी रश्मि के साथ रहती थी। उस महिला ने अपने जीवन में बहुत संघर्ष किये थे। अपने पति के साथ संबंध विच्छेद करने के उपरांत उसने नर्सिंग का कोर्स किया और रेल्वे में नौकरी करने लगी। उसे होम्योपैथी का भी काफी ज्ञान था। हम दोनों एक दिन उसके घर पर पहुँच गये और उसके पूछने पर अपने आने का प्रायोजन बता दिया। वह आदरपूर्वक हम लोगों को अंदर ले गई और एक कमरे में बैठाकर मोहन से उसकी बीमारी के विषय में विस्तृत जानकारी लेने लगी। उसी समय उसकी बेटी भी बाहर से वापिस आयी और हम लोगो को नमस्कार करके अंदर चली गई। वह पुनः पाँच मिनिट बाद आयी और मुझसे बोली की आप अंदर बैठ जाये, माँ को इनकी विस्तृत जाँच करने में समय लगेगा। मैं अंदर जाकर बैठ गया। वह लड़की अपने घरेलू कामकाज निपटाकर मेरे लिए चाय लेकर आई। चाय पीते पीते हम लोग आपस में बातचीत भी कर रहे थे। इस बातचीत के दौरान मालूम हुआ कि वह पढाई में बहुत होशियार थी और हमेशा कक्षा में प्रथम आती थीं। उसे पश्चिमी नृत्य और बैडमिंटन का बहुत शौक था। मैंने उससे कहा कि हमें भी पश्चिमी नृत्य सीखना है, तो वह बोली कि मैं जहाँ सीखने जाती हूँ आप भी वहाँ आ जाये। हमारी बातचीत चल ही रही थी कि मोहन अपनी जाँच पूरी करवाकर एवं एक सप्ताह की दवाई लेकर आ जाता है और हम दोनों वहाँ से वापिस रवाना हो जाते हैं। अगले ही दिन हम जहाँ रश्मि पश्चिमी नृत्य सीखने जाती थी वहाँ पहुँचते हैं। उसने हमारा परिचय अपने शिक्षक से करवाया और हम लोगों को उसी बैच में प्रवेश दिलवा दिया। अब हम लोग नृत्य सीखने के

लिए प्रतिदिन मिलने लगे और हमारी मित्रता बढती गई। कुछ समय पश्चात हम लोग रेस्टारेंट,पिक्चर हॉल वगैरह साथ साथ जाने लगे।

एक दिन अचानक मोहन भागा भागा आया और कहा कि किसी ने रश्मि के उपर तेजाब फेंक दिया है वह तो ईश्वर की कृपा थी कि झुकने की वजह से उसके चेहरे पर कुछ नहीं हुआ परंतु कंधे और गले में इसका प्रभाव पडा है उसे उचित ईलाज के लिए अस्पताल में भर्ती किया गया है और पुलिस इस मामले की गंभीरता से जाँच कर रही है। मोहन ने कहा कि चलो हम उससे अस्पताल में मिलकर आते हैं तो मैंने मना करते कहा कि अगर हम उससे मिलने जायेंगे तो हो सकता है हम भी पुलिस की निगाह में आयें और हमारे से भी पूछताछ होने लगे। इसलिये इस झंझट से बचने के लिए अभी मत जाओ जब वह अस्पताल से वापिस आ जायेगी तब जायेंगें अभी केवल फोन करके उसकी माँ से तबियत के बारे में जानकारी ले लेते हैं। कुछ दिनों पश्चात रश्मि अस्पताल से घर वापिस आ गई। हम लोग उससे मिलने के लिये गये तो पता चला कि उसके साथ ये कांड उससे एक तरफा प्रेम करने वाले एक आपराधिक प्रवृत्ति के लड़के ने किया था, उसे रश्मि का किसी से भी मिलना जुलना पसंद नहीं था। पुलिस ने उसे गिरफ्तार कर लिया था और उसने अपना अपराध भी स्वीकार कर लिया था। रश्मि की माँ ने बताया कि तेजाब के कुछ छींटे उसके गाल पर भी आये थे जिसके लिए डॉक्टर ने उसे मुंबई में प्लास्टिक सर्जरी करवाने के लिए कहा था। इसके लिए हम लोग तीन दिन बाद ही मुंबई जा रहे हैं। इतना सब सुनने के बाद मैंने निर्णय लिया कि अब रश्मि मिलना बंद कर देना चाहिये अन्यथा ऐसा कोई हादसा कहीं हमारे साथ भी ना हो जाए।

इसके बाद आनंद ने नयी घटना बताई। उसने कहा कि शहर के उपनगर में आर्मी के शार्ट सर्विस कमीशन से हाल ही में सेवानिवृत्त हुये एक मेजर साहब अपनी पत्नी और दो सालियों के साथ रहते थे। मेरा उनसे परिचय मेरे एक मित्र के माध्यम से हुआ था। मेजर साहब समय व्यतीत करने हेतु एक अच्छी

नौकरी की तलाश में थे मैंने उनसे कहा कि क्या आप हमारे सिनेमा हॉल में प्रबंधक के पद पर कार्य करना पसंद करेंगें। मेजर साहब के हाँ कहने पर मैंने पिताजी से इस बारे में बात की और उन्हें मेजर साहब से मिलवाया। इसके बाद पिताजी ने उन्हें मैनेजर के पद पर नियुक्त कर दिया। अब मेरा मेजर साहब के यहाँ आना जाना काफी बढ गया था और उनकी सालियों अंजना और वंदना के साथ भी काफी मित्रता हो गई थी। वे अक्सर मेरे साथ बाहर घूमने जाया करती थी। हमारी पारिवारिक मित्रता के कारण उनके परिवारजनों को भी इस बात पर कोई आपत्ति नहीं थी। वंदना बी.एड. की छात्रा थी और अंजना बी.कॉम कर रही थी। एक दिन वंदना से शिक्षा कैसी हो के विषय में चर्चा हुई तो उसने कहा कि शिक्षा लक्ष्य प्राप्ति का एक साधन है ओर इसका उद्देश्य हमारे आंतरिक गौरव को उभारकर हमारी योग्यताओं ं को विकसित करना होता है। जीवन में कभी विपरीत परिस्थितियाँ आने पर हम समस्याओं का समाधान अपने में संचित ज्ञान के भंडार का उपयोग करके निदान कर सकते हैं। हमारा भाग्य हानि लाभ सब कुछ विधाता के हाथों में होता है जो व्यक्ति जीवन में ईमानदारी, परिश्रम एवं सच्चाई से जीवन जीता है प्रभु भी उसी का साथ देते हैं और वह अपने जीवन को सार्थक बनाता हैं। इस प्रकार का जीवन कठिन हो सकता है परंतु असंभव नही। जीवन में प्रतिक्षण सकारात्मक, नकारात्मक विचार आते जाते हैं। हमको प्रयासरत रहना चाहिए कि हम सकारात्मक विचारों को अपनी ऊर्जा का उद्गम बनाए। जीवन में असफलता से कभी भी निराश नहीं होना चाहिए। असफलता ही जीवन में सफलता की नींव बनती हैं। मैं उसके विचारों से बहुत प्रभावित हुआ और उसके हाथ को थामकर कहा कि तुमने बडी सार्थक बातें बताई। हमारे लगातार मिलने के कारण हमारी मित्रता आत्मीय संबंधों में तब्दील हो गई थी और एक दिन हम लोग सारे बंधनों को तोडकर एक हो गये थे। हमारे अंतरंग संबंधों के बारे में जानकर अंजना स्वयं ही दूर हो गई थी। मेरे

वंदना के साथ संबंध उसके विवाह होने तक बने रहे और आज भी उसके साथ बिताए हुए स्वर्णिम क्षण मुझे असीम आनंद की अनुभुति देते हैं।

आनंद आगे कहता है कि मैं आप लोगों को एक और घटना से अवगत करा रहा हूँ। मुझे कुछ वर्ष पूर्व तक राजनीति का बहुत शौक था और मैं एक राजनैतिक दल के युवा प्रकोष्ठ का प्रभारी था। एक बार हम लोग किसी छात्र आंदोलन के संदर्भ में दिल्ली गये हुए थे। हमारे दल में काफी संख्या में लड़कियाँ भी थी। वहाँ पर पार्टी के केंद्रीय कार्यालय में पार्टी प्रमुख से हमारी मुलाकात हुई और विभिन्न राजनैतिक विषयों पर चर्चा हुई। मुलाकात के उपरांत बाहर निकलने पर एक संभ्रांत व्यक्ति मेरे पास आया और अपना विजिटिंग कार्ड देते हुए बोला कि आप को इस कार्यालय में कोई भी काम हो तो मुझसे संपर्क करियेगा। पार्टी के वरिष्ठ नेताओं से मेरे अच्छे संपर्क हैं। वह व्यक्ति अपने आप को पार्टी का अखिल भारतीय स्तर का पदाधिकारी बता रहा था।

उसने मुझे शाम को एक सांसद के घर पर मिलने के लिए बुलाया। मैं शाम को उसके बताए पते पर पहुँचा तो वहाँ का चपरासी मुझे घर के पीछे बने हुए आऊट हाऊस में ले गया। जब मैं वहाँ पहुँचा तो देखा कि वह व्यक्ति शराब पी रहा था उसने मुझसे भी पीने के लिए पूछा, मैंने भी हाँ कह दिया। अब धीरे धीरे शराब के दौर के साथ हमारी बातचीत भी बढ़ती जा रही थी। कुछ देर बाद वह सीधे मुद्दे की बात पर आ गया और बोला कि आप के प्रतिनिधि मंडल में किसी लड़की को पदाधिकारी बनने की इच्छा हो तो बताएँ मैं बनवा सकता हूँ ? मैंने कहा यह तो बहुत अच्छी बात है हमारे आने का उद्देश्य भी यहीं था कि महिलाओं को संगठन में उचित प्रतिनिधित्व मिलना चाहिए। हम बात कर ही रहे थे कि तभी एक नेता जी वहाँ आये और उस व्यक्ति से कुछ बात करने लगे। उस व्यक्ति ने किसी को फोन किया और थोडी ही देर में एक लड़की वहाँ आ गई जिसका उन्होंने नेताजी से परिचय कराया और उनके साथ भेज दिया। यह सब देखकर मेरे मन में संदेह पैदा हो रहा था कि आखिर यहाँ हो क्या रहा

है ? उन नेताजी के जाने के बाद उस व्यक्ति ने बताया कि यह व्यक्ति एक प्रदेश का मंत्री है और जो लड़की उन नेताजी गयी है उसे राजनीति में आगे बढने की तीव्र इच्छा है बस उन दोनों को मिलाने का काम मेरा है। आपके साथ जो लड़कियाँ आयी हैं अगर उनमें से किसी की इच्छा आगे बढने की है तो मैं उनकी मदद कर सकता हूँ।

अगर आप मेरे साथ संपर्क बनाए रखेंगे तो आपको भी बहुत फायदा होगा। इतना कहने के बाद उसने अंदर से नीलिमा नाम की लड़की को बुलाया और मेरा परिचय कराते हुए कहा कि यह बहुत बडे नेताजी हैं और साथ ही साथ बहुत धनवान भी हैं। वह उस लड़की को मेरे बारे में तरह तरह के प्रलोभन देकर उसे मेरे साथ जाने के लिए प्रोत्साहित कर रहा था। वह लड़की मेरे साथ जाने के लिए तैयार हो गई और मैं उसे लेकर एक रेस्टारेंट में पहुँच गया। वहाँ पहुँचकर मैंने अपने स्तर पर उस व्यक्ति की जानकारी प्राप्त की तो पता चला कि वह कोई नेता नहीं है बल्कि एक सासंद का दूर का रिश्तेदार है जो हर महीने दिल्ली आकर उनके सरकारी घर में रूकता हैं। यह सारी बातचीत नीलिमा के सामने हो रही थी।

यह सब सुनकर वह रोने लगी और बोली कि आज आपने मेरा जीवन तबाह होने से बचा लिया। मैं इस व्यक्ति के संपर्क में पिछले सप्ताह से थी और यह मुझे पार्टी में पदाधिकारी बनने का प्रलोभन देकर कह रहा था कि इसके लिए आपको सेवा, समर्पण और समझौता करना पड़ेगा। परंतु आप की वजह से इस झूठे और फरेबी व्यक्ति की पोल खुल गयी है। इस वाक्ये के बाद वह लड़की मुझे धन्यवाद देती हुयी वापिस चल गई और मैं भी इस प्रकार के फरेबी व्यक्तियों के बारे में सोचते हुए जिनके कारण अच्छे राजनैतिज्ञ और राजनीति बदनाम होती है, होटल आ गया। मुझे बड़ा आश्चर्य हो रहा था कि लोग कैसे इनके प्रलोभनों में आ जाते हैं ? होटल पहुँचने पर मैंने यह बात सभी को बताई

तो सभी आर्श्चय व्यक्त करते हुए कह रहे थे कि हमें बहुत सजग रहना चाहिए।

इसके बाद राकेश ने मुंबई का एक वृतांत बताते हुए कहा कि उसके बचपन का मित्र शमशेर सिंह मुंबई के जुहु इलाके में रहता था। उसका मुख्य काम फिल्म निर्माताओं को आवश्यकता होने पर धन उपलब्ध कराना था। एक बार उसने मुझे मिलने के लिये अपने गेस्ट हाऊस में आमंत्रित किया। वहाँ उसने फोन करके पाँच लड़कियों को बुलाया और उनसे कहा कि आप लोग बढ़िया नृत्य करके मेरे मित्र को प्रसन्नचित्त कर दीजिए। यदि ये खुश हो गये तो हम आपको फिल्म निर्माता से कहकर और भी अच्छे रोल दिलाने की सिफारिश करेंगें। वे सभी शमशेर सिंह को जानती थी कि यह फिल्म फाइनेंसर है और उसके करोंडों रूपये कई निर्माताओं की फिल्मों में लगे हुए हैं। उसकी बात को फिल्म निर्माता काफी तवज्जो देते थे।

मैंने उससे पूछा कि जो बडें बडे फिल्म निर्माता है क्या उन्हें भी फिल्म निर्माण के दौरान बाहर से रूपये लेने की आवश्यकता पडती है ? उसने कहा कि हाँ। मैंने पूछा कि रकम वापिसी की क्या गारंटी होती है ? शमशेर सिंह बोला कि फाइनेंसर के पास कॉपीराइट रिजर्व रहता है जब तक कि उसका पूरा रूपया चुकता ना हो जाए वे अपनी फिल्म का प्रदर्शन नहीं कर सकते। मैं केवल बड़े और नामी निर्माताओं की फिल्मों में ही रूपया लगाता हूँ। उसी समय वे पाँचों लड़कियाँ जया, मधु, बसंती, माधुरी और प्रिया कहती हैं कि आप लोगों को यदि व्यापार की बातें करना है तो हम लोग यहाँ क्या करेंगें ? शमशेर बोला कि दस मिनिट और रूक जाओ। मैंने तबला और हारमोनियम वाले को भी यहाँ बुलाया है और वे यहाँ आते ही होंगें। मुझे एक फिल्म निर्माता ने अपनी अगली फिल्म के लिए दो अच्छी नृत्यांगनाओं की खोज करने हेतु कहा है जिसे वे अपनी फिल्मों में काम करने का मौका देगें। यह सुनकर सभी बहुत प्रसन्न हो जाती हैं और व्हिस्की की बोतल खोलकर सभी के लिए पैग बनाती है।

उसी समय तबला और हारमोनियम वाले भी पहँच जाते है और फिल्मी गानों की धुन पर नृत्य का कार्यक्रम प्रारंभ हो जाता है। मैं उनकी भावभंगिमाओं को देखकर खुश हो गया और एक अजीब सा अहसास मेरे दिल को रोमांचित कर रहा था। कुछ देर बाद शमशेर सिंह मुझसे कहता हैं कि इनमें से जिसकी नृत्य शैली दूसरों की अपेक्षा कमजोर हो उसे बताओं। मैंने मधु के लिए कहा कि इसका नृत्य अन्य चारों की तुलना में ठीक नहीं हैं। शमशेर ने अपने पास से दो हजार रू. निकाले और उसे देकर विदा कर दिया। अब पुनः नृत्य शुरू हो गया और दस मिनिट बाद शमशेर सिंह ने पुनः यही बात पूछी कि अब इन चार में से जिसका नृत्य सबसे कमजोर हो बताओ। मैंने माधुरी को ओर इशारा करके बताया, उसे भी शमशेर ने मधु के समान दो हजार रू. देकर विदा कर दिया। अब बाकी बची तीन लड़कियों से आधे घंटे तक अर्धनग्न नृत्य कराने के बाद तबला हारमोनियम वालों को रूपये देकर विदा कर दिया। उनके जाने के बाद मुझसे पूछा कि तुम्हें कौन सी दो लड़कियाँ अच्छी लगी। मैंने बसंती और प्रिया को पसंद कर लिया और वे मेरे पास आकर बैठ गयी और तीसरी लड़की जया शमशेर के साथ चली गयी। शमशेर ने जाते हुए मुझसे कहा कि जब तक तुम्हारी इच्छा हो रूकना और फिर चौकीदार का चाबी देकर चले जाना। उसने जाते जाते उन लड़कियों को भी पाँच पाँच हजार रू. देकर कहा कि ये हमारे खास मेहमान है इनका ध्यान रखना। शमशेर के जाने के बाद हम सभी ने व्हिस्की का एक एक पैग और बनाया और उनके जीवन के विषय में बातचीत चालू की। उन्होंने बिना किसी संकोच के हमें बताया कि उन्हें फिल्मों में काम करके बड़ी अभिनेत्री बनना है और इसी चाह में हम लोग शमशेर सिंह जैसे फिल्म फाइनेंसर के संपर्क में आ गये जिन्होंने हमसे वादा किया है कि वे हमें आगे बढने में मदद करेंगें। हम उन्हें खुश रखते है और वे हमारी मदद करते हैं इस प्रकार दोनों ही एक दूसरे का लाभ उठाते है। यह सब सुनने के पश्चात लगभग दो तीन घंटे उनके साथ बिताकर करके मैं अपने होटल आ गया था।

ट्रेन अगले स्टेशन पर पहुँचने ही वाली थी। मानसी उठकर दरवाजे के पास खडी हो गयी और हम तीनों सोच रहे थे कि ऐसा कौन सा सरप्राइज मानसी देने वाली है जो कि हमें नहीं मालूम। ट्रेन स्टेशन पर रूकने के थोडी देर बाद रवाना हो जाती है। ट्रेन चलने के पाँच मिनिट बाद मानसी, आरती और पल्लवी को अपने साथ लेकर कंपार्टमेंट में आ जाती हैं। उन्हें देखकर तीनों चौंक जाते हैं और पूछते हैं कि आप लोग यहाँ कैसे ? पल्लवी कहती है कि मेरा घर यहाँ से पास में ही है, मैं यहाँ छुट्टी में आई हुई थी और आरती को भी अपने साथ ले आई थी। मुझे मानसी ने बताया था कि आप सभी इस ट्रेन से वापिस हो रहे है तो मैंने भी इसी ट्रेन में आरक्षण ले लिया था। आप सभी के लिए हम खाना लेकर आये हैं। उसी समय टिकिट चेकर कंपार्टमेंट में आता है और आरती एवं पल्लवी की टिकिट देखकर कहता है कि मेडम आपकी टिकिट एसी थ्री की है अतः आप यहाँ नहीं बैठ सकती हैं। गौरव टिकिट चेकर से कहता है कि यह हमारे ही साथ हैं और हम सभी को अगले स्टेशन पर उतरना है। अगर आपकी कृपा हो जाए तो यह सफर हमारा एक साथ कट जायेगा। इतना कहकर गौरव उसे 1000 रू. धीरे से दे देता है। टिकिट चेकर प्रसन्न होकर उन्हें बैठने की अनुमति देकर आगे बढ़ जाता हैं। आरत और पल्लवी, राकेश से पूछती हैं कि तुम्हारी प्रदर्शनी कैसी रही ? राकेश कहता है बहुत अच्छी रही, मेरी कुछ पेंटिंग्स लोगों को इतनी पसंद आयी कि उन्हें बेचने से मुझे लगभग दो लाख रू. प्राप्त हुये। आरती और पल्लवी ने आश्चर्यचकित होकर राकेश को बहुत बधाई दी और उससे इस हेतु पार्टी देने के लिए कहा। पल्लवी ने पूछा कि आप लोगों ने इतने दिन मुंबई में कैसे समय व्यतीत किया। आप लोग तो बोर हो गये होंगें। आनंद ने कहा कि हम लोग बिल्कुल भी बोर नहीं हुये बल्कि मुंबई के जीवन का भरपूर आनंद लिया। इसके बाद सभी ने आरती और पल्लवी के द्वारा लाया हुआ भोजन किया और सभी ने उनके द्वारा बनाये हुये भोजन की तारीफ करते हुए उन्हें धन्यवाद दिया। कुछ समय पश्चात ट्रेन गंतव्य स्टेशन के प्लेटफार्म

पर खडी हो गयी थी। वे सभी उतरकर नीचे आये उनको लेने के लिये तीन गाडियाँ आयी हुयी थी। एक गाडी में मानसी, आरती और पल्लवी को हॉस्टल भिजवा दिया जाता है एवं बाकी दो गाडियों राकेश, आनंद और गौरव अपने घर चले जाते हैं।

अब तीनों प्रायः प्रतिदिन शाम के समय कभी साथ साथ तो कभी अकेले मिलने लगे। इन तीनों ने अपनी अपनी प्रेमिकाओं के लिए उनके हॉस्टल के कमरे में एयर कंडीशन, फ्रिज आदि सुविधाजनक उपकरणों की व्यवस्था करवा दी थी ताकि इन्हें किसी प्रकार की असुविधा ना रहे। हॉस्टल वार्डन के लिए तीनों ने एक एक वाशिंग मशीन उपहार स्वरूप दी थी जिससे वह बडी खुश थी और इनके मिलने जुलने में किसी किस्म का व्यवधान खडा नहीं करती थी। मानसी को राकेश तहेदिल से चाहने लगा था। एक दिन जब वे बाहर घूम तब राकेश ने पूछा कि तुमने अपनी शादी के विषय में क्या सोचा है तुम यदि हाँ कहती हो तो मैं अपने माता पिता से बात कर सकता हूँ। मानसी ने कहा कि मैं बलात्कार के मानसिक आघात से अभी तक ठीक नहीं हो पायी हूँ। इसलिये इस बारे में अभी कुछ नहीं कह सकती। राकेश मन में सोचता है कि एक दिन मैं इसके दिल से बलात्कार का डर दूर कर दूँगा। यदि ऐसा कर सका तो स्वमेव ही इसके मन में मेरे प्रति प्रेम जाग्रत हो जायेगा।

अब राकेश ऐसा कोई भी मौका नहीं छोडता है कि जब मानसी को लगे कि वह अकेली है और कोई उसके साथ नहीं है। धीरे धीरे समय बीतता है और मानसी के दिमाग में राकेश की चाहत के कारण बलात्कार के कारण बैठा हुआ डर धीरे धीरे समाप्त होने लगता है और उसका राकेश के प्रति प्रेम भाव जाग्रत हो जाता है। एक दिन राकेश मौका और समय देखकर उसको एकांत में बाहों में लेकर उसका चुंबन लेकर अपने प्यार का इजहार करता है। मानसी भी आँख बंद करके उसकी बाँहों में कसकर लिपट जाती है और उसके प्यार को स्वीकार कर लेती है। इसके आगे मानसी उसे ऐसा करने से रोक देती है और कहती है कि

ऐसे संबंध शादी के बाद ही बनाना उचित होता है। तुम प्रेम और वासना में अंतर समझो और अपने मन को नियंत्रित रखो। यह शाम राकेश के लिए यादगार बन गयी थी। वह घर जाकर अपनी माँ को अपने प्रेम के संबंध में बताता है। उसकी माँ को बहुत खुशी होती हैं और वे यह बात उसके पिताजी तक पहुँचा देती है। उसके पिता श्री रामेश्वर दयाल कहते हैं राकेश की खुशी हमारी खुशी है और वे राकेश से इस बारे में बात करते हैं कि हमें मानसी से मिलवाओ फिर हम उसके परिजनों से बात करेंगें। अगले ही दिन राकेश मानसी को लेकर अपने घर जाता हैं और अपने परिवार वालों से मिलवाता हैं। उसकी सुंदरता, व्यवहारकुशलता, विनम्रवाणी एवं संस्कारी स्वभाव राकेश के माता पिता का मन मोह लेते है। मानसी के जाने के बाद वे राकेश से कहते हैं कि उन्हें मानसी बहुत पसंद है और वे उसके माता पिता से शादी के संबंध बात करेंगें परंतु तुम्हारी एम.बी.ए. की पढाई पूरी होने के उपरांत ही विवाह करेंगें।

राकेश यह सुनकर मुस्कुराकर अपनी मौन सहमति देते हुए चला जाता है। रामेश्वर दयाल जी, मानसी के पिताजी से संपर्क करते हैं और उन्हें अपना परिचय देते हुए राकेश और मानसी के प्रेम संबंध के बारे में बताते हैं और उनसे राकेश के लिए मानसी का हाथ माँगते है। मानसी के पिताजी कहते हैं कि मानसी एवं अपने परिवार से विचार विमर्श के उपरांत ही आपको जवाब दूँगा। मैं आपका आभारी हूँ कि आपने स्वयं संपर्क करके मुझे सारी बातों से अवगत कराया। मानसी के पिताजी उसे तुरंत फोन करके घर आने के लिए कहते हैं। मानसी दूसरे दिन आने के लिए कह देती हैं। इसके बाद वह यह बात राकेश को बताती है और अगले दिन अपने घर के लिए रवाना हो जाती हैं। घर में उसके माता पिता उससे इस संबंध के विषय में पूछते हैं और साथ साथ यह बात भी पूछते हैं कि क्या तुमने उसे अपने बीते हुए कल के बारे में बता दिया है ? मानसी कहती हैं कि हाँ मैंने सबकुछ बता दिया है। इसके बाद उसके पिताजी पूछते है कि क्या तुम इस विवाह के लिये पूरी तरह से तैयार हो ? मानसी हाँ

कह देती है। मानसी की माँ कहती है कि तुम बहुत भाग्यवान हो कि तुम्हें इतना अच्छा परिवार मिल रहा है हमने इनके बारे पूरी जानकारी प्राप्त कर ली हैं। तुम बहुत सुखी रहोगी और हमारी चिंता भी खत्म हो जायेगी। इसके बाद मानसी के पिताजी बहुत प्रसन्नतापूर्वक अपनी सहमति रामेश्वर दयाल जी को देते हैं। रामेश्वर दयाल जी उन्हें अपने घर आने के लिए आमंत्रित करते हैं। दो दिन पश्चात मानसी के माता पिता रामेश्वर दयाल जी के घर आते हैं और उनसे बातचीत के दौरान विवाह की तिथि के लिए पूछते हैं तब रामेश्वर दयाल जी कहते हैं कि राकेश का एम.बी.ए. का अंतिम वर्ष है और उसकी पढाई में कोई व्यवधान ना हो इसलिये हम उसकी एम.बी.ए. की पढाई पूरी होने के उपरांत ही उसकी शादी करेंगें। रिश्ता पक्का होने की खुशी में हम एक छोटी सी पार्टी रख रहे हैं।

रात में सोते समय राकेश सोचता है कि मानसी ने तो अपने जीवन को एक खुली किताब के समान मुझे बता दिया है परंतु मैंनें उसे अपनी बीती हुयी जिंदगी के विषय में कुछ भी नहीं बताया। वह मेरे उपर असीम विश्वास करती है और उसे मेरे द्वारा मेरे अतीत के विषय में कुछ भी ना बताना क्या धोखा नहीं हैं ? इतना सोचते सोचते वह निर्णय लेता है कि मैं अभी जाकर उसको अपने बीते हुए जीवन के विषय में सच सच बता दूँ। इसके बाद भी यदि उसका मन मुझे स्वीकार करता है तो ठीक है अन्यथा उसके साथ बिताये हुए समय को जीवन के स्वर्णिम दिन समझकर याद रखूँगा।

वह तुरंत मानसी को फोन करता है और कहता है मैं तुम्हें कुछ बहुत ही जरूरी बात बताना चाहता हूँ। मानसी कहती है कि ठीक है अभी रात हो चुकी है हम कल सुबह बात करेंगें। राकेश रातभर इस उधेडबुन के कारण सो नहीं पाता है। सुबह होते ही वह तैयार होकर मानसी के पास पहुँच जाता है और उसको हॉस्टल से लेकर अपने गेस्ट हाउस चला जाता है। राकेश उससे कहता है कि तुमने तो अपने अतीत के विषय में सब कुछ खुलकर बता दिया है परंतु तुमने

मेरे अतीत के विषय में कुछ नहीं पूछा तो मानसी कहती है मुझे तुम्हारे बारे में सबकुछ पता है। तुमने मुंबई में क्या किया इसकी भी मुझे पूरी जानकारी है। यह सुनकर राकेश पसीने पसीने हो जाता हैं और पूछता है कि तुम्हें कैसे पता और किसने तुम्हें बताया ?

मानसी कहती है कि आनंद ने यह सब बातें पल्लवी को बताई और बुरा मत मानना आनंद ने मुझे तुमसे पहले ही शादी करने का प्रस्ताव दिया था परंतु मैंने उसे विनम्रतापूर्वक ठुकरा दिया था। मेरे मन में शुरू से ही तुम्हारे प्रति चाहत थी और मैंने सोच रखा था कि यदि तुम्हारे साथ विवाह नहीं हो सकेगा तो मैं कही विवाह नहीं करूँगी। यह बात मैंने आनंद को पल्लवी के माध्यम से बता दी थी और मेरे ना करने के कारण पल्ल्वी आनंद के समीप आ पायी। मैंने जीवन को बहुत नजदीक से देखा है तुम्हारा ये जो शौक है ये महज एक जवानी का उतावलापन है वरना तुम एक गंभीर, सभ्य एवं सच्चे व्यक्ति हो। मुझे पूर्ण विश्वास है कि मुझे पाने के बाद तुम किसी और की तरफ ध्यान नहीं दोगे। मैने इन बातों को इसलिये भी नजरअंदाज कर दिया कि तुम अकेले दोषी नहीं हो, तुम्हारे साथी आनंद और गौरव भी इसमें भागीदार है। इतना सुनकर राकेश आश्चर्यचकित हो जाता है। मानसी उसे मुस्कुराते हुए कहती है कि मैं तुम्हारे लिए टिफिन में नाश्ता बनाकर लायी हूँ, चलो हम साथ बैठकर नाश्ता कर लें। नाश्ते के उपरांत जब राकेश मानसी का हाथ पकडकर कहता है कि आज मेरा मन हल्का हो चुका है कल रात से यह सब सोचते सोचते मुझे नींद नहीं आयीं। आज मैं तुमसे वादा करता हूँ कि अब किसी और लड़की से मैं संपर्क नहीं रखूँगा।

अगले दिन श्री रामेश्वर दयाल द्वारा एक शानदार पार्टी का आयोजन किया जाता है जिसमें शहर के सभी गणमान्य नागरिकों के साथ साथ, रिश्तेदार, दोस्त आदि आमंत्रित थे। मानसी की सुंदरता को देखकर सभी लोग उसकी तारीफ कर रहे थे। अब गौरव व आनंद ने भी अपने जीवन में विवाह करके स्थायित्व देने

का निर्णय कर लिया। गौरव ने अपनी अभिलाषा आरती को व्यक्त की। वह बोली कि मित्रता और शादी दो अलग अलग बातें होती है। शादी जीवन भर का साथ है और इस दिशा में मैंने अभी कुछ नहीं सोचा है। पल्लवी आनंद से इस विषय में कहती है कि तुम अतीत में भी कुछ लड़कियों को प्यार करते थे जिन्हेंने तुम्हें कुछ समय पश्चात छोड दिया। मुझे तुम्हारी सब हरकतों के बारे में पता है यदि मैं तुमसे शादी करती हूँ तो मुझे स्वयं विश्वास नहीं है कि यह कब तक निभेगी ? इसलिये यदि तुम अपनी आधी जायदाद मेरे नाम कर दो तो मैं तैयार हूँ ? यह सुनकर आनंद हतप्रभ हो जाता है और मन में सोचता है कि राकेश कितना भाग्यवान है जिसे मानसी जैसी लड़की मिल गयी। आनंद और गौरव जब आपस में मिलते हैं तो अपनी अपनी व्यथा बताते है। गौरव उससे पूछता है कि यह लड़कियों वाली बात जो तुमने मुझे भी कभी नहीं बतायी, यह क्या है ? आनंद कहता है कि तुम्हें विस्तार से बताता हूँ।

पहली घटना आज से 5 वर्ष पूर्व की है। मैं एक दिन अपने मित्र हरविंदर सिंह के कार्यालय में बैठकर उनसे व्यापारिक चर्चा कर रहा था। उसी समय एक सुंदर महिला जो उनके पडोस के दूसरे ऑफिस में काम करती थी उसे देखकर मैंने हरविंदर सिंह से पूछा कि यह सुंदर महिला तो किसी अभिनेत्री के समान है। उसकी चाल ढाल में गजब का आत्मविश्वास झलकता है। यह कौन हैं ? उसने बताया कि इसका नाम कामिनी है और ये एक आर्किटेक्ट है एवं बगल के ऑफिस में काम करती है। यह किसी को अपने पास भी नहीं फटकने देती है और अत्यंत अहंकारी किस्म की है। इससे दोस्ती करना तो दूर बात करना भी बहुत खतरनाक है। गौरव कहता है कि ऐसे लोगों से दोस्ती करने में तो और मजा आता है। हरविंदर ने कहा कि ठीक है इससे दोस्ती करके दिखाओ तो तुम्हें मान जाऊँगा।

मैं दूसरे दिन अपने घर का नक्शा लेकर आया और हरविंदर से कहा कि मैं उसके ऑफिस जा रहा हूँ। वह बोला संभलकर बात करना धोखे से भी मुँह से

कोई ऐसी वैसी बात निकल गई तो तुम्हें अपमानित होना पड जायेगा। मैं उसके ऑफिस में जाकर उससे मिला और अपना नक्शा निकालकर उसे देकर मैंने पूछा कि मैं अपने घर को आधुनिक रूप देना चाहता हूँ, क्या आप इसकी रूप रेखा बना सकती है ? वह बोली कि यह काफी कठिन काम है और खर्च भी बहुत होगा क्योंकि पुराने मकान के आधुनिकीकरण में कभी कभी काफी खर्च हो जाने के बाद भी उसका वह स्वरूप नहीं आ पाता जिसकी हम अपेक्षा करते है। इससे अच्छा तो नये मकान का निर्माण कर लेना है। मैने कहा कि यह मेरा पैतृक मकान है एवं मैं इस घर को नहीं छोड सकता हूँ। इस प्रक्रिया में जो भी खर्च होगा वह मुझे मंजूर हैं। उसने कहा कि अच्छा ठीक है मैं आपकी जगह देखकर और आपकी आवश्यकताओं को जानकर ही कुछ बता पाऊँगी। मैं आज शाम को ही आप के यहाँ आ रही हूँ, आप अपनी जरूरतों को लिखकर तैयार रखिये।

वह अपने निर्धारित समय पर शाम को आ गयी। उसके साथ उसकी पूरी टीम थी। उन्होंने लगभग एक घंटे में सब देखकर अपनी रिपोर्ट कामिनी को दे दी और उसने रिपोर्ट देखकर मेरी आवश्यकताओं को जानकर कहा कि आप जैसा चाहते हैं वैसा बनाने में काफी खर्च आयेगा। यह सुनकर गौरव ने कहा कि ठीक है आप खर्च की चिंता मत कीजिए बस मुझे मेरी अपेक्षा के अनुरूप ही घर का आधुनिकीकरण चाहिए। इस प्रकार मेरा उससे मिलना प्रायः हर दूसरे तीसरे दिन होने लगा। एक दिन मैंने उसे इस काम के लिए पचास हजार रू. अग्रिम के तौर पर दे दिये।

मैं मन ही मन उसे प्यार करने लगा था और उससे शादी करने का सपना देखने लगा। मेरे भीतर हुये इस परिवर्तन के कारण अब उसका व्यवहार बहुत विनम्र और धीरे धीरे मेरे प्रति आकर्षित होने लगा था। मैं इस बात का फायदा उठाकर उसके और करीब जाने की कोशिश करने लगा। अब धीरे धीरे हम दोनों के बीच में मकान की बातें कम और इधर उधर की बातें ज्यादा होने लगी थी।

अब हम लोग अक्सर रेस्टारेंट में भी मिलने लगे। एक दिन हम लोग व्हिस्की पीकर आपस में प्रेम पर चर्चा कर रहे थे। मैंने उसे कहा कि मैं तुम्हें प्यार करता हूँ और तुमसे शादी करना चाहता हूँ। उसने कहा कि मैं भी आपसे प्यार करने लगी हूँ। इस प्रकार हम एक दूसरे के साथ प्यार के संबंध में बंध गये और हमारी अंतरंगता भी बढती गयी। एक दिन हम लोग एक दूसरे में खोकर सारी मर्यादाओं को पार कर गये।

कुछ सप्ताह ऐसे ही आनंद में बीते। एक दिन उसने मकान के आधुनिकीकरण के संबंध में नक्शा देते हुये कहा कि इसमें लगभग एक करोड़ रू. का खर्च आयेगा। उसी समय इत्तफाक से मेरे कारखाने में मजदूरों ने हडताल कर दी और सब कामकाज ठप्प हो गया। मैंने अनुशासनहीनता व अवैधानिक हडताल के कारण लगभग 100 कर्मचारियों को नौकरी से बर्खास्त कर दिया और उनको भुगतान में मुझे बहुत बडी राशि देनी पडी। इस कारण मैंने मकान के आधुनिकीकरण की बात एक वर्ष के लिये स्थगित कर दी और इन बदली हुई परिस्थितियों के विषय में कामिनी को अवगत करा दिया। यह सुनकर उसका चेहरा पीला पड गया। वह उस समय तो कुछ नहीं बोली परंतु उसका व्यवहार उसके बाद एकदम से मेरे प्रति बदल गया और कुछ दिनों के बाद उसने मुझे फोन पर कहा कि अब तुम मुझसे एक साल बाद मिलना जब तुम्हें मकान का आधुनिकीकरण करना हो। मैंने उसे अपनी बात समझाने का बहुत प्रयास किया परंतु वह किसी भी तरह से नहीं मान रही थी। एक दिन मुझे हरविंदर ने बताया कि आजकल वह किसी और लड़के साथ अक्सर दिखती है। जब मैंने सच्चाई पता कि तो मुझे बहुत झटका लगा यह सुनकर कि वह सिर्फ रूपये के लिये ही मेरे नजदीक आयी थी। जिस दिन उसे पता हुआ कि हडताल के कारण मुझे काफी नुकसान हुआ है और किसी भी किस्म के अनावश्यक खर्च को मैं वहन नहीं कर सकता हूँ तो वह मुझे छोडकर चली गयी। इस बात का दुख मुझे

काफी समय तक रहा कि उसके प्यार में वशीभूत होने कारण उसे पहचानने में काफी भूल की।

आनंद ने दूसरी घटना बताया, यह वृतांत भी आज से चार वर्ष पुराना है। मैं अपने मित्र नंदलाल के साथ अरूणाचल प्रदेश घूमने के लिये गया था। वहाँ पर तवांग से पहले एक शहर में हम लोग रात्रि विश्राम के बाद तवांग के लिये टेक्सी से रवाना हुये। यह रास्ता बहुत ही कठिन एवं दुर्गम है जो कि एक बीस किलोमीटर लंबी बर्फ से ढकी हुयी झील के उपर से जाता है। अरूणाचल प्रदेश में पब्लिक टांसपोर्ट की सुविधायें बहुत सीमित हैं इसलिये अधिकांश विद्यार्थी रास्ते में चलने वाली यात्री गाडियों से लिफ्ट मांगकर अपने गंतव्य तक पहुँचते हैं। हमें भी रास्ते में जाते समय दो लड़कियों ने हाथ देकर रोका और लिफ्ट माँगी। हमारे हाँ कहने पर वे लड़कियाँ गाडी में बैठ गयी। नंदलाल जी के पूछने पर उन्होंने बताया कि उनके नाम चंद्रकांता और श्रीकांता हैं और वे बी.कॉम की छात्राएँ हैं एवं कॉलेज जा रही है। उन्होंने हम लोगों से वहाँ आने का प्रयोजन पूछा तो हमारे नंदलाल जी ने मजाक करते हुए कहा कि मेरे दोस्त आनंद जो मेरे साथ है ये विवाह के लिये लड़की की खोज कर रहे हैं और इसी संबंध में यहाँ आये हुये है। चंद्रकांता ने पूछा कि आपको किस तरह की लड़की चाहिए ? नंदलाल बोले कि आपके जैसी सुंदर और पढी लिखी चाहिए।

चंद्रकांता मेरी तरफ देखकर बोली कि मैं आपको कैसी लगती हूँ। यह सुनते ही नंदलाल जी चौंक गये और चुप हो गये। मैंने बात को आगे बढाया और कहा कि क्या आप मुझे पसंद करती हैं ? उसने बेधडक कहा कि हाँ। नंदलाल जी बोले कि आप इनके साथ शादी करेंगीं। वह बोली कि यदि ये तैयार हो तो। चंद्रकांता ने कहा कि मेरे पास स्वयं की इतनी संपत्ति और कमाई है कि इनका खर्च मैं आसानी से उठा लूँगी। मेरे पास कीवी के दस बगीचे हैं। नंदलाल जी ने कहा कि यदि हम लोग हाँ कहते हैं तो इस संबंध में तुम्हारे माता पिता से बात करनी होगी। वह बोली कि उनसे बात करने की जवाबदारी मेरी है आपकी नही।

मैं बौद्ध पद्धति से विवाह करूँगी। ईसाई या हिंदू परंपरा से नही। मैंने पूछा कि ऐसा क्यों ? तो वह बोली कि हिंदू और ईसाई पद्धति में तलाक देना या लेना बहुत कठिन होता है। मैं छः माह तक विवाह की गैरेंटी दूँगी इसके बाद यदि हमारी निभी तो आगे साथ रहने का सोचेंगे अन्यथा हम दोनों इस बंधन से मुक्त हो जायेंगे। इतनी बात करते करते उनका कॉलेज आ गया और वह हमें धन्यवाद देती हुयी बोली कि मैं आपके जवाब और लौटने की प्रतीक्षा करूँगी साथ ही साथ उसने मेरा मोबाइल नंबर भी ले लिया था और अपना नंबर मुझे दे दिया था।

टैक्सी आगे बढने पर ड्राइवर ने इतनी ठंड में भी अपना पसीना पोंछा और बोला कि आप लोगों ने बहुत होशियारी से बात की कि आप सोचने समझने के बाद में हाँ कहेंगें। यदि आप धोखे से भी हाँ कह देते तो आपकी बात पक्की मानी जाती और आप इस जगह से आगे नहीं जा पाते। आप शायद नहीं जानते हैं कि यह यहाँ के एक प्रभावशाली व्यक्ति की बेटी है और ना जाने कैसे वह आपसे ऐसी बात कर गई। आप के वापिस आने पर आप को उसे बताना होगा कि आप उससे विवाह करेंगें की नही। यदि वह आपसे नाराज हो गई तो आपको काफी दिक्कतें हो सकती हैं। यदि आप सुरक्षित रहना चाहते हैं तो तवांग से ईटानगर के लिये हेलीकॉप्टर सेवा है आप उससे ईटानगर पहुँच जाए और वहाँ से गुवाहाटी चले जाए। हम लोगों ने तवांग घूमने के उपरांत टैक्सी ड्राइवर के सुझाव के अनुसार हेलीकॉप्टर से ईटानगर पहुँचे और वहाँ से हवाई सेवा द्वारा गुवाहाटी शाम तक पहुँच गये। दूसरे दिन चंद्रकांता का फोन आया कि आप लोग अभी तक वापिस नहीं लौटे हैं क्या ? मैं आप लोगों का इंतजार कर रही हूँ। मैंने उसे बताया कि मैं तुम्हारी परंपरा के अनुसार शादी करके वहाँ नहीं रह सकता। मैं तुमसे क्षमा चाहता हूँ और तुम्हारे सुखी और उज्जवल भविष्य की कामना करता हूँ।

अब मैं तीसरा वृतांत मेरी चीन की यात्रा के दौरान घटित हुआ है उसे बताता हूँ। मैं दो वर्ष पूर्व अपने उद्योग के आधुनिकीकरण के लिए मशीनों को देखने चीन गया हुआ था। अपना कार्य समाप्त करने के पश्चात मैं गंजाऊ से बीजिंग ट्रेन से जा रहा था। मेरी सहयात्री एक 24 साल की लड़की थी जो कि अंग्रेजी की टीचर थी। उसने अपना नाम liyutasing बताया एवं मुझसे बात करना आरंभ किया और मुझसे पूछा कि आप किस देश से हैं और यहाँ किस कारण आये हैं ? मैंने उसे बताया कि मैं भारतीय हूँ और उद्योग के सिलसिले में यहाँ आया हुआ था। अब मैं अपना काम समाप्त करके वापिस जाने के पहले बीजिंग और शंघाई शहर घूमने के लिये जा रहा हूँ। यह सुनकर उसे अचरच हुआ कि आप अकेले कैसे घूम रहे हैं ? आप किसी दुभाषिये को साथ में ले लें तो आपको बहुत सुविधा हो जायेगी।

शाम का समय हो गया था मैंने अपनी स्कॉच की बॉटल निकालकर उस लड़की से भी औपचारिकतावश सेवन के लिए पूछा। उसकी सहमति के उपरांत मैंने दो पैग बनाए और एक उसे दे दिया। उसने बडी अदा के साथ वह पैग अपने हाथ में लिया और चीयर्स कहकर आँखों में आँखें डालकर मुस्कुराते हुए पीना शुरू किया। यह मेरी चीन की पहली यात्रा थी और मैंने बीजिंग में रूकने का इंतजाम नहीं करवाया था। उस लड़की ने मुझे बताया कि बीजिंग इतना व्यस्त शहर है कि वहाँ अच्छी होटलों में बिना बुकिंग के रूम मिलना बहुत मुश्किल है। यह कहकर उसने तुरंत मोबाइल से बीजिंग के एक होटल में बुकिंग करवा दी और मुझे पता व होटल फोन नंबर आदि दे दिया। हम लोग की आपस में बात करते करते काफी घनिष्ठता हो गई। उससे मुझे पता चला कि चीनियों को भारतीय वीजा मिलने में बहुत कठिनाई होती है। यात्रा के दौरान बातें बातें करते करते हम लोग सेक्स के विषय में भी वार्तालाप करने लगे। मैंने उससे पूछा कि चीन की संस्कृति में आज के समय में सेक्स का क्या स्थान है ? उसने मुस्कुराते हुए कहा कि जब रूपया आता है तो धर्म और संस्कृति भुला दी जाती हैं। आज की

पीढी पाश्चात्य सभ्यता की दीवानी है और नशा और सेक्स में डूबती जा रही हैं। अधिकांश युवा शादी से पहले ही सेक्स संबंध बना रहे हैं। मैंने उससे पूछा कि इस संबंध में तुम्हारी व्यक्तिगत तौर पर क्या सोच हैं ? उसने मुस्कुराते हुए कहा कि मैं इन संबंधों को बुरा नहीं मानती हूँ और बात करते करते हमारे तीन चार पैग समाप्त हो चुके थे, वह भी नशे में झूम रही थी। ऐसी हालत में हम दोनों एक दूसरे का चुंबन लेने लगे और हमारे बीच की दूरियाँ कब खत्म हो गयी हमें पता ही नहीं चला कि हम एक दूसरे के आगोश में खो गये। सुबह होने पर उस लड़की ने कहा कि तुम होटल में ना रूककर मेरे साथ मेरे घर में रहो। मैंने उसे विनम्रतापूर्वक मना कर दिया और होटल में ही रूका। उस लड़की ने मुझे बीजिंग घूमने में काफी मदद की और मेरे साथ शंघाई भी गई। जीवन की वो पाँच रातें अविस्मरणीय है। हम दिन भर घूमते और रात में एक दूसरे के आगोश में सो जाते। वह मुझे विदा देने के लिये शंघाई एयरपोर्ट तक आई और मुझे एक तोहफा दिया जो आज भी मेरी कलाई पर घडी के रूप में बंधा हुआ है। मैंने भी उसे एक हीरे अंगूठी अंगुली में पहनाते हुए भारत आने का आमंत्रण दिया।

एक और बहुत ही मजेदार घटना चीन के शेनजिंग शहर में घटी उसके विषय में बता रहा हूँ। एक बार मैं अपने मित्र हरीश रावत के साथ उसके किसी व्यापारिक कार्य से हांगकांग गया था। हमारे पास चीन का भी वीसा था। हांगकांग से 2 घंटे की दूरी पर शेनजिंग शहर बसा हुआ है। इस शहर की दास्तान यह है कि आज से 25 साल पूर्व, यह गरीबी की मार झेल रहा था। यहाँ के निवासी अपना पेट भरने के लिए समुद्री मार्ग से तैरकर हांगकांग आते थे। आज इस शहर की हालत यह है कि यह विश्व के धनाढ्य शहरों में से एक हैं। इतनी तब्दीली वहाँ के पूर्व मेयर की सोच के कारण हुई जिन्होंने इस शहर में निवेश के लिए अंतर्राष्ट्रीय निवेशकों के लिये समस्त टैक्स समाप्त कर दिये और इसे करमुक्त क्षेत्र घोषित कर दिया। इसका परिणाम यह हुआ कि दस वर्ष

के भीतर ही विश्व की बडी बडी कंपनियाँ यहाँ पर उत्पादन हेतु कारखाने लगाने लगी। इस कारण बेरोजगारी खत्म हो गयी और हांगकांग के व्यापारी अपने व्यापार के संदर्भ में शेनजिंग आने लगे। धन के साथ साथ यहाँ पर वेश्यावृत्ति की भी प्रचुरता हो गयी है। एक बार हम लोग रात में शहर घूम कर थके मांदे होटल वापिस पहुँचे। मेरे साथी हरीश ने थकान उतारने के लिए मैनेजर से पूछा कि क्या आपके यहाँ मसाज की सुविधा इस समय उपलब्ध होगी। वह बोला जी हाँ हमारे यहाँ 24 घंटे यह सुविधा उपलब्ध है। हम लोग अपने कमरे में चले गये और हमारे पीछे पीछे 5 लड़कियाँ मसाज सेवा हेतु आ गयी। उन्होंने कहा कि हम लोग में आप पसंद कर लीजिए कि आपको कौन चाहिए। हम लोगों उनमें से दो को पसंद कर लिया। उनके नाम hashimotofsulin और sprikingvc थे। उन्होंने मसाज शुरू की और उन्होने इतनी अच्छी तरह से मसाज की कि हम लोग कुछ ही देर पश्चात सो गये। रात में नींद खुलने पर देखा कि वे लड़कियाँ हमारे पास ही सो रही थी। मैं हडबडाकर उठा और उन्हें भी उठाया। वे सॉरी कहकर उठ गयी और पुनः मसाज करने लगी। मैंने उन्हें इशारे से पुनः हम लोगों के पास सो जाने के लिए कहा और वे इसके लिए सहर्ष तैयार हो गयी परंतु उन्होंने अलग से रूपयों की माँग की जिसे हम लोगों ने स्वीकार कर लिया। अब रात भर हम लोग एक दूसरे के आगोश में इस तरह सोये कि सुबह उठने पर हमारी सारी थकान दूर हो चुकी थी और हम अपने आपको एकदम तरोताजा महसूस कर रहे थें। हमे अगले ही दिन वापिस हांगकांग पहुँचना था। यदि हमे इस प्रकार की सुविधा के बारे में पहले से पता होता हम जरूर वहाँ दो तीन दिन और रूककर जीवन का आनंद लेते।

आनंद और गौरव के बीच वार्तालाप चल ही रहा था तभी पल्लवी का आनंद के पास फोन आता है कि किसी जरूरी कार्य से वह उससे मिलना चाहती है। आनंद गौरव को बताता है और पल्लवी से मिलने के लिये हॉस्टल चला जाता हैं। वहाँ पर वह उसका इंतजार ही कर रही थी और वह उसकी कार में बैठकर कहीं शांत

जगह जाने का अनुरोध करती है। आनंद कहता है कि तुम्हें जो भी बात कहनी है यही पर बता दो। पल्लवी कहती है कि मेरे माता पिता ने मेरा रिश्ता मेरी सहमति के बाद तय कर दिया है और दो माह बाद ही हमारा विवाह होने वाला है। आनंद पूछता है कि लड़का क्या करता है। वह बताती है कि वह एक बहुत धनाढय परिवार से है और अमेरिका में अपनी पढाई कर रहा है। तुम बुरा मत मानना, तुम्हारे साथ मैंने बहुत अच्छे दिन मित्रता में बिताए हैं, इसकी यादें मुझे हमेशा रहेंगी। अब तुम भी किसी अच्छी लड़की को देखकर अपना विवाह करके व्यवस्थित जिंदगी बिताना प्रारंभ कर दो। आनंद को गहरा सदमा पहुँचता है। वह मन ही मन यह सोच रहा था कि पल्लवी के साथ ही उसका रिश्ता तय हो जाये परंतु यहाँ तो पूरा मामला ही बदल गया। वह पल्ल्वी को उसके सुखद भविष्य की शुभकामना देता हुआ उसे हॉस्टल छोडकर चला जाता हैं। आनंद वहाँ से सीधे गौरव के पास जाता है और उसे सारी बातें बताता है। यह सुनकर गौरव सोचता है कि मुझे भी आरती से साफ साफ बात कर लेना चाहिए। गौरव आनंद से कहता है कि तुम राकेश और मानसी को इससे अवगत करा दो और स्वयं आरती से मिलने चला जाता है।

गौरव आरती को हॉस्टल से लेकर एक रेस्टारेंट में जाता है और उसे पल्लवी और आनंद के बीच हुई बातचीत को बताता है। आरती कहती है कि मुझे सब मालूम हैं उसने यह रिश्ता तय होने के पहले मुझसे सलाह माँगी थी। यह सुनकर गौरव को बडा आश्चर्य होता है और वह कहता है कि तुमने यह बात मुझे क्यों नहीं बतायी ? आरती कहती है किसी की निजी बातों को सबको नहीं बताना चाहिए। गौरव उसे सीधा पूछता है कि तुम्हें मालूम है कि मैं तुम्हें कितना चाहता हूँ और तुमसे शादी करने की इच्छा रखता हूँ। यह सुनकर आरती मुस्कुरा कर कहती है कि मेरे एक प्रश्न का सही सही उत्तर देना। मुझे तुम्हारी बीती हुयी जिंदगी के बारे में सब कुछ मालूम है। तुम्हारे किन किन के साथ शारीरिक संबंध रहे है इसकी भी मुझे जानकारी है। यदि मेरे संबंध भी

तुम्हारे ही जैसे अन्य पुरूषों के साथ रहते तो क्या तुम मुझसे विवाह करते ? यह प्रश्न सुनकर गौरव चुप रह जाता है। आरती कहती है कि तुम्हारी चुप्पी बता रही है कि तुम मुझसे विवाह नहीं करते। गौरव चुपचाप सिर झुकाए सुनता रहता है। अब आरती साफ साफ कह देती है कि मित्रता और विवाह, ये दो अलग अलग बातें हैं। विवाह सारे जीवन का बंधन होता है। मैं तुम्हें साफ साफ बता देती हूँ कि मेरा तुम्हारा विवाह संभव नहीं हैं। बेहतर यही होगा कि तुम कहीं और प्रयास करो और विवाह के लिये मुझे भूल जाओ। तुम मेरे अच्छे मित्र रहे हो और आगे भी रहोगे ऐसी मुझे आशा है। यह सुनकर गौरव स्तब्ध रह जाता हैं और आरती को वापस छोडकर अपने घर चला जाता है। आनंद राकेश को फोन पर ही सारी बातें बताता है। राकेश आनंद को सांत्वना देता है और कुछ देर बाद मानसी को फोन करता हैं। मानसी कहती है कि मुझे यह सब कुछ पहले से पता था परंतु किसी की निजी जिंदगी में दखल देना उचित नहीं है इसलिये मैंने कुछ नहीं बताया।

मुझे मालूम था कि एक दिन ऐसा होना ही था। पल्लवी के दिमाग में एक बात बैठी हुयी है कि वो एक बहुत सुंदर लड़की है एवं उसका विवाह अरबपति खानदान में हो सकता है। उसको भौतिक सुखों की बहुत चाह है। वह चाहती है कि उसका ऐसे घर में विवाह हो जहाँ पर सभी सुख सुविधाएँ मौजूद हों और वह किसी रानी के समान राज करे। यह उसकी किस्मत है कि उसे ऐसा मनचाहा घर प्राप्त हो गया है। उसका मंगेतर बहुत धनाढय है एवं अपने परिवार का इकलौता बेटा है। अमेरिका में पढाई करते हुए भी वह बहुत शानौ शौकत से रहता है। इन सब बातों के कारण पल्लवी ने आनंद को छोडकर वहाँ रिश्ता करना स्वीकार कर लिया है वरना दोनों खानदानों के बीच में आर्थिक दृष्टिकोण से जमीन आसमान का अंतर है।

आरती एक सुलझी हुयी लड़की है परंतु उसकी निकटता मेरे से कही ज्यादा पल्लवी के साथ है। वे दोनों बचपन की सहेलियाँ हैं। वह अपनी महत्वपूर्ण

निर्णयों में पल्लवी की राय हमेशा लेती है। उसने भी गौरव से शादी नहीं करने का फैसला लेने में पल्लवी से सलाह ली होगी। इतना सुनकर राकेश चौंक जाता है और मानसी से पूछता है कि क्या आरती भी गौरव से शादी नहीं करेगी ? मानसी कहती है कि हाँ आरती भी किसी दूसरी जगह शादी करने की इच्छा रखती है। इसी समय गौरव का भी फोन आ जाता है और वह सब बातें राकेश को बता देता है। यह सुनकर राकेश को बहुत दुख होता है और वह सांत्वना देकर बाद में मिलने के लिए कहता है। मानसी, राकेश को समझाती है कि देखो हम इस गंभीर मामले में कुछ भी नहीं कर सकते है। आरती और पल्लवी दोनों समझदार है और अपने जीवन का निर्णय लेने में स्वतंत्र एवं सक्षम है।

कुछ दिनों के बाद आनंद और गौरव मिलते हैं और एक दूसरे को सांत्वना देते हुए अपनी व्यथा को भूलने का प्रयास करते है। आनंद कहता है कि गौरव छोडो इन सब बातों को हम दोनों के जीवन में बहुत लड़कियाँ आई और चली गयी। अब हम इन घटनाओं को वापिस स्मरण करते हुए अपनी व्यथा को कम करने का प्रयास करें। गौरव कहता है कि हाँ ठीक है। आनंद तुम अपने जीवन में घटी चुनिंदा घटनाओं को बताओ।

आनंद कहता है कि गंगा और जमुना नाम की दो लड़कियाँ बी.कॉम करने के लिये उसके कॉलेज में एडमिशन लेती है। वे चेहरे से तो साधारण भी परंतु उनका शारीरिक गठन बहुत सुडौल एवं आकर्षक था। वे हमारे कॉलेज में सबसे सुंदर लड़कियों के रूप में मशहूर थी। वे प्रतिदिन कक्षा के एक लड़के को देखकर मुस्कुराते हुए उनसे मित्रता करने के बाद उसके साथ रेस्टारेंट, सिनेमा आदि घूमकर कुछ खरीददारी भी करती थी। उनका यही काम था कि लड़कों को फसाना और उनसे रूपये खर्च कराना। ऐसा वे कई लड़को के साथ कर चुकी थी। एक दिन उन्होंने मेरे उपर भी जाल फेंका। मैंने उन्हें रेस्टारेंट में खाना खिलाया और पिक्चर दिखाने के बाद वे खरीददारी के लिये कहने लगी तो मैंने कहा कि पहले एक दोस्त के यहाँ चलते उसके बाद उसे साथ लेकर खरीददारी

के लिय जायेंगे क्योंकि उसे बाजार का काफी अनुभव है। वे इसके लिए सहर्ष तैयार हो गई इसके बाद हम लोग अपने मित्र सौरभ के यहाँ चले गये। वहाँ बात करते करते मैंने जमुना को एक जरूरी बात बताने के लिये कहकर उसे दूसरे कमरे में ले गया। मैंने उससे कहा कि जमुना मैं तुम्हें बहुत चाहता हूँ और तुम्हारे साथ शादी करना चाहता हूँ। वह बोली कि क्या ऐसा हो सकता है ? मैंने कहा कि हाँ जरूर हो सकता है यदि तुम तैयार हो तो तुम्हारे माता पिता से अपने माता पिता की बात करवा देता हूँ। मेरी गंभीरता को देखते हुए वह शादी के सपनों में खो गई। मैंने उसका हाथ पकडकर उसे खींचकर अपने पास सोफे पर बैठा लिया और उसके होंठो पर अपने होंठ रख दियें। उसने कोई एतराज नहीं किया और खुद ही मेरे और नजदीक आ गई। यह देखकर मेरी हिम्मत बढ गई। मैं उसे खींचकर बिस्तर पर ले आया और हम दोनों एक दूसरे का प्यार करने लगे। प्यार करते करते स्वप्निल भविष्य की कामनाओं में खो गये। गंगा वहाँ बैठी हुयी बार बार सौरभ से पूछ रही थी कि ऐसी क्या बात है जो जमुना को इतना समय लग रहा है। सौरभ होशियार था उसने बातों बातों में गंगा को उलझाए रखा और उसपर धीरे धीरे डोरे भी डालने लगा। कुछ समय बाद हम लोग भी कमरे से बाहर आ गये। गंगा ने पूछा कि ऐसी क्या बात थी जिसको समझने में तुम्हें एक घंटा लग गया। जमुना ने तपाक से उत्तर दिया कि यह हम लोगों की निजी बातें है जिन्हें बताना मैं उचित नहीं समझती। इसके बाद हम लोगों की मुलाकाते होती रहीं व जीवन के इस आनंद का स्वाद हम लोग लेते रहे। कुछ समय पश्चात परीक्षाओं के कारण हमारा मिलना लगभग बंद हो गया था और बाद में पता चला कि उसका रिश्ता कही और पक्का हो गया है।

आनंद ने ताशकंद की घटना के बारे में बताया। वहाँ पर मैं अपने उद्योग से संबंधित कार्य हेतु पिछले माह ही गया था। मैं दिन भर कार्य करने के उपरांत शाम को एक बगीचे में बैठकर विश्राम कर रहा था। वहाँ पर मैंने देखा कि सभी उम्र के लोग अपनी एक एक महिला मित्र के साथ बैठकर गपशप मार रहे थे।

मेरे लिए वह अंजाना शहर था परंतु मन में अभिलाषा जाग्रत हो गयी थी कि काश मेरी भी यहाँ कोई महिला मित्र होती तो मैं अपने आप को अकेला महसूस नहीं कर रहा होता। मैंने वापिस होटल पहुँचने पर एक भारतीय मूल के अस्सिटेंट मैनेजर के पद पर कार्यरत अधिकारी से अपनी मन की बात कही। वह तुरंत बोला कि यह कौन सी बडी बात है। मैं आपको होटल की टैक्सी में एक नाइट क्लब में भिजवा देता हूँ वहाँ पर आपको काफी लड़कियाँ मिलेंगी जो कि दूसरों से मित्रता में रूचि रखती है। आप चुपचाप अपनी टेबल पर बैठ जाइयेगा जिन लड़कियों को भी आपसे मित्रता की रूचि होगी वे स्वयं आपके पास आकर बात करेंगी। इसके लिए आपको उन्हें रूपया देना होगा जो लगभग 100 अमेरिकी डॉलर होगा।

मैं वहाँ जब गया तो एक से एक सुंदर लड़कियों ने आकर मुझसे बातचीत की उनमें से एक मुझे बहुत पसंद आयी। मैंने उसे 100 डॉलर का भुगतान कर दिया। उसके बाद हम लोग एक डेढ़ घंटे डिस्कोथेक में व्हिस्की पीते रहे और डांस का आनंद लेते रहे। रात के 12 बज चुके थे मुझे वापिस अपनी होटल जाना था। मैंने उसे यह बताकर उससे विदा लेने का अनुरोध किया। वह यह सुनकर बोली कि ऐसा कैसे हो सकता है आप तो पूरी रातभर मेरे मेहमान है उसने डिस्कोथेक के बाहर लाकर अपनी कार में अपने पास सामने बैठाया और वह कार चलाती हुयी लगभग आधे घंटे बाद एक अपार्टमेंट में आकर रूकी। उसने मुझे बताया कि यहाँ उसका घर है। हम उसके घर पर पहुँच गये। वहाँ हम लोगों ने एक एक पैग व्हिस्की और पी और उसने टी.वी पर सेक्स की फिल्म लगा दी और मुझे खीचते हुये बिस्तर पर ले गयी। हम दोनों ने रात भर जवानी का भरपूर आनंद लिया। सुबह उसने कहा कि नाश्ता करके जाइयेगा एवं आप जितने दिन भी ताशकंद में हैं शाम को अपना काम निपटाकर मुझे फोन कर दीजियेगा मैं आपको लेने आ जाऊँगी। जब मैंने उससे इस सेवा के भुगतान के लिय पूछा तो उसने विनम्रतापूर्वक कहा कि आप इसका भुगतान तो पहले ही

100 डॉलर के रूप में कर चुके हैं जिसमें आप तीन रातें मेरे साथ बिता सकते है। शाम को अपने कार्य निपटाकर मैंने उसे 6 बजे फोन किया और वह अपने वादे के मुताबिक मुझे लेने आ गई। इस प्रकार तीन रातें उसके साथ मैंने बितायी और वह हसीन पल आज भी याद है। मैंने वापिस आते समय उसे एक सोने की अंगूठी उपहार के रूप में दी जिसे देखकर उसकी आँखों में मेरे लिय असीम प्रेम उमड आया और वह मुझे एयर पोर्ट तक छोडने आयी।

आनंद कहता है कि एक बार मैं अपने व्यापारिक कार्य से बाली (इंडोनेशिया) गया हुआ था। बाली उसे देश का एकमात्र हिंदू आबादी वाला क्षेत्र है। यहाँ पर बहुत से प्राचीन हिंदू मंदिर स्थित है जिनका इतिहास काफी प्राचीन है। मैं दोपहर को भोजन करने के लिए एक रेस्टारेंट में गया था जहाँ एक सुंदर सी महिला मैनेजर थी। मैंने उससे पूछा कि यहाँ पर खरीदने के लिये सबसे बढिया वस्तु कौन सी है ? उसने कहा कि यहाँ पर कपडा काफी सस्ता और अच्छी गुणवत्ता का है। आपको पास ही के मार्केट में कपडे की काफी दुकाने मिल जायेंगी। उसने मुझसे पूछा कि आप कौन है एवं कहाँ से आये है ? मैंने कहा कि मेरा नाम आनंद हैं एवं मैं भारत से हूँ और व्यापारिक सिलसिले में यहाँ आया हूँ। भारत का नाम सुनते ही उसका चेहरा प्रसन्नता से भर गया और उसने मुझसे पूछा कि क्या आपके पास गंगाजल है ? मेरे हाँ कहते ही वह काफी प्रसन्न हो गयी और मुझसे बोली की क्या आप मुझे थोडा सा गंगाजल देंगे। मैने उसका नाम पूछा तो उसने अपना नाम रत्ना बताया। मैंने उसे कहा कि गंगाजल तो होटल में रखा हुआ है आपको मेरे साथ वहाँ चलना होगा। वह इसके तुरंत तैयार हो गई और कहा कि क्या आप मेरे साथ स्कूटर पर बैठना पसंद करेंगें। मैंने उसे हाँ कह दिया। थोडी देर पश्चात हम लोग होटल पहुँच चुके थे। मैंने गंगाजल निकालकर उसे दे दिया, वह खुशी से झूम उठी और कहा कि आज मेरे परिवार की वर्षों की इच्छा पूरी हो जायेगी। मैंने उसे कुछ रूकने और चाय पीने का अनुरोध किया। मेरे अनुरोध पर वह रूक गयी। बातचीत के

दौरान उसने मुझसे पूछा कि आपने यहाँ और क्या क्या घूमा है ? मैंने कहा कि मैं आज ही आया हूँ और अकेला हूँ इसलिये कही नहीं गया। वह तुरंत बोली कि आप मेरे साथ मेरे स्कूटर पर घूमना पसंद करेंगें। यह सुनकर मैं मन ही मन प्रसन्न हो गया और कहा कि ठीक है शाम तक मेरे सारे कार्य पूर्ण हो जायेंगे और उसके बाद आप मुझे जहाँ घुमाना चाहे मैं चल सकता हूँ। शाम को ठीक 6 बजे रत्ना मुझे लेने पहुँच गयी। मैं दो तीन दिन रत्ना के साथ घूमता रहा और हमारी एक साधारण सी मुलाकात अभिन्न मित्रता में परिवर्तित हो गयी। मेरे मन में उसके प्रति प्रेम की भावना जाग्रत हो चुकी थी व मेरे और उसके विचार आपस में काफी मिलते थे। जिस दिन मुझे वापिस लौटना था उस दिन मेरे मन में आया कि इसे अपने मन में प्रस्फुटित प्रेम की भावना से अवगत करा दूँ परंतु ना जाने क्यों उसका मेरे प्रति श्रद्धा एवं विश्वास देखकर यह विचार मन में ही रह गया और वहाँ से ना जाने की इच्छा होते हुये भी मैं वापिस अपने देश रवाना हो गया। आज भी कभी कभी हमारी फोन पर बातचीत हो जाती है।

आनंद आगे कहता है कि दुनिया बडी रंगीन है परंतु इसको देखने के लिए धन की जरूरत होती है। वह एक घटना सुनाता है। एक दिन मैं घूमते घूमते विद्युत मंडल के परिसर में स्थित बाजार में पहुँच गया। वहाँ पर एक ब्यूटी पार्लर भी था जो पुरूष एवं महिला दोनों के लिए था। मैं भी कौतुहलवश अंदर गया। वहाँ पर मैंने देखा कि काऊंटर पर एक बहुत सुंदर लड़की बैठी हुई थी। उसने बडे प्रेम से पूछा कि मैं आपकी क्या सेवा कर सकती हूँ और उसने एक छपा हुआ पत्रक जिसमें उस पार्लर में उपलब्ध सेवाओं की जानकारी थी, मुझे दे दिया। मैंने कहा कि मुझे सबसे अच्छा वाला फेशियल कराना है और इस कार्य को क्या कोई महिला करेगी ? वह बोली की ऐसी सुविधा हमारे यहाँ नहीं है। मैंने उसे धन्यवाद कहते हुए बाहर जाने लगा। मैं दरवाजे तक पहुँचा ही था कि उसकी मधुर वाणी ने मुझे रोक लिया। वह बोली कि आप पहली बार हमारे पार्लर में आये है और मैं नहीं चाहती कि हमारे ग्राहक वापस लौटे इसलिये मैं

आपका फेशियल कर दूँगी। वह मुझे अंदर ले गयी और एक कमरे में जहाँ फेशियल की सारी सुविधा उपलब्ध थी मुझे बैठाया और फेशियल के दौरान काफी बातें हम लोग करते रहे। फेशियल समाप्त होने तक उससे मेरी अच्छी मित्रता हो गई थी। उसका नाम प्रतीक्षा था। अब मैं अक्सर उसके पार्लर जाने लगा और हमारी मुलाकातें और बढ़ने लगी। मैं उसे कभी कभी अपने क्लब भी ले जाने लगा। एक दिन उसने मुझे बताया कि उसे मधुमेह की बीमारी है और वह इससे काफी परेशान है। इस संबंध में वह कई चिकित्सकों से मिल चुकी हैं परंतु अपेक्षित लाभ नहीं हुआ। मैंने उससे कहा कि यदि तुम मेरे साथ मुंबई चल सको मैं वहाँ सबसे अच्छे अस्पताल में पूरी जाँच करवा दूँगा जिससे तुम्हारी बीमारी ठीक हो सकती है। कुछ दिनों के बाद वह मेरे सुझाव को मान गयी और मेरे साथ मुंबई जाने के लिए राजी हो गयी। जिस दिन हमें मुंबई जाना था उसी दिन दोपहर के समय दुर्भाग्यवश उसका एक्सीडेंट हो गया जिसमें वह नहीं बच पायी और दुर्घटनास्थल पर ही उसकी मृत्यु हो गयी थी। मैं बहुत दुखी हुआ और सारा दिन उसकी यादों में खोया रहा। मेरी मजबूरी थी कि उसके परिवार से परिचय ना होने कारण सांत्वना व्यक्त करने के लिए उसके घर भी नहीं जा सका। आज भी उसकी यादें मेरे दिल में बसी है कि यदि वह आज होती तो ब्यूटी पार्लर के क्षेत्र में काफी ऊँचाईयों तक उसका नाम होता।

आनंद आगे एक वृतांत और बताता है। वह कहता है कि यह घटना एक उद्यान की है जहाँ मैं प्रतिदिन टहलने के लिए जाता था। उस समय मैंने एक नया मोबाइल खरीदा था और उसे उपयोग करना मुझे ठीक ढंग से नहीं आता था। एक दिन शाम को टहलते समय मेरे ऑफिस से फोन आया कि एक आवश्यक ई-मेल आपको भेजा गया है कृपया इसे पढकर तुरंत जवाब दे। मुझे उस समय समझ में नहीं आ रहा था कि इस फोन में ई मेल कैसे खोलूँ। मेरे ठीक सामने की बेंच पर तीन युवा महिलायें बैठी हुई थी मैं उनके पास और निवेदन किया कि क्या आप मुझे ई मेल खोलने में मदद करेंगी ? मुझे एक आवश्यक मेल

उसमें आया हुआ है जिसका जवाब अभी देना है। यह सुनकर उनमें से एक लड़की ने मेरा फोन लिया और कुछ देर फोन को देखने और चलाने के बाद उसने मेरा ई मेल खोल दिया। मैं बहुत प्रसन्न हुआ और उसे धन्यवाद देकर उसका परिचय पूछा। उसने मुस्कुराकर कहा कि मेरा नाम शबाना है और मैं एक गृहिणी हूँ। हम सभी पडोसी है और आज पहली बार उद्यान में आये हुये है। मेरे आग्रह पर उन तीनों ने मेरे साथ आइसक्रीम खायी और बातों ही बातों में हमने एक दूसरे के मोबाइल नंबर ले लिये। रात में ग्यारह बजे के लगभग शबाना का फोन आया और बोली कि आप कैसे है और क्या कर रहे है ? मुझे आपसे कुछ काम है। क्या आप कल दिन में मुझसे मिल सकते है ? मैने उसे दूसरे दिन दोपहर में एक रेस्टारेंट में मिलने के लिये कहा। वह ठीक समय पर आई और उसके साथ एक महिला और भी थी जिसका परिचय उसने अपनी बुआ के रूप में दिया। हमारे वार्तालाप के दौरान उसकी बुआ ने मुझसे पूछा कि शबाना आपको कैसी लगी ? मैंने कहा कि बहुत अच्छी। तब उसकी बुआ ने कहा कि आप भी इसे बहुत अच्छे लगते है। अब मैं शबाना के बारे में आपको पूरी बातें बताती हूँ। यह एक हिंदू लड़की है और बेवकूफी में इसने अपनी शादी एक मुस्लिम लड़के के कर ली जिसकी पहले से ही एक पत्नी है। आपको मालूम ही है कि दोनों धर्मों की मान्यतायें कितनी भिन्न है। अब यह वहाँ पर सांमजस्य नहीं बना पा रही है और अब यह वापिस हिंदू धर्म अपनाकर किसी हिंदू के साथ शादी करना चाहती है। क्या आप इसमें इसकी मदद कर सकते है ? मैं इसकी बुआ हूँ और मैं भी हिंदू थी, एक मुस्लिम डॉक्टर ने मुझे झूठे आश्वासन देकर अपने साथ रख लिया और अब शादी करने से इंकार कर रहा है। यह सुनकर मैं चौंक गया। उस दिन बातों ही बातों में हम सबने वाइन पी और उसकी बुआ से मैंने पूछ कि मैं अकेले में शबाना से कुछ बात करना चाहता हूँ। बुआ ने कहा कि ठीक है जहाँ आपको उचित लगे आप लोग मिलकर बात कर सकते है। मैं यही पर बैठी हूँ। मैंने उनसे कहा कि ठीक है आप यही

इंतजार करिये और आपको जो भी लगे आप निसंकोच मंगवा लीजियेगा। मैं शबाना को लेकर अपने मित्र के फ्लैट पर चला गया। वहाँ हम दोनों एक दूसरे प्रति प्रेम का इजहार करते हुए शारीरिक सुख में खो गये। कुछ देर बाद हम वापस रेस्टारेंट लौट आये। रास्ते में मैंने शबाना को इस बात के लिए आश्वस्त कर दिया था कि मैं तुम्हारे लिए कोई हिंदू ढूंढकर उससे शादी करा दूँगा। इसके बात हम लोग आपस में मिलने लगे। इस बात के लगभग पंद्रह दिन बाद मैने राकेश को इस मामले से अवगत कराया। यह सब सुनकर उसने कहा कि ऐसे मामले से दूर रहना चाहिए। यदि कल इस बात ने राजनैतिक स्वरूप ले लिया तो बहुत हंगामा खडा हो जायेगा और तुम्हारी भी बदनामी होगी। तुम्हें मुझे पहले ही बता देना चाहिए था तो मैं तुम्हें आग से खेलने की सलाह कभी नहीं देता। अभी भी वक्त है तुम अपने आपको उनसे अलग कर लो। मैंने उसकी सलाह माँगते हुए उन लोगों से अपने आप को अलग कर लिया।

आनंद ने इसके बाद एक घटना और सुनायी। आज के शहरों में बहुत तरक्की हो गयी है। कभी वहाँ अंग्रेजी माध्यम के स्कूल इक्का दुक्का ही होते थे परंतु आज बढ़ती हुयी जनसंख्या के कारण इनकी बाढ सी आ गई है आज हर व्यक्ति अपने बच्चों को अंग्रेजी माध्यम में ही पढाना चाहता है। इसी परिप्रेक्ष्य में एक मराठी परिवार जो कि मेरे घर के समीप रहता था, उनकी हार्दिक इच्छा थी कि उनकी तीनों बेटियाँ अंग्रेजी माध्यम से अध्ययन करके अच्छे कैरियर का चयन कर सके। उनके आर्थिक साधन सीमित थे। उन्होंने मेरे एक डॉक्टर मित्र के माध्यम से शिक्षा हेतु मुझसे आर्थिक सहयोग माँगा। मैंने और मेरे मित्र ने सोचा कि विद्यादान सर्वश्रेष्ठ दान है अतः हमने उनकी मदद करने का निर्णय लिया। इस प्रकार हम उन लड़कियों की स्कूल फीस, पुस्तकों का खर्च एवं स्कूल ड्रेस आदि की व्यवस्था करने लगे। इससे उस परिवार की पढाई के खर्च को लेकर होने वाली चिंता दूर हो गई। दो तीन माह के बाद एक दिन मैं अपने मित्र की क्लीनिक में उसका हालचाल पूछने के लिए गया था। वहाँ पर तीन

बड़ी सुंदर लड़कियाँ बैठी हुयी थी जिनके नाम ज्योतिबाला, ज्योतिशिखा और ज्योतिका थे। डॉक्टर ने उनका परिचय मुझसे कराते हुये बताया कि यही वह सज्जन है जो आपकी फीस और पढाई के अन्य खर्च वहन कर रहे है। इनकी आप लोगों से एक ही अपेक्षा है कि आप मेहनत करके अच्छे अंको से उत्तीर्ण होकर उच्च शिक्षा प्राप्त करें एवं अपने आप को आत्मनिर्भर बना सके। जब उन तीनों लड़कियों की मेरे बारे में पता हुआ तो उन्हेंने मुझे धन्यवाद देते हुए कहा कि आज के समय में निस्वार्थ सेवा देने वाले लोग बहुत कम है। ईश्वर से प्रार्थना है कि आप और आपके परिवार पर उनकी कृपा बनी रहे। एक दिन मैं और डॉ., ज्योतिशिखा और ज्योतिका को लेकर फिल्म देखने गया। उस दिन हॉल में भीड बहुत कम थी एवं हमें आखिरी की अंतिम कार्नर की सीट मिली हुयी थी।

फिल्म कॉफी रोमांटिक थी तभी मैंने महसूस किया कि ज्योतिशिखा का हाथ मेरे हाथ को सहला रहा था। इंटरवल में डॉ. ने ज्योतिका एंव ज्योतिशिखा के स्नैक्स लाने के लिए बाहर जाने पर बताया कि ज्योतिका मेरे हाथों को जबरदस्ती अपने हाथों से सहला रही थी। मैंने उसको बताया कि ज्योतिशिखा भी ऐसा ही कुछ मेरे साथ कर रही है। फिल्म समाप्त होने के बाद हम दोनों उन्हें एक देस्त के घर ले गये जो उसके बाहर रहने के कारण खाली पडा रहता था और घर की चाबी मेरे पास रहती थी। वहाँ हमारा प्रेम उमड पडा और काम वासना में परिवर्तित होकर शांत हुआ। इस प्रकार हम दोनों ने भरपूर आनंद लिया। एक दो साल तक हमारे संबंध इसी प्रकार आनंदपूर्वक चलते रहे। स्कूली पढाई पूरी होने के उपरांत उन्हें उच्च शिक्षा हेतु सरकारी मदद मिल गई एवं बडे शहर के अच्छे कॉलेज में उनका एडमिशन हो गया। आज वे दोनों मल्टीनेशनल कंपनियों में उच्च पदों पर आसीन है और हमारे बीच आज भी फोन पर कभी कभार बातचीत होती रहती है।

आनंद ने एक भावनात्मक संस्मरण बताया। वह बोला कि श्रीनाथ जी उनके परिवार के आराध्य देव हैं और उनका मंदिर उदयपुर के पास नाथद्वारा में स्थित है इस मंदिर की बहुत मान्यता है। एक बार मैं दर्शन के लिय कुछ दिन पहले ही वहाँ पर गया था वहाँ पर भगवान की फूलों की सेवा में एक परिचित महिला मुझे सेवा करती हुयी नजर आयी। मैं उसकी ओर बढ गया और पहुँचने पर मैंने देखा कि वह तो नीरा थी। मैं उसे यहाँ पर देखकर आश्चर्यचकित हो गया। उसके पास पहुँचकर मैंने उससे कहा कि अरे नीरा तुम यहाँ कैसे ? उसने चौंककर पीछे देखा तो मुझे देखकर मुस्कुराकर खडी हो गई। वह बोली कि आप यहाँ कब आए ? मैने उससे कहा कि पिछली रात ही आया हूँ। तुम यहाँ हो यह नहीं मालूम था। उसने मुझसे मेरे रूकने का स्थान पूछा और शाम को सात बजे मिलने का वादा किया और पुनः अपने कार्य में व्यस्त हो गई। मैं भी दर्शन के उपरांत वापिस होटल आ गया। नीरा एक गुजराती महिला थी जिसका पति एक मंदिर में पुरोहित के पद पर कार्यरत था। उसका एक लड़का था जिससे वह काफी परेशान थी। वह चाहती थी कि वह कोई अच्छी नौकरी करके अपने को स्वावलंबी बना ले ताकि घर व्यवस्थित हो सके। उस लड़के का मेलजोल मोहल्ले के आवारा किस्म के लड़को से था और पढाई की ओर उसे कोई अभिरूचि नहीं थी। उसके पिताजी दिनभर मंदिर के कार्यों में व्यस्त रहते थे। नीरा राकेश के यहाँ खाना बनाती थी। राकेश के यहाँ काफी आना जाना था और यदा कदा मैं उससे बात करते हुए हंसी मजाक भी कर लेता था। एक दिन अचानक उसने मुझे कहा कि आप यहाँ वहाँ क्यों भटकते रहते हैं ? इससे अच्छा आप किसी एक के प्रति दोस्ती करके समर्पित रहे। आपकी इच्छाओं की पूर्ति भी हो जायेगी और वह भी सुखी रहेगी। मैंने उससे कहा कि यदि वह तुम हो तो कैसा रहेगा ? उसने कहा कि ऐसा हो सकता हैं परंतु यह बात गोपनीय रहनी चाहिए। इसके बाद हमारा मिलना जुलना प्रारंभ हो गया और हमारे बीच अंतरंग संबंध स्थापित हो गये। उसने मुझे बताया था कि उसका लड़का उसके द्वारा

अर्जित धन से खरीदी गई संपत्ति को बेच कर अपना व्यापार स्थापित करना चाहता है मैंने नीरा को समझाया कि तुम इस संपत्ति को मत बेचो यह बुढापे तुम्हारे काम आयेगी और यदि बेचो तो उस धन को बैंक में डिपाजिट कर देना। उसके आने वाले ब्याज को ही खर्च करना और मूल पूंजी को सुरक्षित रखना। मैं यह सब सोच ही रहा था कि शाम के सात बज गये और किसी ने दरवाजे पर दस्तक दी। मैने दरवाजा खोला तो देखा सामने नीरा खडी थी। मैने उसे बैठने को कहा और वेटर को चाय का आर्डर दिया। उसने बातों ही बातों में मुझे बताया कि उसने मेरे सुझाव को नहीं माना और अंततः पुत्र प्रेम में संपत्ति को बेच कर धन अपने लड़के को व्यापार के लिये दे दिया। अनुभवहीन होने के कारण उसने समस्त पूंजी खो दी और वापिस माता पिता से रूपये मांगने लगा। इस कारण घर का वातावरण असहनीय रूप से खराब होने लगा तो वह अपने घर को छोडकर यहाँ पर श्रीनाथ जी की सेवा में आ गई। उसके परिवारजनों ने कोई पूछ परख नहीं की। उसकी बातें सुनकर मुझे बहुत दुख हुआ। मैंने उसे कहा कि जो हुआ उसे बुरा समय समझकर भूल जाओ और भगवान की सेवा मन लगाकर करो। मैंने उसे मदद के लिए कुछ रूपये देने चाहे परंतु उसने मना कर दिया और कहा कि मेरा गुजारा यहाँ अच्छे से हो जाता है। आपने इतने दिन जो साथ दिया उसके लिए मैं आपकी अहसानमंद हूँ। ईश्वर निरंतर आपको सुखी, स्वस्थ और संपन्न रखे।

आनंद आज काफी भाव विभोर था और धाराप्रवाह अपनी बीती हुयी जिंदगी के संस्मरण एक के बाद एक बता रहा था। इसी क्रम में उसने बताया कि पिछले माह ही वह अपने किसी काम से प्रतापगढ उत्तरप्रदेश गया था। वहाँ पर उसके दूर के रिश्ते के मामाजी रामप्रकाश जी रहते थे। उनका एक लड़का था जिसका विवाह पिछले साल ही हुआ था। वह भी अपने पिताजी के कामकाज में हाथ बँटाता था और अक्सर प्रतापगढ के बाहर व्यापारिक सिलसिले में जाता रहता था। मैं जब रामप्रसाद जी के पास पहुँचा तो वे मुझसे मिलकर बहुत खुश हुये।

तभी उनकी बहू जिसका नाम रानी था चाय नाश्ता लेकर आई। मामाजी ने उससे कहा कि ये आज अपने घर पर ही रूकेंगें। मेरे ना करने के बाद भी वे नहीं माने और उन्होंने मेरे रूकने की पूरी व्यवस्था कर दी। मैं वहाँ खेती से संबंधित एक फार्म हाऊस को देखने गया था जिसकी अच्छे उत्पादन के कारण बहुत प्रसिद्धि थी। मुझे मामाजी वहाँ पर ले गये परंतु उसका मालिक किसी कार्यवश इलाहाबाद गया हुआ था इसलिये उस दिन उनसे चर्चा नहीं हो पाई। उस समय गर्मी का मौसम था तो मैं छत पर जाकर सो गया। मैं बहुत थका हुआ था इसलिये मुझे तुरंत ही नींद आ गई। रानी ने मुझे उठाया और कहा कि बाबूजी ने आपके लिये दूध भिजवाया है। वह बोली कि आपने अपने बारे में कुछ बताया ही नही, मुझे तो इतना ही पता है कि बाबूजी आपके दूर के रिश्ते के मामाजी है। मैंने उसे अपने पास बैठा लिया और उससे उसकी पढाई, घर के कामकाज और उसके पति के बारे बात करता रहा। वह बोली कि और सब तो ठीक है परंतु मेरे पति अधिकांश समय बाहर रहते हैं और जब यहाँ रहते हैं तो भी बहुत व्यस्त रहते है इनके पास तो जैसे मेरे लिए समय ही नहीं है। उसके हाव भाव देखकर मैं समझ गया और उसका हाथ पकडकर कहा कि दूध तुमने बहुत अच्छा बनाया है। वह मुस्कुराकर बोली कि धन्यवाद। तभी मैंने उसकी कमर पर हाथ रख दिया तब भी उसने कोई विरोध प्रकट नहीं किया। मेरा हौसला और बढ गया और मैंने सीधे अपने होंठ उसके होंठों पर रख दिये। वह तडपकर मेरी बाहों में आ गई और बोली के मैं रात को आऊँगी, दरवाजा खुला रखना। वह लगभग रात में 12 बजे के आसपास झीना सा नाइट गाउन पहनकर आई और धीरे से मेरे बिस्तर में आ गई। हम लोग रात भर प्रेमालाप करते रहे। वह बहुत खुश थी और उसने बताया कि जो आनंद उसे आज मिला है उसके लिए वह साल भर से तडप रही थी। उसकी बातचीत से पता हुआ कि उसका पति नपुंसक है। वह चाहती थी कि मैं प्रतापगढ में कोई कार्य शुरू करूँ जिससे मेरा वहाँ आना जाना बना रहे। मैं फार्म हाऊस के कार्य के बहाने तीन दिन वहाँ

रूका रहा और हर रात भरपूर आनंद लेता रहा व रानी को भी जिंदगी के असली सुख से परिचय कराता रहा। जिस दिन मैं लौट रहा था वह बहुत उदास थी। मैने उसे समझाया और जल्दी लौटने का वादा किया। जब वासना की पूर्ति ना हो तो वह सिर पर चढ जाती है और फिर सारे संबंध भूलकर उसे सिर्फ स्त्री और पुरूष का शारीरिक सुख ही नजर आता है। आज भी वह मेरी यादों में बसी हुयी।

आनंद गौरव से कहता है कि तुमने तो मेरे जीवन की सभी घटनाओं को सुन लिया है और खुद चुपचाप बैठे हो, तुम भी तो कुछ कहो। राकेश ने तो अपने आप को मानसी तक सीमित कर लिया है और मानो पुरानी सब बातों को तिलांजलि दे चुका है। यह सुनकर गौरव कहता है कि मैने अपने बीते हुए जीवन की अधिकांश स्मृतियों से आप लोगों को अवगत करा दिया ही दिया है परंतु कुछ घटनायें मैंने नहीं बतायी हैं वह मैं बताता हूँ। गौरव कहता है कि चार माह पहले ही मेरी मुलाकात हवाई जहाज में दिल्ली का सफर करते वक्त पूर्णिमा नाम की एक लड़की से हुई थी वह एक कंपनी में सेल्स मैनेजर के पद कार्यरत थी और दिखने में बहुत ही सुंदर, मिलनसार और आधुनिक विचारों की लड़की थी। हम लोगों के बीच में दो घंटे की विमान यात्रा के दौरान अच्छी दोस्ती हो गयी। संयोगवश हम दोनों के कार्यक्रम एक ही होटल में थे और हमारे रूकने की व्यवस्था भी उसी होटल में थी। अपना कार्य समाप्त करके मैंने पूर्णिमा को रात के खाने पर आमंत्रित जिसे स्वीकार करके वह आ गई। हम लोग जीवन के विभिन्न विषयों पर बातचीत करते रहे। इस प्रकार मेरी दिल्ली की यात्रा बहुत आनंद में बीती और वापिस लौटते समय पूर्णिमा की दोस्ती की याद करता हुआ बहुत प्रसन्न था। वह भी मुझसे काफी प्रभावित थी। इसके बाद हमारी फोन पर प्रायः बात होने लगी। वह हैदराबाद में कार्यरत थी। कुछ ही दिनों बाद संयोगवश मुझे किसी कार्य से हैदराबाद जाने का अवसर प्राप्त हुआ। वहाँ पर मेरा प्रवास तीन दिन का था इस दौरान मेरी प्रतिदिन पूर्णिमा से

मुलाकात होती थी। हैदराबाद में हुई उससे मुलाकात के बाद हमारी देस्ती एक गहरी आत्मीय मित्रता में बदल गयी। हैदराबाद से लौटने के बाद अब हमारी प्रतिदिन ही फोन पर बात होने लगी। हमारे बीच अब प्रेम के बीज प्रस्फुटित होने लगे। एक दिन उसने बताया कि उसे किसी कार्यवश मुंबई जाना है। मैं भी उससे मिलने के लिए वहाँ पहुँच गया। एक दिन रात्रिभोज के दौरान मैंने उससे अंतरंग संबंध बनाने का अनुरोध किया तो उसने कहा कि ऐसे संबंध शादी के बाद ही उचित लगते हैं अन्यथा वे प्यार की जगह वासना का स्वरूप बन जाते हैं। उसने शालीनता के साथ मेरे अनुरोध को ठुकराते हुए मुझसे विवाह का प्रस्ताव रखा। जिसे स्वीकार करने में असमर्थता व्यक्त करते हुए मैंने कहा कि मैं किसी और लड़की से विवाह करने का इच्छुक हूँ। यह सुनकर वह भडक गई और कहा कि तुमने मुझे धोखा दिया है यह बात तुम्हें मुझे पहले ही बता देनी चाहिए थी। मेरे आधुनिक ख्यालों के कारण क्या तुमने मुझे ऐसी वैसी लड़की समझ रखा है। मैंने तुमसे दिल से प्यार किया था परंतु तुम इतने स्वार्थी निकलोगे इसकी कल्पना भी नहीं की थी। आज मुझे जो तकलीफ हो रही है उसका अनुभव तुम्हें उस दिन होगा जब तुम किसी को चाहोगे और वह तुम्हें छोडकर चला जाएगा। इतना कहते वह गुस्से में तमतमाते हुए चली गयी। एक अनजाने भय से मैं उसे चुपचाप जाता हुआ देखता रहा और आरती से बिछुडने की कल्पना मात्र से मैं सिहर उठा।

आनंद और गौरव आपस में वार्तालाप करते हुए कहते है। हमने अपने अभी तक के जीवन में बहुत आनंद उठाया है और हमें अब इससे विरक्ति महसूस होने लगी है। जब पूर्ण संतुष्टि आ जाती है तो मन के भावों में परिवर्तन आने लगता है। पल्लवी और आरती के व्यवहार ने हमारे दिलों को बहुत ठेस पहुँचायी है। यदि हम अपने मन और हृदय में चिंतन करें तो यर्थाथ के धरातल पर उन दोनों का कहना सही है। उन दोनों ने हमें मझधार में छोड दिया इसी समय राकेश भी उन्हें खोजता हुआ आ जाता है और पूछता है कि आजकल तुम दोनों

कहाँ खोये हुए हो। वे कहते हैं कि राकेश तुम्हारे जीवन में मानसी के कारण बहुत परिवर्तन आ गया है। तुमने अपनी राह एकदम बदल ली है। ऐसा ही परिवर्तन हम लोग भी अपने आप में महसूस कर रहे है। हमें जितना जीवन को भोगना था वह समय पूरा हो चुका है और इसका फल भी हमें भुगतना पड रहा है। अब हम अपने इस जीवन को नयी दिशा देकर एक नई सुबह का प्रारंभ करेंगें। अब हम अपने जीवन को सेवा के लिए समर्पित करेंगें एवं अपनी स्वार्थपूर्ति के लिए किसी का उपयोग नहीं करें ंगें। हम प्रकाश के उस स्तंभ के समान बनना चाहते है। जो बंदरगाह में स्थापित रहकर रास्ते से भटके हुए जहाजों को सही राह दिखाता है। आम आदमी की जिंदगी में भी कुछ घटनायें इस तरह की घटित होती हैं जो व्यक्ति के दिमाग में प्रकाश स्तंभ की तरह स्थापित होकर व्यक्ति के निर्णय के मार्ग को आलोकित करती रहती हैं और व्यक्ति को मानवीय आधार पर कार्य करने की प्रेरणा देती है। राकेश कहता हैं कि देर आयद दुरूस्त आयद।

गौरव के पास उसके मित्र सुरेन्द्र का फोन आता है कि मेरी बहन कादम्बरी बहुत परेशान है और मैं तुम्हारा मार्गदर्शन चाहता हूँ। कोई उसे सोशल नेटवर्किंग साइट्स पर बदनाम करने की धमकी दे रहा है। गौरव, सुरेंद्र के पास पहुँचता है और उससे इस मामले की पूरी जानकरी देने का अनुरोध करता है। सुरेंद्र कहता हैं कि मेरी बहन का फेसबुक के माध्यम से किसी आशीष नाम के लड़के के साथ दोस्ती हुयी। चैटिंग के दौरान इनकी दोस्ती बढती गयी और इन लोगों ने एक दूसरे के मोबाइल नंबर भी ले लिये। इसके बाद वह लड़का इसे झूठे प्रेमजाल में फँसाने लगा और उस लड़के ने कुछ अंतरंग बातों को फोन पर एवं व्हाट्सऐप पर रिकार्ड कर लिया और अब इसे ब्लेकमेल करके शारीरिक संबंध बनाने हेतू दबाव डाल रहा है। अपनी बदनामी के डर के कारण जब इसे कोई रास्ता नजर नहीं आया तो इसने मुझे सब बातें बतायी। अब तुम बताओं इस

मामले में क्या करना चाहिए ताकि बदनामी भी ना हो और उस लड़के को सबक भी सिखाया जा सके।

गौरव कहता हैं कि तुम मेरे साथ चलो हम पहले पुलिस अधीक्षक के पास जाकर उनको सारा मामला बताते हैं फिर जैसा वो सलाह देंगे उसी अनुसार करेंगें। पुलिस अधीक्षक ने सारी बातें सुनने के बाद संबंधित थाना प्रभारी को फोन किया और उनका आवेदन कार्यवाही हेतु भिजवा दिया। पुलिस के सायबर सेल विभाग द्वारा आशीष नामक लड़के के मोबाइल की लोकेशन प्राप्त की गयी तब यह पता कि वह मोबाइल किसी हैदर नाम के व्यक्ति के नाम पर है जिसका उपयोग इसी शहर में हो रहा है। कुछ समय पश्चात थाना प्रभारी के नेतृत्व में पुलिस ने उसे गिरफ्तार कर लिया। उससे पूछताछ में पता चला कि उसका असली नाम हैदर है एवं वह फर्जी नामों से फेसबुक पर लड़कियों से दोस्ती करता हैं। वह उनको बदनामी का डर दिखाकर उनसे रूपये ऐंठता एवं शारीरिक संबंध बनाने के लिए भी दबाव डालता है। पुलिस द्वारा उसके मोबाइल एंव कम्प्यूटर की जाँच से कई लड़कियों के नंबर एवं विभिन्न फोन रिकार्डिंग जब्त की जाती है एवं कानून की विभिन्न धाराओं के अंतर्गत उसके खिलाफ अपराध दर्ज कर दिया जाता है। पुलिस द्वारा उस लड़की को भी समझाइश दी जाती हैं कि फेसबुक जैसी सोशल साइट्स पर किसी अनजान व्यक्ति से बिल्कुल भी संपर्क नहीं रखना चाहिए केवल उन्ही लोगों से संपर्क रखें जिन्हें आप व्यक्तिगत रूप से जानते हों। हमें मोबाइल पर चैटिंग एवं बातचीत के दौरान सावधान रहकर शब्दों का प्रयोग करना चाहिए। आजकल इस प्रकार के साइबर क्राइम बहुत बढ गये हैं क्योंकि लड़कियों के भोलेपन का फायदा उठाकर उन्हें ब्लेकमेल करने का प्रयास असामाजिक तत्व करते रहतें हैं। ऐसे अधिकांश मामले पुलिस तक बदनामी के डर से नहीं पहुँच पातें हैं जिसका लाभ ये असामाजिक तत्व उठाते हैं। सभी लोगों ने भी पुलिस द्वारा की गई इस त्वरित

कार्यवाही की बहुत प्रशंसा की और उनके प्रति आभार व्यक्त करते हुए वापिस लौट गये।

गौरव ने पिछले सप्ताह ही उसके साथ घटित एक वृतांत बताया उसने कहा कि वह प्रतिदिन उद्यान में शाम को 5 बजे निर्धारित समय पर घूमने जाता है। एक दिन घूमने के उपरांत वह बेंच पर बैठकर कोल्ड ड्रिंक पीते हुए अपनी थकान उतार रहा था तभी दो महिलायें जिनके साथ दो बच्चे थे अचानक आये और उनमें से एक ने मेरे किसी मित्र का परिचय देकर मुझसे बातचीत शुरू कर दी। वे लोग बडे संभ्रांत एवं व्यवहारकुशल नजर आ रहे थे। उनमें से एक महिला बहुत ही सुंदर एवं आकर्षक थी एवं मुझसे दोस्ती करने की इच्छुक थी। इसी दौरान ना जाने कैसे और कब उनमें से किसी ने मेरी कोल्डड्रिंक में कुछ मिला दिया, मुझे इस बात का बिल्कुल भी अंदेशा नहीं था। मैं तो अपने स्वभाववश उन महिलाओं के साथ बातचीत करता रहा और उनके मित्रता के अनुरोध पर मन ही मन प्रसन्न हो रहा था। उनके जाने के बाद कोल्डड्रिंक के दो तीन सिप लेने के बाद ही मुझे नींद आने लगी और मैं बेंच पर ही टिककर सो गया। लगभग एक घंटे बाद सिक्योरिटी गार्ड के हिलाने पर मेरी नींद खुली और मुझे अजीब सा महसूस हो रहा था जैसे अर्धबेहोशी की हालत हो। गार्ड ने पानी लाकर मुझे मुँह धोने के लिए कहा और अपने साथियें को बुलाया उसने मेरे ड्राइवर को भी सूचित किया तो वह भी दौडा दौडा अंदर आया। मैंने उनको इस घटना के विषय में बताया तो उन्होने कहा कि आप अपना सामान जाँच लीजिए। मैंने जब जेब में हाथ डाला तो मेरा मोबाइल गायब था और पर्स में से पूरे रूपये भी गायब थे। इसी दौरान मेरे पास भीड लग चुकी थी। गार्ड ने कहा कि साहब पुलिस को फोन करके बुला लूँ। मैंने उसे कहा मत बुलाओ क्योंकि लगभग एक घंटे बाद मुझे दूसरे शहर जाने के लिए ट्रेन पकडनी हैं पुलिस के चक्कर में मेरी ट्रेन छूट जायेगी, मुझसे चोरी किया गया सामान तो वापिस मिलने से रहा। इसलिये मैं इस झंझट में नहीं पडना चाहता था और कुछ देर

बाद में अपने ड्राइवर के साथ वापिस अपने घर लौट गया। मुझे भली भांति अहसास हो गया था कि किसी भी अपरिचित द्वारा मित्रता का प्रयास करने पर हमें सावधान रहना चाहिए। आज के समय में संभ्रांत परिवार के दिखने वाले व्यक्ति भी चोर उचक्के हो सकते हैं।

यह सुनकर राकेश बताता है कि एक बार उद्यान में उसके साथ भी एक विचित्र हादसा हुआ। वह उद्यान में घूम रहा था तभी उसके फेसबुक पर एक भानु नाम की लड़की की फ्रेंड रिक्वेस्ट आयी। मैंने उसे स्वीकार कर लिया। इसके बाद उसका मैसेज आया कि वह मुझसे मिलना चाहती है। मैंने उसे जवाब दिया कि मैं अभी एक घंटे तक उद्यान में हूँ आप चाहे तो आ सकती हैं। उसने कहा कि ठीक है मैं आ रही हूँ। लगभग 20 मिनिट के बाद वह वहाँ पहुँच गई। उसने बातचीत के दौरान बताया कि उसका तलाक हो चुका है एवं उसका पति सेना में कार्यरत था। उसका एक लड़का है जिसे पढाई के लिये उसे पूर्व पति से पाँच हजार रू. महीना प्राप्त होता है। वह अपने परिवार से अलग रहती है एवं उसका जीवन यापन उसके भाई एवं भाभी पर निर्भर है। इस कारण वह काफी दुखी है। मैंने उसे सांत्वना देते हुये कहा कि आप कोई अच्छा जॉब देख लीजिए इससे आप व्यस्त भी हो जायेंगी और धनोपार्जन का साधन भी बन जायेगा। उसने मुझसे पूछा कि क्या आपकी नजर में ऐसा कोई नौकरी है जो कि मेरे लायक हो तो बताइये। मैं इसके लिए तैयार हूँ। मैंने कहा कि मैं आपको बताऊँगा और हमारे बीच में वार्तालाप विभिन्न विषयों पर बढती गई उसने अपना चेहरा मुझे दिखाते कहा कि मुझे एलर्जी हो रही है एवं मैंने एक चर्मरोग विशेषज्ञ डॉ. मुखर्जी से समय लिया हुआ है अतः अब मुझे वहाँ जाना होगा क्योंकि वहाँ काफी समय लगता है। यह सुनकर मैंने उसे कहा कि वो डॉक्टर मेरे परिचित है। आप मेरे साथ चलिए मैं आपको फौरन मिलवा देता हूँ। वह बोली कि मैं कार से पहुँच रही हूँ आप भी वहाँ पहुँच जाइये। मैंने उसे डॉक्टर से मिलवा

दिया और जाते समय उसने बताया कि यह कार उसकी भाभी की है वे शाम को 6 बजे के बाद अपनी नौकरी से आ जाती है तो मुझे मिल जाती है।

दूसरे दिन वह वापिस मुझसे मिलने आयी। उसके साथ उसकी मित्र अर्चना एवं दोनों के साथ बच्चे भी थे। हमारी बातचीत होती रही इसके बाद मैंने उन्हें रेस्टारेंट में भोजन करने के लिए पूछा तो वे तैयार हो गये। रेस्टारेंट में ही बातचीत के दौरान उनकी बातों से लगने लगा कि इनको रूपयों की आवश्यकता है और इसके लिये ये सेक्स के लिये भी तैयार हो सकते है। इसके बाद मैंने उनसे सीधी सीधी बात की तो उन्होंने कहा कि उन्हें बीस हजार रू. की जरूरत है। मैंने कहा कि अगर मैं इंतजाम कर दूँ तो मुझे क्या मिलगा ? उन्होंने कहा कि आप जो चाहे हम वो करने के लिये तैयार हैं। दूसरे दिन मैंने उन्हें अपने गेस्ट हाऊस में मिलने के लिये बुलाया। वे दोनों आयी और ये जानने के बाद कि मैं रूपये लाया हूँ उन्होंने बीयर पीने की इच्छा जाहिर की। बीयर पीने के बाद अर्चना नशे में डोलने का नाटक करने लगी। मैं कुछ देर के लिए बाथरूम गया और वापिस आया तो देखा कि अर्चना कही चली गयी थी और भानु ने उसे ढूँढने के लिये आवाज लगाना शुरू किया और सभी कमरों में जाकर देखा फिर उसने कि लगता है वह बाहर चली गयी उसे फोन करती हूँ और अपने पास मोबाइल में बैलेंस ना होने की बात कहकर उसने मुझसे मोबाइल लिया और फोन लगाती हुयी कमरे से बाहर चली गयी। मैंने सोचा शायद नेटवर्क प्राब्लम की वजह से बाहर गयी होगी परंतु जब मैंने अपनी जेब में हाथ डाला तो पाया कि मेरा पर्स चोरी हो चुका था एवं भानु कोई भी बाहर तो वह नहीं मिली। मैं समझ गया था कि मेरे साथ ठगी हो चुकी हैं।

भानु के बताये हुये पते पर मैंने खोजने की कोशिश तो पता चला कि वहाँ पर इस नाम का कोई नहीं रहता। मेरे मन में विचार आया कि पुलिस में इसकी रिर्पोट दर्ज की जाए परंतु तभी याद आया कि मुझसे भी पूछा जायेगा कि आप

उन लड़कियों को अपने गेस्ट हाऊस क्यों ले गये थे ? यह सोचने के बाद मैंने पुलिस में रिपोर्ट दर्ज कराने का विचार त्याग दिया। इस घटना ने मुझे जीवन पर्यंत एक सीख दे दी अंजान महिलाओं से दोस्ती करते समय बहुत सतर्क रहना चाहिए एवं पर्याप्त खोजबीन के बाद ही उनसे निकटता बढानी चाहिए।

समय की गति बहुत तेज होती है। दिन,माह कैसे गुजरते जाते है हमें स्वयं पता नहीं चलता है। राकेश की पढाई पूरी हो जाती हैं और उसका विवाह मानसी के साथ संपन्न होकर वह गृहस्थ जीवन में प्रवेश करता हैं। इसके कुछ माह बाद ही आनंद और गौरव भी अपनी शिक्षा पूरी करके व्यापार में व्यस्त हो जाते है। जब भी वे राकेश का व्यवस्थित गृहस्थ जीवन देखते तो उन्हें रह रह कर पल्लवी और आरती की याद आने लगती थी परंतु वे इसे अपने भाग्य की नियति और कर्मों का फल समझकर इसे भूलकर पुनः अपने कार्य में व्यस्त हो जाते। अब उन्हें वासनामय जीवन से विरक्ति हो चुकी थी और उनके मन में उनके अनुभवों के आधार पर समाज में व्याप्त कुरीतियों को समाप्त करने की प्रबल इच्छा होने लगी थी परंतु वे क्या करें और कैसें करें आदि प्रश्नों में उलझे हुये थे। उनके मन में शादी करने की तमन्ना लगभग समाप्त हो चुकी थी और परिवारजनों द्वारा ज्यादा दबाव दिये जाने पर वे इसे किसी ना किसी बहाने टाल देते थे।

तीनों मित्र आर्थिक रूप से काफी संपन्न थे और उनके मन में अपने धन को समाज के हित में उपयोग करने का भाव निर्मित हो गया था। उन्होंने आपस में चर्चा करके जनसेवार्थ एक ट्रस्ट का गठन किया और उसके अंतर्गत एक परामर्श केंद्र की स्थापना की जिसका कार्य युवा पीढी को उचित मार्गदर्शन देकर उनकी आर्थिक, सामाजिक, पारिवारिक, भावनात्मक एंव अन्य किसी भी प्रकार की समस्या का निराकरण करने का हरसंभव प्रयास करना था। इस परामर्श केंद्र में उन्होंने चिकित्सक, अधिवक्ता, धार्मिक गुरू एवं समाज सेवा से जुडे कुछ प्रतिष्ठित लोगों को भी उसका सदस्य बनाया था।

इस केंद्र में एक दिन मीना नाम की छात्रा का मामला आया उसके परिवारजनों को शिकायत थी कि वह पढाई में ध्यान ना देकर केवल टेलीविजन और मोबाइल पर अपना समय नष्ट करती थी। इस मामले में एक शिक्षाविद् की मदद ली गई जिसने उसे बुलाकर बहुत अपनत्व एवं स्नेह से समझाया। उन्होने कहा कि अध्ययन एक लक्ष्य प्राप्ति का साधन है और शिक्षा से हमारे अंदर विद्यमान गुण व येग्यताऐं विकसित होकर हमे मार्गदर्शन देती हैं। हम ज्ञान का उचित समय पर व्यवहारिक उपयोग करके अपने जीवन की उलझनों को सुलझाने में समर्थ होते हैं। जब तुम्हें कोई समस्या के समाधान की आवश्यकता होती है तो हमारे ज्ञान के संचित भंडार का उपयोग करके हम निदान करते हैं। जो छात्र पढाई नहीं करता वह विपरीत परिस्थितियों में घबराकर अपने को लज्जित अनुभव करता हैं और समाज में उसकी कोई पूछ परख नहीं होती और वह जीवन में कभी प्रगति नहीं कर पाता। वह अस्तित्वहीन होकर तिरस्कृत जीवन जीता हैं।

शिक्षा जीवन को दिशा देती है और हमें ईमानदारी, परिश्रम एवं समर्पण से जीवन जीना सिखाती है। जिनका पालन करते हुए हम अपने कर्तव्यों के प्रति जागरूक रहकर जीवन को सार्थक बनाते हैं। अब तुम बताओं कि तुम्हें शिक्षा प्राप्त करने में क्या कठिनाई है ? वह बोली कि मेरी रूचि इतिहास एवं कला के विषय में परंतु मेरे परिवाजनों ने जबरदस्ती मुझे विज्ञान विषय में प्रवेश दिला दिया है जिसे पढने में मेरा मन नहीं लगता और इसी कारण में शिक्षा से विमुख होकर टी.वी और मोबाइल की तरफ आकर्षित हो गयी हूँ। इसके बाद उन शिक्षाविद् महोदय एवं परामर्श केंद्र के अन्य लोगों ने उसके परिजनों को समझाया कि शिक्षा में कोई भी विषय छोटा या बडा नहीं होता। हर विषय का अपना महत्व हैं और जबरदस्ती किसी विषय को पढाने से उस छात्र की प्रतिभा का विकास अवरूद्ध हो जाता है और वह कहीं का नहीं रह पाता। परामर्श केंद्र की समझाईश के बाद उन्होंने अपनी बेटी मीना को उसकी इच्छानुसार विषय में

प्रवेश दिला दिया। इस घटना के लगभग दो माह बाद उनसे संपर्क करने पर उन्होंने बताया कि अब मीना बिल्कुल बदल गई है अब तो उसका अधिकांश समय किताबों में ही बीतता है।

राकेश गौरव और आनंद के द्वारा बनाया गया परिवार परामर्श केंद्र काफी प्रसिद्ध हो जाता है। इसमें कई गंभीर मामले भी आने लगते हैं। गौरव ने बताया कि एक अजीब मामला परामर्श केंद्र में आया था। एक दिन कजरारी बाई नामक एक महिला जो कि मजदूरी करती है उसका विवाह पास ही के गांव के एक व्यक्ति किशोर से होता है देनो बढ़िया सुखमय वैवाहिक जीवन व्यतीत कर रहे थे एवं उनका एक साल का बेटा भी था। एक बार किसी व्यक्ति की हत्या के कारण किशोर एवं उसके भाइयों को न्यायालय द्वारा आजीवन कारावास की सजा सुनाई गई। कजरारी बाई अकेले होने के कारण अपने मायके में रहने लगी। उसे भ्रम था कि उसका पति अब जीवन भर जेल में रहेगा तो उसकी यह जिंदगी कैसे कटेगी। उसके इसी अकेलेपन के कारण उसके गांव में ही एक सजातीय युवक राजा से संबंध बन गए और उससे विवाह करके सुखमय जीवन व्यतीत करने लगी। राजा से विवाह के उपरांत कजरारी बाई की तीन और संताने हुईं परंतु कुछ समय बाद उसका सुखमय जीवन दुखी हो गया जब उसके पूर्व पति सुरेश को उसके अच्छे आचरण के कारण सजा से मुक्ति मिल गई और वह कजरारी बाई को उसके दूसरे पति एवं बच्चों को छोडकर उसके पास वापिस आकर रहने के लिए परेशान करने लगा। इसकी शिकायत गांव की ही पंचायत में की गई थी वहाँ से यह मामला हमारे परामर्श केंद्र में आया। कजरारी बाई अपने को भयभीत महसूस कर रही थी क्योंकि वह दूसरे पति और बच्चों को छोडकर जाना नहीं चाहती थी और कानूनन उसका पहले पति से तलाक भी नहीं हुआ था। बहुत कोशिशों के बाद परामर्श केंद्र के परामर्शदाताओं ने उसके पूर्व पति सुरेश को इस बात के लिये राजी कर लिया कि वह अपनी पूर्व पत्नी को छोडकर दूसरा विवाह कर ले क्योंकि विवाह का अर्थ होता है कि

दोने खुशी खुशी जीवन जिये यदि एक भी पक्ष दुखी होकर रहेगा तो जीवन सुखमय और शांतिमय नहीं रहेगा अतः सुरेश इस बात के लिये तैयार हो गया कि वह पूर्व पत्नी को विधिवत तलाक देकर अपना दूसरा विवाह कर लेगा और भविष्य में उसे परेशान नहीं करेगा।

एक दूसरे वृतांत में नारायण प्रसाद नाम के 25 वर्षीय विवाहित पुरूष का अजीबो गरीब मामला आया। उसका एक वर्ष पूर्व ही पडोस के गांव की एक लड़की सुजाता से विवाह हुआ था। सुजाता की 5 बहनें थी और उनके घर में पुत्र का जन्म नहीं हुआ था। यह जानकर नारायण प्रसाद मन में बहुत भयभीत हो गया था कि सुजाता से भी पुत्री का ही जन्म होगा और पुत्र रत्न की प्राप्ति नहीं होने के कारण वह पितृॠण से मुक्त नहीं हो पायेगा।

परिवार परामर्श केंद्र द्वारा उसे समझाने के बहुत प्रयास किये गये, वर्तमान समय में पुत्र और पुत्री में समान अधिकारों की व्याख्या भी की गई परंतु उसे समझाने के सारे प्रयास बेकार हो गये और वह अपनी पत्नी को तलाक देने के लिए अडा रहा। एक परामर्शदाता के उसके एक रिश्तेदार के विषय में ज्ञात हुआ कि उसके दो पुत्र हैं और वह एक पुत्री की चाहत रखता हैं उससे चर्चा के उपरांत वह इस बात के लिए सहमत हो गया कि यदि नारायण प्रसाद को पुत्री होती है तो वह उसे गोद ले लेगा। इस शर्त पर नारायण प्रसाद भी सहमत हो जाता है। कुछ समय पश्चात उसकी पत्नी सुजाता गर्भवती हो जाती है। गर्भाधान के समय उसे काफी तकलीफ होती है एवं डिलेवरी के समय स्थिति गंभीर हो गयी कि चिकित्सकों ने उसे स्पष्ट कह दिया कि बच्चा और माँ दोनों का बचाना संभव नहीं है इसलिये किसी एक को ही बचाया जा सकता है। आप क्या चाहतें हैं ? नारायण प्रसाद कहता है कि उसकी पत्नी को तो बचा ही लीजिए यदि संभव हो सके तो आप लोग अथक प्रयास करके मेरे बच्चे को भी चाहे वह लड़का हो या लड़की, बचा लें। मैं जीवनभर आपका उपकार नहीं भूलूँगा एवं आपका ॠणी रहूँगा। उसके मन लड़के औ लड़की का भेदभाव समाप्त हो

चुका था और वह अपने बच्चे के जीवन के लिए सच्चे हृदय से प्रभु से प्रार्थना कर रहा था। यह उसका भाग्य था या प्रभु की कृपा कि माँ और बच्चा दोनों ही डॉक्टरों के प्रयास से बचा लिये गये और उसे जब पता हुआ कि सुजाता सुरक्षित है एवं उससे उसे पुत्र रत्न की प्राप्ति हुई है वह खुशी से पागल हो गया। कुछ माह पश्चात वह पुनः परिवार परामर्श केंद्र आकर सभी लोगों का आभार व्यक्त करता हैं।

तीसरे वृतांत में आज की परिस्थितियों में मित्र की पहचान होना बहुत आवश्यक है इसके संबंधित एक वृतांत परिवार परामर्श केंद्र में आता हैं जो इस प्रकार है। रामप्रसाद नाम का एक संपन्न किसान था जिसके एक मात्र पुत्र हरिसिंह का विवाह रानी नाम की एक लड़की के साथ हुआ था। रामप्रसाद के देहांत के उपरांत हरिसिंह स्वतंत्र हो गया था उसके उपर किसी का भी जोर नहीं चलता था। धीरे धीरे गलत मित्रों की संगति के कारण पतन की राह पर बढने लगा और एक दिन जुए एवं अन्य व्यसनों के कारण उसकी सारी संपत्ति नष्ट हो गयी और उसे धन की कमी सताने लगी। वह अपने घर में पत्नी के साथ मारपीट करके उसको उसे पिता के यहाँ से धन लाने का दबाव डालने लगा। जब उसका अत्याचार बहुत बढ गया और सहनशीलता को पार कर गया तो उसकी पत्नी ने परिवार परामर्श केंद्र में इस मामले की शिकायत की परंतु परामर्शदाताओं के अथक प्रयास के बाद भी हरिसिंह नहीं सुधरा तो रानी ने उससे तलाक के लिए अर्जी देकर अपने ऊपर हुये अनाचार की शिकायत पुलिस में दर्ज करा दी। पुलिस ने जाँच के उपरांत हरिसिंह के खिलाफ मामला दर्ज करके कोर्ट में भिजवा दिया। न्यायालय ने उसे तीन वर्ष के कारावास की सजा सुनायी एवं उनका तलाक भी मंजूर हो गया।

तीन वर्ष के उपरांत हरिसिंह जेल से वापिस आता है तब तक उसका हृदय परिवर्तन हो चुका था और वह निरंतर अपनी गलतियों को महसूस कर रहा था। अपनी पत्नी को याद करते हुए उसके मन में स्नेह एवं प्रेम का भाव उमड

पडता है। वह उसके पास जाकर अपने कृत्य के लिए माफी माँगता हैं और पुनः शादी करने का प्रस्ताव रखता है। जिस प्रकार दूध का जला छाछ भी फूँक फूँक कर पीता है उसी तरह रानी भी उसके ऊपर विश्वास नहीं कर पा रही थी और वह मना कर देती है। इसके बाद हरसिंह के बहुत अनुनय विनय करने पर रानी पुनः परिवार परामर्श केंद्र में जाती है और हरिसिंह के पुनः शादी के अनुरोध के बारे बताती हैं यह सुनकर परामर्शदाता पुनः दोनों से बात करते हैं एवं हरिसिंह के कारावास के दौरान उसके आचरण के जानकारी जेल अधीक्षक से प्राप्त की जाती हैं जो कि बहुत ही सकारात्क थी। इस प्रकार परामर्शदाता रानी को पुनः विवाह करने की सलाह देते हैं। दोनों सादगी पूर्ण ढंग से पुनः कानूनन शादी कर लेते है।

लगभग एक साल बाद वे दोनों अपनी एक संतान के साथ पुनः परामर्श केंद्र आकर परामर्शदाताओं का आभार व्यक्त करते हैं कि उनकी सलाह के कारण अब वे सुखमय जीवन व्यतीत कर रहें हैं।

एक अन्य वृतांत जो के परामर्श केंद्र तक पहुँचा ही था, उसमें स्वमेव ही परामर्श केंद्र के नाम व साख के कारण समस्या निदान हो गया, वह इस प्रकार था। एक प्रोफेसर साहब जो कि अपने विषय के बहुत विद्‌वान थे उन्हें ना जाने कैसे यह भ्रम हो गया कि उनकी सुंदर पत्नी पर कई लोग निगाह रखते हैं और उनकी पत्नी भी हो सकता है कि कभी बहक जाये इसलिये वे जब भी बाहर जाते थे, अपने घर को चारों ओर से बंद करके रखते थे। इससे उनकी पत्नी सुजाता एक प्रकार नजरबंद का जीवन जी रही थी और मन ही मन बहुत उद्‌वेलित हो रही थी। उसके आस पडोस के लोगों को इस बात का पता होने पर उनका परिवार हंसी का पात्र बन रहा था। सुजाता ने अपने पतिदेव को बहुत समझाने का प्रयास कि परंतु वह असफल रही, अंत में उसने परिवार परामर्श केंद्र जाने का निर्णय लिया। एक दिन प्रोफेसर साहब से चूक हो गई और वे बाथरूम का दरवाजा बंद करना भूल जिसका लाभ उठाकर उनके जाने के बाद सुजाता वहाँ

से निकल गई और सीधे परामर्श केंद्र पहुँची और अपनी व्यथा से अवगत कराया। उसकी अजीबोगरीब बातें सुनकर सबको बहुत आश्चर्य हुआ और तुरंत एक हबलदार को प्रोफेसर साहब को बुलाने के लिये भेजा गया। प्रोफेसर साहब और झेंप के कारण उनसे कुछ कहते नहीं बन रहा था। उन्होंने अपनी गलती स्वीकर कर ली और सबके सामने लिखित रूप में सुजाता को आश्वस्त किया कि वह उसकी स्वतंत्रता का हनन नहीं करेंगें एवं उन पर पूर्ण विश्वास रखेंगें। इसके बाद वे दोनों परामर्शदाताओं का आभार व्यक्त करते हुए मुस्कुराते हुए वापिस घर चले गये।

अगला प्रसंग रामनरेश और राजश्री के बीच का है जिसमें परिवार के ही एक सदस्य द्वारा गलतफहमी में अपने ही परिवार को दंडित करने का प्रयास किया जा रहा था। जिसकी समाप्ति के लिये परिवार परामर्श केंद्र ने अथक परिश्रम करके मामले को सुलझा लिया। इन दोनों का प्रेम विवाह हुआ था। शादी के उपरांत एक दिन लड़की का भाई राजीव उससे मिलने सुबह सुबह उसके घर आया उसे देखकर वे दोनों बहुत प्रसन्न हुये और उसकी आवभगत की। उसके लिये रामनरेश ने राजश्री से चाय नाश्ता लगाने के लिये कहा। उस दिन दुर्भाग्य से उसके घर में दूध खत्म हो गया था और बाजार भी बंद था। यह देखकर रामनरेश ने बिना दूध की चाय बनाने के लिये कह दिया। उसकी पत्नी ने उसको कहा कि मेरा भाई बिना दूध की चाय नहीं पीता है। रामनरेश के जोर देने पर उसने पुनः अपनी बात को दोहरा दिया। इससे नाराज होकर उसने एक थप्पड अपनी पत्नी पर जड़ दिया जिससे उसकी नाक से खून बहने लगा। यह देखकर उसका भाई अपने जीजा से बहुत कुपित हो गया और बहन को साथ में ले जाकर पुलिस थाने में घरेलू प्रताडना, मारपीट एव ंदहेज प्रताडना की शिकायत दर्ज करा दी। यह विवाद परिवार परामर्श केंद्र को सुलझाने हेतु भेजा गया। केंद्र के परामर्शदाताओं द्वारा जब इस मामले की गहराई से छानबीन की गई तो पता हुआ कि यह रामनरेश की कभी कभी पत्नी पर हाथ उठाने की

पुरानी आदत हैं। उसके बाद वह माफी भी माँग लेता था और मामला वही शांत हो जाता था परंतु इस बार उसके भाई के हस्तक्षेप के कारण यह मामला पुलिस एवं परामर्श केंद्र तक पहुँच गया। रामनरेश ने परामर्शदाताओं के समक्ष अपनी गलती स्वीकार करते हुये बताया कि धोखे से उसका हाथ राजश्री की नाक पर पड गया जिससे खून आ गया। उसकी पत्नी ने भी यह बात स्वीकार की और उसके पति द्वारा माफी माँगने पर उसे माफ करने की बात कहकर अन्य आरोपों को भी निराधार बताया। उसने पति को माफ कर दिया और यह छोटा सा पारिवारिक विवाद कठोर कानूनी कार्यवाही से बच गया।

अब एक और रोचक वृतांत से आपको अवगत करा रहा हूँ। कुछ दिन पूर्व परामर्श केंद्र में एक संभ्रांत परिवार की युवती आई, उस वक्त वह काफी परेशान दिख रही थी और आते ही बदहवास लड़खडाती आवाज में अपने साथ हो रही बदसलूकी और अनुचित व्यवहार की शिकायत पति के खिलाफ कर रही थी। उसके साथ उसकी लगभग दस वर्षीय पुत्री भी थी। पुत्री के चेहरे पर भी घबराहट के चिन्ह देखे जा सकते थे। उस युवती के थोडा शांत हो जाने पर उससे पति से विवाद का पूरा विवरण विस्तार से सुना। युवती गुस्से में अपने पति पर गंभीर आरोप लगाते हुए कह रही थी कि मेरे पति बेवजह मारपीट करते हैं, अभी तक तो सब ठीक था परंतु जब से स्वयं के घर का निर्माण प्रारंभ किया है, उसके बाद से झगडे होने लगे है। युवती आगे कहती है कि घर का निर्माण कार्य मैं स्वयं देख रही हूँ। निर्माण सामग्री से लेकर इंजीनियर के पास तक जाने की सारी गतिविधियाँ, फिर घर का काम करना, इतना करने के पश्चात भी मेरे पति मुझसे मारपीट करने लगते हैं।

मैं एक संभ्रांत परिवार से हूँ। मेरे माता पिता दोनों शासकीय महाविद्यालय में साइंस के प्रोफेसर हैं। मैं स्वयं भी एम.एस.सी. प्रथम श्रेणी से पास हूँ। पति भी एम.एस.सी है एवं सास ससुर भी उच्च शिक्षा प्राप्त, शासकीय महाविद्यालय में प्रोफेसर है। पैसों की तंगी नहीं है। पति शहर से 40-45 किलोमीटर दूर शासकीय

महाविद्यालय में शिक्षक हैं। वे सुबह घर से निकलते है तो शाम 7 बजे तक घर आते हैं। मैं घर पर बच्ची को देखते हुए सारे कार्य निपटाती हूँ फिर भी मेरे पति द्वारा उचित व्यवहार नहीं किया जा रहा है।

इतना सुनने के पश्चात परामर्शदाताओं ने युवती के पति को बुलाने के लिये पुलिस के वाहन को उसके कार्यस्थल पर भेजा। पति महोदय के आते ही वह पत्नी पर नाराज होता हुआ बोला कि आखिर तुमने अपना घर तोडने की सोच ही ली है और मुझे मेरे कार्यस्थल से जिस तरह पुलिस वाहन से बुलवाया गया है उससे मेरे आत्म सम्मान को काफी ठेस पहुँची है। मेरे साथी शिक्षक एवं अन्य स्टाफ चर्चायें कर रहे हैं कि मैंने ऐसा कौन सा गुनाह कर दिया जिस पर मुझे पुलिस वाहन भेजकर तत्काल बुलवाना पडा। परामर्शसमिति के पूछने पर पति महोदय ने बताया कि मेरी पत्नी ने मुझ पर क्या क्या आरोप लगाये है ? यह सुनकर परामर्शसमिति ने उसकी पत्नी द्वारा बतायी गयी बातों को संक्षिप्त में बता दिया गया।

पति ने बताय कि मैं सुबह उठकर बच्ची को तैयार करता हूँ, स्कूल भेजने के लिये। उसके पश्चात चाय नाश्ता बनाकर बच्ची को देता हूँ फिर स्वयं नहा धोकर स्वयं का दोपहर का भोजन बनाता हूँ और बस द्वारा सुबह अपने कार्यस्थल के लिय निकल जाता हूँ। पत्नी तब तक सोती रहती हैं क्या मैंने इसलिये शादी की थी ? शाम को घर आने के बाद बच्ची का होमवर्क करता हूँ उसके बाद रात्रि का भोजन बनाता हूँ और हम सब भोजन करके सो जाते है। यह मेरी दिन भर की कार्यप्रणाली है। मैं कब झगडा करता हूँ, कब मारपीट करता हूँ ? यह सब कपोल कल्पित बातें हैं। यह क्यों कर रही हैं यह मुझे नहीं पता ?

नये बन रहे घर के बारे में बात करने पर पति महोदय ने कहा कि बस यही है उसकी वजह। मैं अब पत्नी के साथ नहीं रह सकता हूँ। दोनों के माता पिता आ

चुके थे वे भी कुछ समझ नहीं पा रहे थे कि आखिर यह सब क्या हो रहा है। आज तक दोनों पति पत्नी ने कुछ भी ऐसी पारिवारिक विवाद की चर्चा हम लोगों से क्यों नहीं की और बात परामर्श केंद्र तक आ पहुँची। इतना होते होते शाम ढलने लगी थी और हमारे समझौते का प्रयास असफल होते दिख रहा था। तभी मैंने एक सहायक को कुछ रूपये देकर चाय नाश्ता लाने के लिये कहा एवं उस बच्ची के लिये भी चॉकलेट लाने के लिये कहा। इसी बीच उस बच्ची से मैंने अकेले चर्चा की और उस बच्ची की बातें सुनने में तल्लीन हो गया क्योंकि वह जो बता रही थी उसे किसी ने भी अभी तक नहीं बताया था। पूरा वाक्या सुनकर मुझे फिर आशा की किरण दिखी कि अब तो समझौता होना ही है।

बच्ची ने मुझे बताया कि अंकल मैं अब सब समझती हूँ, मेरे पापा तो सही है मेरी नजर में। कुछ देर बाद बच्ची ने जो बताया उसे सुनकर मैं अचंभित रह गया। उसने बताया कि नये घर बनने से पूर्व सब ठीक था, जब से घर बन रहा है तभी से विवाद होने लगे है पापा का कहना था कि जब मेरा शहर में ट्रांसफर हो जायेगा तब घर बनवाने का काम शुरू करेंगे परंतु मम्मी के दबाव और सारे कार्य को संभाल लेने की जिद के कारण उन्हें कार्य शुरू करवाना पडा। मम्मी से मिलने एक बाबा आते है वे जब भी आते नये घर में बंद कमरे में एक दो घंटे रूकते और मम्मी भी उनके साथ रहती। इसी प्रकार कुछ समय पश्चात घर के युवा इंजीनियर जो निर्माण कार्य की देखरेख करते हैं उनके साथ भी मम्मी बंद कमरे में एक दो घंटे रहती हैं। यह बातें शायद पापा को मालूम पडने पर मम्मी को डांटा फटकारा तो मम्मी यहाँ चली आई।

मुझे सब समझ में आ गया था। मैंने उस युवती को अकेले में बुलाया और उपरोक्त बातें जो उसकी बच्ची ने बताई थी सुनकर सन्न रह गई और गिडगिडाकर कहने लगी कि मेरे घर को बचा लीजिए एवं यह घटना मेरे पति एवं परिवार को कृपया ना बताएँ। इसके पश्चात पति महोदय को काफी समझाया एवं पत्नी ने माफी माँगी वादा किया कि आगे से किसी प्रकार की

शिकायत का मौका नहीं दूँगी। अंत में सौहाद्रपूर्ण वातावरण में दोनों ने परामर्शकेंद्र के प्रति आभार व्यक्त करते हुए अपने घर के लिये निकल गये।

परिवार परामर्श केंद्र में एक नया मामला आया। एक गाँव की महिला कम पढी लिखी महिला आई और कहा कि मेरे पति ने दूसरी शादी कर ली है, जबकि मैं ब्याहता पत्नी हूँ। उस महिला के साथ दो बच्चे लगभग सात एवं नौ वर्ष के थे। उसने बताया कि न्यायालय में मेरा केस चला जिसमें मैं विजयी हुई हूँ। मेरे वकील ने बताया कि जब भी आपकी इच्छा हो तो पति के पास चली जाना और यह केस निर्णय की सत्यप्रति है। परामर्श समिति द्वारा निर्णय की कॉपी माँगने पर कहने लगी कि अभी तो नहीं लाई हूँ जब पति को बुलायेंगे तब ले आऊँगी। हमने आगामी तारीख दे दी और आने के लिये कहा। महिला के पति को भी सूचना देकर उसके गाँव से बुलवाया गया। निश्चित तारीख और समय पर पति महोदय अपनी दूसरी पत्नी के साथ आ गये और हमसे प्रकरण की जानकारी ली। पति ने अपने बयान में कहा कि वह एक शासकीय माध्यमिक शाला में शिक्षक है और साथ ही साथ गाँव में पुश्तैनी जमीन भी है। भला एक पत्नी के रहते हुये मैं दूसरा विवाह कैसे कर सकता हूँ, यदि मैं ऐसा करूँगा तो मुझे सजा हो जायेगी और नौकरी भी चली जायेगी।

दोनों पत्नियों के चक्रव्यूह में बैठा पति परेशान दिखने लगा। पहली पत्नी से न्यायालय के केस की कॉपी प्राप्त कर पढा गया, तब माजरा समझ में आया। पति महोदय ने कहा कि मैं न्यायालय के निर्णय के पश्चात दो तीन बार पहली पत्नी को लेने गया और बच्चों से मिलवाने का आग्रह किया और पुनः साथ रहने के लिय कहा लेकिन पत्नी एवं उसके भाइयों ने मुझे मना कर दिया और धक्के देकर मुझे भगा दिया। इसके बाद न्यायालय के निर्णय के 1 वर्ष 6 माह बाद पश्चात मैंने दूसरी पत्नी को पहली पत्नी के बारे में पूरी बातें बताकर शादी कर ली। दूसरी पत्नी ही मेरी असली पत्नी है, क्योंकि पहली पत्नी से तलाक हो चुका है। अब इसमें मेरी क्या गलती है ?

पहली पत्नी के साथ उसके मायके पक्ष से भी काफी लोग आये थे, वे सभी काफी नाराज होने लगे। तब सभी को बताया गया कि न्यायालय का जो निर्णय हुआ है उसमें लिखा है कि 6 माह तक पत्नी जाना चाहें तो पति के पास जा सकती है, नहीं तो दो बच्चों के साथ हमेशा के लिये तलाक हो चुका है। पहली पत्नी ने बच्चों की माँग की थी जिसे न्यायालय ने मान लिया था, इसलिये बच्चे पहली पत्नी के पास है। इतना सुनने पर पहली कहने लगी की हमारे वकील ने तो कहा था कि तुम कभी भी जा सकती हो। इसी बीच एक वकील साहब अपने किसी काम से परामर्श केंद्र आये हुये थे तो उनसे निर्णय को पुनः पढकर सुनाने का निवेदन किया गया। उन्होंने ने भी निर्णय पढकर यह कहा कि समय सीमा समाप्त हो चुकी है और तलाक हो चुका है। यह सुनकर परेशान बच्चों एवं पत्नी ने रोना पीटना शुरू कर दिया।

इस बीच हमने पति महोदय से कोई रास्ता निकालने का निवेदन किया। तब पति ने दूसरी पत्नी के चर्चा कर बताने के लिए समय माँगा। दोनों ने सलाह करके कहा कि आप ही बतायें हम लोग क्या कर सकते हैं ? परामर्श समिति ने बताया कि अब वह अकेली रहती है एवं मजदूरी करती है एवं उसके बच्चे भूख से तडपते रहते है। बच्चे तो तुम्हारे ही है और परामर्श समिति ने एक सुझाव दिया कि पति महोदय बच्चों को रख लें एवं उनका उचित लालन पालन करें तथा पहली पत्नी को बच्चों से मिलने की छूट रहेगी। यह सुनकर पति महोदय एवं उनकी दूसरी पत्नी ने इस बात पर खुशी खुशी सहमति दे दी। इस बात पर पहली पत्नी ने भी सहमति दे दी।

इसमें गौर करने वाली बात यह है कि पहली पत्नी ने न्यायालय कि निर्णय को यह समझा कि वह कभी भी अपने पति के पास जा सकती है परंतु समय सीमा 6 माह है इसे वह नहीं समझ पाई जो कि संबंध विच्छेद का कारण बन गई।

वक्त की गति और भाग्य का खेल किसी भी व्यक्ति को जीवन में कहाँ से कहाँ पहुँचा दे यह किसी को नहीं मालूम हो पाता है। अपनी नियति के आगे मानव विवश हो जाता है। कुछ ऐसा ही पल्लवी के साथ हो गया था, जिसकी कल्पना किसी ने भी नहीं की थी। अभी उसके विवाह को एक माह भी पूरे नहीं हुये थे कि विचारों में अंतर्विरोधों के कारण उन दोनों संबंध विच्छेद का आवेदन दे दिया था और पल्लवी अमेरिका छोडकर वापिस अपने माता पिता के पास अपने गृहनगर आ गयी थी। उसने मानसी को संपर्क करके अपनी इन बातों की जानकारी दी जिसे सुनकर वह भी हतप्रभ रह गई और उसने राकेश को ये बातें बताई। राकेश मन ही मन बहुत दुखी हुआ और मानसी को पल्लवी के पास जाकर उसे सांत्वना देने की सलाह दी। पल्लवी कुछ दिनों के लिए मानसी को स्वयं अपने पास आने का आग्रह करती है। जिसे स्वीकार कर मानसी पल्लवी के पास कुछ दिनों के लिए चली जाती है। पल्लवी ने अपने संबंध विच्छेद के वास्तविक कारण को नहीं बताया और ना ही मानसी ने उसे जानने की इच्छा व्यक्त की। उसने पल्ल्वी से पूछा कि अब तुम छः माह के उपरांत जब तुम्हें वैधानिक रूप से संबंध विच्छेद की स्वीकृति प्राप्त हो जायेगी उसके बाद क्या करोगी ? उसने कहा कि मैं एक बच्चों का स्कूल खोलकर उन्हें निशुल्क शिक्षा प्रदान करने में अपना समय बिताऊँगी। मानसी के यह पूछने पर कि तुम्हें पुनर्विवाह कर लेना चाहिए तो वह बोली कि जब एक के साथ जीवन निर्वाह नहीं हो सका तो आगे किसी दूसरे के साथ निभेगी या नहीं इस बात का क्या भरोसा है ? मानसी ने उसको समझाते हुए कहा कि अभी तुम्हारे पास चार माह का समय तो वैसे ही है। आनंद आज भी तुम्हें प्रेम करता है और यदि वह विवाह के लिए तैयार हो तो क्या तुम उसके साथ पुनः विवाह करना चाहोगी ? पल्लवी ने कहा कि अभी मैं कुछ नहीं कह सकती ? जब ऐसी परिस्थिति आयेगी तब सोचूँगी। मानसी घर वापिस आने के बाद आनंद से मिलकर सभी बातों से अवगत कराती है और कहती है कि आनंद यदि तुम वास्तविक प्रेम

करते हो और इन परिस्थितियों में समझौता कर सकते हो तो तुम पल्लवी के साथ पुनः विवाह के बारे में सोच सकते हो ? आनंद सोचकर कहता है कि हाँ मैं तैयार हूँ। मैं उसे आज भी उतना ही प्रेम करता हूँ जितना पहले करता था। यह सुनकर मानसी बहुत खुश होती है और कहती है कि यही सच्चा प्रेम है जो कि जीवन में एक दिन सफलता का सेतु बनता है। मैं पल्लवी को समझाती हूँ और ईश्वर की इच्छा हुई तो तुम दोनों का जीवन व्यवस्थित होकर एक दूसरे के प्रति समर्पित हो सकेगा। अब मानसी पल्लवी को समझाती है और अंततः वह भी शादी के लिए तैयार हो जाती है।

आरती हॉस्टल में अकेली रहती थी। मानसी और पल्लवी दोनों शादी हो जाने के कारण जा चुकी थी। गौरव को उसने शादी करने से मना कर दिया था इसलिये उसने भी मिलना बंद कर दिया था। वह चुपचाप अपने बीते हुये दिनों को याद करके कुंठित होती रहती थी। मानसी और पल्लवी जब आपस में मिल गये तो उन्हें भी आरती की याद आने लगी और वे दोनों उसके हॉस्टल गये जहाँ उन्हें पता हुआ कि वह हॉस्टल छोडकर कहीं और रहने लगी है। उन्होंने उसके माता पिता को फोन करके आरती के बारे में जानकारी ली और उसके नये हॉस्टल का पता लेकर उससे मिलने पहुँच गई। आरती, पल्ल्वी और मानसी दोनों को देखकर भौचक्की रह गई। उसे जब पल्ल्वी के विषय में पूरी जानकारी प्राप्त हुई तो वह आश्चर्यचकित होकर मन ही मन बहुत दुखी हो गई और उससे पूछने लगी कि अब आगे उसकी क्या योजना है ? पल्लवी ने कहा कि तुम मेरी बात छोडो और अपने बारे में बताओ। कहीं रिश्ता तय हुआ या नहीं ? आरती ने कहा कि यदि रिश्ता तय हो जाता तो तुम लोगों को अवश्य जानकारी देती। अब दोनों उसको गौरव के विषय में बताती है कि वह अब बिल्कुल बदल चुका है और एक परामर्श केंद्र के माध्यम से जनसेवा में लगा हुआ है। आरती कहती है हाँ मुझे इस बारे में मालूम है। मैं भी गौरव के विषय में सोचती हूँ परंतु मेरे द्वारा कहे गये शब्दों के कारण मेरी उससे मिलने की हिम्मत नहीं होती। मेरे मन में

उसके प्रति आज भी प्रेम हैं मैं केवल उसकी पुरानी जीवनशैली से ही नफरत करती थी। यह सुनकर मानसी कहती है कि अगर गौरव तैयार हो तो क्या तुम उसके साथ विवाह करना पसंद करोगी ? यह सुनकर आरती हाँ कह देती है। आरती के मन की खुशी उसके चेहरे पर झलक रही थी। मानसी यह सारी बातें राकेश को बताती है और उसे गौरव से बात करने के लिये कहती है। राकेश भी गौरव को सारी बातें बताकर कहता है कि जो बीत गया से बीत गया अब आगे की सुध लो। तुम आरती को उसके कहे हुए शब्दों के लिये माफ करके, शादी के लिए तैयार हो तो हम उससे आगे बात बढायें। गौरव कहता है माफी उसको नहीं मुझे माँगनी चाहिये क्योंकि गलती मेरी थी और उसके कहे हुए शब्दों के कारण ही आज मेरे जीवन में परिवर्तन आया है। मैं भी अपने संकोच के कारण उससे नहीं मिल पाया। अगर तुम मेरी इन भावनाओं को उस तक पहुँचा सको तो मैं तुम्हारा आभारी रहूँगा।

इसके कुछ माह बाद ही पल्लवी का आनंद और आरती का गौरव के साथ विवाह हो जाता है। तीनों अपने जीवनसाथीयों के साथ सुखमय जीवन बिताने लगते है एवं परामर्श केंद्र के माध्यम से अनेक बिगडे हुये रिश्तों को बनाने की सेवा में अपना समय व्यतीत करते हैं।